भाषायी दक्षता

B.A. PART-I (SEMESTER-1)

Course Code : 24HND401SE01

Course Type : Skill Enhancement Course [SEC]

इकाई-1 भाषायी दक्षता का विकास

भाषायी दक्षता से तात्पर्य

भाषायी दक्षता का महत्त्व

श्रवण और वाचन

पठन और लेखन

इकाई-2 भाषायी दक्षता की निर्माण प्रक्रिया

भाषायी संरचना की समझ और विकास

भाषा-व्यवहार (भाषिक प्रयोग और शैली)

भाषायी क्षमता को प्रभावित करने वाले तत्त्व (आयु, लिंग, शिक्षा, वर्ग)

इकाई-3 भाषायी दक्षता का प्रायोगिक पक्ष

भाषायी दक्षता की रणनीति : आंकलन, लक्ष्य निर्धारण, नियोजन के स्तर पर

शब्द-सामर्थ : सामान्य एवं तकनीकी शब्द

सुननता और बोलना : प्रभावी श्रवण के आयाम, शुद्ध उच्चारण, भाषण, एकालाप, वार्तालाप

पढ़ना और लिखना : स्वाध्याय और उद्देश्य-केंद्रित पठन, सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन

इकाई-4 भाषायी दक्षता का व्यावहारिक पक्ष

किसी एक विषय पर–भाषण, वार्तालाप या टिप्पणी, समूह चर्चा

किसी एक विषय का भाव–विस्तार या पल्लनन

द्रुतवाचन–किसी साहित्यिक कृति पर आधारित समीक्षा-पुस्तक-समीक्षा, फिल्म-समीक्षा

1 भाषायी दक्षता का विकास

निबंधात्मक प्रश्न

भाषायी दक्षता से तात्पर्य

1 भाषायी दक्षता से क्या तात्पर्य है? भाषायी दक्षता की अवधारणा का स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–भाषा-दक्षता को कभी-कभी एक आदर्श धारणा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जो किसी व्यक्ति की भाषा में दक्षता है। भाषायी दक्षता शब्द व्याकरण के अचेतन ज्ञान को संदर्भित करता है जो एक वक्ता को किसी भाषा का उपयोग करने और समझने की अनुमति देता है। इसे व्याकरणिक दक्षता के रूप में भी जाना जाता है। किसी भी भाषा में दक्षता प्राप्त करना एक सहज प्रक्रिया के अंतर्गत होता है और यह अपने आप में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। भाषा में दक्षता प्राप्त होने पर ही मनुष्य अपने मनोभावों को दूसरों के सामने प्रकट कर सकता है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं, अपने विचारों और अपने मनोभावों को संप्रेषित करता है। बिना भाषा के वह यह सब कार्य नहीं कर सकता है, अत: मानव जीवन में भाषा में दक्षता प्राप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भाषायी दक्षता का अर्थ एवं परिभाषा–भाषायी दक्षता से तात्पर्य संचार उद्देश्यों के लिए किसी भाषा को प्रभावी ढंग से समझने और उसका उपयोग करने की क्षमता से है। इसमें शब्दावली और व्याकरण जैसे भाषायी तत्वों के साथ-साथ भाषा के सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं में महारत हासिल करना शामिल है। पारस्परिक समझ, धारणाओं और प्रतिबिंबों के विकास और वास्तविक और काल्पनिक दुनिया को आत्मसात करने के लिए भाषा दक्षता आवश्यक है। यह उन स्थितियों को बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण है जो सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने से संबंधित दक्षताओं के विकास का समर्थन करती हैं। कुल मिलाकर, भाषा दक्षता एक बहुआयामी अवधारणा है जो किसी भाषा में प्रभावी संचार के लिए आवश्यक विभिन्न कौशल और ज्ञान को समाहित करती है।

- **डॉ. सुरेन्द्र कुमार के अनुसार**–"किसी भी भाषा को बोलने, समझने, लिखने, पढ़ने में प्रवीणता प्राप्त करना अथवा किसी भी भाषा को बोलने, समझने, लिखने, पढ़ने की शक्ति का विकास करना ही भाषायी दक्षता कहलाता है।"
- **डॉ. एस.के. बीरभाण के अनुसार**–"मानव अपने विचारों का आदान-प्रदान सुनकर, बोलकर, पढ़कर और लिखकर करता है, भाषा से संबंधित इन चारों प्रक्रियाओं को प्रयोग करने की क्षमता ही भाषा दक्षता कहलाती है। भाषा दक्षता के चार मुख्य कौशल क्रमिक रूप से सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना हैं।"

इस प्रकार भाषायी दक्षता से तात्पर्य किसी व्यक्ति की लक्ष्य भाषा का ज्ञान रखने तथा उसके प्रयोग को समझने की क्षमता से है।

भाषायी दक्षता की अवधारणा–आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक माने जाने वाले नोम चॉम्स्की ने भाषाविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका मानना है कि भाषा का एक मजबूत जैविक आधार होता है, जिसमें बच्चे एक निश्चित समय और एक निश्चित तरीके से भाषा सीखने के लिए जैविक रूप से तैयार होते हैं। भाषाविज्ञान का अध्ययन भाषा की संरचना का औपचारिक वर्णन है, जिसमें वाक् ध्वनियों, अर्थों और व्याकरण का वर्णन शामिल है। चॉमस्की का मानना था कि बच्चे में जन्म से ही परिवर्तनकारी व्याकरण में निपुणता प्राप्त करने की क्षमता विकसित हो जाती है और इस जन्मजात भाषायी क्षमता को वे भाषायी दक्षता कहते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि भाषायी दक्षता शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम नोम चॉमस्की ने किया था।

भाषायी दक्षता के विकास के मनोवैज्ञानिक घटक–भाषायी दक्षता के विकास के मनोवैज्ञानिक घटक निम्नलिखित हैं-

1. **जिज्ञासा**–जब बालक किसी वस्तु या दृश्य को देखता है या ध्वनि को सुनता है तो उस वस्तु, दृश्य या ध्वनि के बारे में जानने की कोशिश करता है यही जिज्ञासा कहलाती है।
2. **अनुकरण**–अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए बालक अनेक क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। वह परिवार के सदस्यों से अनेक ध्वनियाँ सुनता है। ध्वनियों को सुनकर वह बोलने की चेष्टा करता है। धीरे-धीरे प्रयत्न से वह भी कुछ शब्द बोलने लग जाता है। यहाँ से ही उसकी भाषा सीखने की प्रवृत्ति का विकास प्रारम्भ होने लगता है। अर्थात् बोलना सीखने में अनुकरण का सर्वाधिक महत्व है।
3. **अभ्यास**–बार-बार के अनुकरण को ही अभ्यास कहा गया है। अभ्यास के द्वारा बालक के मस्तिष्क में बने बिंब पुष्ट हो जाते हैं और वह भाषा को सीखने की ओर अग्रसर होता है।

बच्चे की भाषा दक्षता का विकास–बच्चे की भाषा दक्षता का विकास निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा किया जा सकता है-

- भाषा अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करके तथा कार्य आधारित गतिविधियों में संलग्न करके भाषा दक्षता का विकास किया जा सकता है।
- इसके अंतर्गत बच्चे को नाटक मंचन, सस्वर पठन तथा अन्य कार्य आधारित गतिविधियों में संलग्न करना चाहिए, जिससे वो भाषा के सभी कौशलों को विकसित कर सकें।
- शिक्षण को मनोरंजक बनाने के लिए अधिगम सामग्रियों का प्रयोग करना चाहिए। बच्चों के कक्षा शिक्षण को उनके परिवेश तथा व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर देखने में सहयोग करना चाहिए।
- शब्द रचना का ज्ञान कराकर भी भाषा दक्षता (कौशल) का विकास किया जा सकता है। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में भाषायी विकास को सुदृढ़ करने के लिए उन्हें भाषा प्रयोग के तरह तरह के अवसर प्रदान करना उचित प्रावधान है।

अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्य आधारित गतिविधियों में संलग्न करके किसी एक बच्चे की भाषा दक्षता को विकसित किया जा सकता है।

भाषायी दक्षता के तत्व–भाषायी दक्षता के कारक निम्नलिखित हैं–

1. बालक भाषा अर्जित करने की सहजशक्ति लेकर जन्म लेता है।
2. भाषा सीखने के लिए उसके मस्तिष्क में सारी व्यवस्थाएँ प्राकृतिक रूप से होती हैं।
3. जब बालक किसी वस्तु या दृश्य को देखता है या ध्वनि को सुनता है तो मस्तिष्क की सहायता से प्रक्रिया करके नियमों की खोज करता है।
4. आयु बढ़ने के साथ-साथ बालक विभिन्न प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। जैसे जैसे वह नवीन वस्तुओं से परिचित होता जाता है वैसे वैसे वह उनके साथ अनेक क्रियाएँ करता है।
5. जब वे क्रियाएँ बार-बार होती हैं तो उन सभी का एक बिंब उसके मस्तिष्क में बनता चला जाता है। भाषायी दक्षता के विकास में इन बिंबो का सर्वाधिक महत्व है।

❐

2 **भाषायी दक्षता से आप क्या समझते हैं? भाषायी दक्षता के प्रमुख कौशलों पर विचार कीजिए।**

अथवा

भाषायी दक्षता में कौन-कौनसे चरण/प्रकार सहायक बनते हैं? उनकी विवेचना कीजिए।

उत्तर—भाषा सम्प्रेषण में भाषायी कौशलों का विशेष महत्व है। भाषा एक कला है, कौशल है। भाषा शिक्षण का अर्थ है—बच्चों को भाषायी कौशलों-सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में दक्ष करना। बालक अनुकरण से मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सीख लेता है। विद्यालय में भाषा के सर्वमान्य रूप से परिचित कराया जाता है। भाषा के विकास क्रम में मानव समाज ने सर्वप्रथम अपने मनोवेगों, भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अर्थपूर्ण ध्वनियों का विकास किया। इसके पश्चात् इन अर्थपूर्ण ध्वनियों को क्रम विशेष में प्रस्तुत करके वाक्य का रूप दिया। भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए मूल ध्वनियों का विश्लेषण करने के पश्चात् उनके लिए एक चिह्न विशेष निश्चित किया गया। इन चिह्नों के समूह को 'भाषा लिपि' कहते है।

भाषायी दक्षता का तात्पर्य—भाषायी दक्षता (कौशल) से तात्पर्य है—भाषा के ठीक तरह से काम करने की योग्यता या सामर्थ्य हासिल करना। अर्थात् व्यक्ति भाषा के चारों कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में पूर्ण रूप से दक्षता हासिल कर सके। अध्ययनकर्ता के भाषा सीखने पर यदि उसका भाषा के उपर्युक्त चारों कौशलों पर पूर्ण अधिकार ना हो तब भाषा कौशल व सम्प्रेषण अधूरा रह जाता है। इसलिए अध्यापक को चाहिए कि वह अध्ययनकर्ता को भाषा शिक्षण के दौरान भाषा के चारों कौशलों का सामान रूप से विकास करवाए। व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर होती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होती है। जिन भावो एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते है उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते है यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।

हमारा देश बहुभाषी देश है। अनेक क्षेत्रीय बोलियाँ और भाषाएँ यहाँ बोली जाती हैं। भाषा न केवल शिक्षा प्राप्ति का साधन है बल्कि विचार-विनिमय, प्रशासन, व्यापार, संचार, पर्यटन, रोजगार आदि के लिए भी भाषा शिक्षण किया जाता है।

भाषायी कौशलों का वर्गीकरण—किसी भाषा को सीखने के चार चरण होते हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। इन भाषायी कौशलों को दो भागों में बाँटा गया है—(क) प्रधान कौशल और (ख) गौण कौशल।

(क) प्रधान कौशल—भाषा का सर्वप्रथम कार्य सम्प्रेषण करना ही है। यह सम्प्रेषण भाषा के बिना अधूरा है। संप्रेषण के लिए हमें भाषा के उच्चरित रूप की ही आवश्यकता होती है। भाषा का मौखिक रूप भाषा का वह रूप है जिसे एक निरक्षर व्यक्ति भी प्रयोग करता है। इसलिए इससे संबंधित कौशल ही प्रधान कौशल कहे जाते हैं। इसमें निम्नलिखित दो कौशल आते हैं—1. सुनना (श्रवण) 2. बोलना (अभिव्यक्ति)।

(ख) गौण कौशल —बालक अपनी प्रारंभिक भाषा परिवार और समाज से सीखता है। परिवार और समाज ही भाषा सीखने का उसका प्रथम स्कूल होता है। उसके बाद वह विद्यालय जाकर लिखना-पढ़ना सीखता है। इस प्रकार के भाषा कौशलों को गौण कौशल के अंतर्गत परिभाषित किया गया है। इसके दो रूप हैं—1. पढ़ना (पठन) और 2. लिखना (लेखन)।

1. श्रवण कौशल –'श्रवण' शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका संबंध 'सुनने' और 'अधिगम' करना आदि से है। 'श्रवण' अंग्रेजी के शब्द 'Listening' शब्द का पर्याय है। 'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका अर्थ निकालने, सुनी हुई बातों पर चिंतन-मनन करने और अर्थ की प्रतिक्रिया देने से है। श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना अत्यंत आवश्यक है। बालक के जन्म लेने के उपरांत उसकी प्रारंभिक शिक्षा उसकी श्रवण शक्ति पर निर्भर करती है। यदि बालक की

श्रवण इन्द्रियों में दोष है, तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अतः उसका भाषा ज्ञान शून्य के बराबर ही रहेगा। बालक जन्म लेने के बाद सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है। महाभारत में तो यह भी उल्लेख है कि अभिमन्यु अपनी माँ के पेट में ही अपने पिता अर्जुन से चक्रव्यूह का वृत्तान्त सुन रहा था।

श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता है, अपितु जो कुछ हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं वह भी शामिल है। इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता, यह एक कड़ी है तथा सोद्देश्य है।

2. वाचन कौशल–बोलने की सार्थकता शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करती है। सर्वमान्य उच्चारण ही शुद्ध उच्चारण कहलाता है। उच्चारण में भाषा की ध्वनियों, सुर, बल, निवृत्ति, लोप, आगम, लय, अनुतान का समावेश रहता है। बच्चा जन्म लेने के साथ ही सुनना सीखता है और सुनकर बोलना सीखता है। इस प्रकार बोलना या अभिव्यक्त करना दूसरा महत्वपूर्ण भाषा-कौशल है। जब व्यक्ति अपने विचारों एवं भावों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का प्रयास करता है, तो उसे अभिव्यक्ति कौशल का सहारा लेना पड़ता है। बातचीत के कौशल के आधार पर ही उनकी अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है। जब एक छात्र सस्वर एवं धाराप्रवाह रूप में बोलते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करता है, तो यह माना जाता है कि उसमें अभिव्यक्ति कौशल की योग्यता है। वाचन-दक्षता को प्रभावशाली बनाने हेतु उसमें निम्न विशेषताएँ होनी जरूरी हैं-

(1) भाषा में शुद्धता, स्वाभाविकता, स्पष्टता, व्यावहारिकता, सशक्तता तथा भावानुरूपता होनी चाहिए।

(2) भाषा विषय एवं अवसर के अनुकूल होनी चाहिए।

(3) अभिव्यक्ति मधुर, मर्मस्पर्शी, शिष्टाचारयुक्त एवं शुद्ध उच्चारण वाली होनी चाहिए।

किसी भी भाषा का ग्रहण पक्ष (अर्थात श्रवण तथा वाचन) जितना सरल होता है, अभिव्यक्ति पक्ष (अर्थात पठन तथा लेखन) उतना ही जटिल होता है। इसका कारण यह है कि अन्य भाषा में अभिव्यक्ति के विविध पक्ष मातृभाषा के अभिव्यक्ति के विविध पक्षों से पर्याप्त मात्रा में प्रभावित होते हैं। इसलिए छात्र अन्य भाषा की अभिव्यक्ति में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

3. पठन कौशल–सामान्यतः लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना या पठन कहा जाता है। जैसे–पम्फलेट पढ़ना, समाचार-पत्र पढ़ना तथा पुस्तकें पढ़ना। लेकिन भाषा शिक्षण के संदर्भ मे पढ़ने का अर्थ होता है किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़कर समझना। अर्थ बोध तथा भाव की प्रतीति पढ़ने के जरूरी तत्व होते हैं। इस तरह जब हम किसी के द्वारा लिखे किसी लेख, कहानी, निबंध, नाटक या पद्य को पढ़कर उसका अर्थ तथा भाव ग्रहण करते है तो हमारी इस क्रिया को पढ़ना अथवा पठन कहते है; यह बात दूसरी है कि हम उसका अर्थ तथा भाव किस सीमा तक समझते एवं ग्रहण करते है। पठन दो तरह से किया जाता है–मौखिक रूप से तथा मौन रूप से।

4. लेखन कौशल–मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया जाता है और इन्हें लिपिबद्ध करके स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस प्रतीक रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है। लेखन कौशल लिखने की एक कला होती है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों, अनुभवों, और भावनाओं को लोगो के सामने लिखकर प्रकट करते हैं। यह अपनी बात को लोगो तक पहुँचाने का एक अच्छा माध्यम है। लेखन कौशल का उपयोग आप प्रभावी और संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए भी कर सकते हैं। शब्दो के माध्यम से लोगों पर प्रभाव डाल सकते हैं। एक लेखक अच्छे लेखन कौशल के माध्यम से हम अपनी बात को लोगो को आसानी से समझा सकते हैं। अच्छे लेखन के लिए अच्छे विचार होने चाहिए, जिस विषय पर लिख रहे है उसकी अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

निष्कर्ष–इस प्रकार चार प्रमुख भाषा कौशल–बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना, प्रत्येक भाषा अधिग्रहण और दक्षता में एक अद्वितीय और आवश्यक स्थान रखते हैं। उनका सापेक्ष महत्व संदर्भ, लक्ष्य और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है। हालाँकि, यह इन कौशलों की परस्पर क्रिया है जिसके परिणामस्वरूप एक सर्वांगीण और प्रभावी संचारक बनता है। भाषा सीखने वालों को सबसे अधिक लाभ तब होता है जब वे सभी चार कौशलों में संतुलन और दक्षता के लिए प्रयास करते हैं, जिससे वे विविध व्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यावसायिक सेटिंग्स में भाषा की जटिलताओं को समझने में सक्षम होते हैं।

❐

भाषायी दक्षता का महत्व

3 भाषायी दक्षता (कौशल) के अर्थ, महत्व और उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–भाषा के शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है, अध्येता (छात्र) में भाषा व्यवहार की कुशलता पैदा करना। शिक्षण तथा अधिगम की दृष्टि से भाषा की कुशलता विविध भाषायी कौशलों के रूप में विकसित की जाती है।

श्रवण-भाषण-व्यवहार प्रमुखतः दो क्रियाओं पर आधारित है–(1) किसी के बोलने की क्रिया (2) दूसरे के सुनने की क्रिया। सुनने से अभिप्राय है वक्ता द्वारा प्रयुक्त ध्वनियों एवं उनसे बने शब्दों तथा वाक्यों को सुनकर उनमें निहित विचारों अथवा भावों को समझना। भाषण से अभिप्राय है मनोगत विचारों को वांछित गति से इस तरह प्रकट करना कि श्रोता समझ सके। जब हम भाषा के लिखित रूपों को अपने कार्य-क्षेत्र में शामिल कर लेते हैं तो अन्य व्यवहारों-वाचन तथा लेखन की कुशलता भी सीखना पड़ती है। इन चारों कुशलताओं-सुनना, बोलना, पढना तथा लिखना का संबंध भाषा के सभी घटकों ध्वनि, शब्द एवं वाक्य संरचना के साथ-साथ भाषा की संस्कृति से भी होता है।

भाषायी कौशलों का अर्थ–भाषायी कौशलों का अर्थ है–भाषा की सम्पूर्ण व्यवस्था की जानकारी एवं उनके प्रयोग की कुशलता का विकास। भाषा के शिक्षण में इन चारों कौशलों पर छात्रों का अधिकार कराया जाता है। इस तरह भाषा-शिक्षण का अर्थ है, अध्येता में लक्ष्य भाषा की दक्षता उत्पन्न करना एवं उसमें उस भाषा विशेष के व्यवहार की योग्यता पैदा करना।

भाषायी कौशलों का महत्व–भाषा-शिक्षण में भाषा के कौशलों का विशेष महत्व है। भाषा-शिक्षण का अर्थ भाषा के विषय में शिक्षण नहीं, वरन भाषायी कौशलों का शिक्षण है। इसका अर्थ हुआ कि भाषाओं को अभ्यास के द्वारा सीखा जाता है, भाषा की आदत पैदा की जाती है। मातृभाषा के मुख्य कौशलों को तो बालक परिवार में सहज तथा स्वाभाविक रूप से सीख लेता है, लेकिन अन्य भाषाओं को सीखते समय इन चारों कौशलों को सिखाना जरूरी हो जाता है। ये कौशल ही भाषा व्यवहार के आधार हैं। अन्य भाषा में विचारों के आदान-प्रदान, उपलब्ध साहित्य एवं विविध तरह का ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराने के लिए भाषा के उच्चरित तथा लिखित रूप का अभ्यास कराना जरूरी है। वस्तुतः इन कौशलों के लिए माध्यम से ही सम्प्रेषण स्थापित किया जा सकता है, इसलिए भाषा-शिक्षण में इन कौशलों का महत्व स्वतः स्पष्ट है ।

भाषायी दक्षताएँ–भाषा-प्रयोग में चार क्रियाएँ (दक्षताएँ) सम्मिलित हैं–भाषा को सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। यदि इनका विश्लेषण किया जाए तो निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति भाषा शिक्षण के माध्यम से होनी चाहिए–

(1) अन्य व्यक्तियों के कथन, भाषण आदि को सुनकर उसका अर्थ, आशय तथा भाव समझना।

(2) अपने विचारों, भावों, उद्देश्यों को भाषा में बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करना।

(3) अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखित भाषा को समझना।

(4) अपने भावों-विचारों को लिपिबद्ध रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता पैदा करना।

अपने भावों, विचारों, भावनाओं को लिपिबद्ध कर उनको अभिव्यक्त करने की क्षमता पैदा करने हेतु सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के कौशलों का शुरू से ही अभ्यास कराया जाता है जिससे छात्र इन क्रियाओं पर अधिकार प्राप्त कर सकें।

1. **सुनना**–बच्चों को छोटी-छोटी कहानियाँ सुनने की इच्छा बचपन से ही होती है। अपनी माँ, बूढ़ी दादी या नानी से कहानियाँ सुनने में वे रुचि लेते हैं। विद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात् भी उनकी रुचि वेगवती रहती है। अत: उन्हें विभिन्न तरह की कहानियाँ सुनाई जाती हैं।
2. **बोलना**–बोलने की शक्ति विकसित करने के लिए अध्यापक उनसे घर के विषय में वार्तालाप करता है, उनसे उनके खिलौने के विषय में, माता-पिता, पड़ोसियों के विषय में पूछताछ करता है। पशु-पक्षियों के विषय में साधारण बातचीत करता है। बालक जिस विद्यालय में पढ़ता है, उसके भवन, उपवन, प्रारम्भिक कृषि, बागवानी आदि कार्यों के विषय में उनसे वार्तालाप करता है। इससे छात्रों को आपस में वार्तालाप करने की प्रेरणा मिलती है।
3. **पढ़ना**–पढ़ना-लिखना सिखाना विद्यालय का प्रमुख कार्य माना जाता है। विद्यालय में छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ वर्ण लिखकर उसका उच्चारण करना सिखाते हैं। पढ़ना सार्थक क्रिया है इसमें कई तरह के कौशल भी निहित हैं। यह सोचकर ही अध्यापक पाठ्य-पुस्तकों का शुद्ध सस्वर पाठ कराता है। शब्दों के अर्थ तथा वाक्यों में उनका प्रयोग बताता है। पढ़े हुए अंश पर किए गए प्रश्नों का उत्तर देना सिखाता है। आगे की कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक में दिए गए पाठों का उच्च स्वर से पठन कराया जाता है, अनुच्छेदों का मौन पठन कर उनके विचारों को समझने की दक्षता पैदा की जाती है।
4. **लिखना**–लिखने का कार्य देवनागरी लिपि के सभी वर्णों को शुद्ध लिखने से शुरू किया जाता है। संयुक्ताक्षर लिखना सिखाया जाता है। छोटे-छोटे वाक्यों को देखकर लिखने का अभ्यास कराया जाता है। सुलेख, अनुलेख, प्रतिलेख तथा श्रुतिलेख का अभ्यास उत्तरोत्तर क्रम में छात्रों को कराया जाता है। चौथी-पांचवीं कक्षा में बालकों को कहानियाँ लिखना, छोटे-सरल पत्र लिखना, वर्णनात्मक लेखों का लिखना सिखाया जाता है।

सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की क्रियाएँ सिर्फ इसलिए कराई जाती हैं कि बालकों को भाषा के साधारण कौशल आ जाएँ।

भाषा-दक्षता का प्रमुख उद्देश्य–भाषा-कौशल के पाठ नियोजन से पहले भाषा के स्तर एवं विषय-वस्तु के ज्ञान के आधार पर शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण अवश्य कर लिया जाना चाहिए। यह निर्धारण अध्यापन की दृष्टि से बहत उपयोगी है। शिक्षण-बिन्दुओं के शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न तरह की पाठ्य-सामग्री का संकलन करना जरूरी है। पाठय-सामग्री में छात्रों की रुचि, उत्साह तथा सक्रियता बनी रहे, इसके लिए उचित सहायक-सामग्री तथा शिक्षण-विधि का निश्चय करना चाहिए। छात्र की आयु, लिंग, व्यवसाय, मातृभाषा एवं स्तर की दृष्टि से पाठ्य-सामग्री की मात्रा तथा गुण में अन्तर होना स्वाभाविक है। पाठय-सामग्री का स्वरूप, शैली, माध्यम, सन्दर्भ तथा बोलचाल आदि से प्रभावित होता है। पाठ्य-सामग्री का उद्देश्य स्तर, अवधि एवं क्षेत्र सामग्री की मात्रा को प्रभावित करता है।

भाषा-दक्षता या कौशल पाठ-शिक्षण का प्रमुख ध्येय है कि छात्र सीखी गई भाषा को शुद्धता, प्रवाह तथा स्वतन्त्रता के साथ प्रयोग कर सके। यह उद्देश्य निम्न तरह प्राप्त किया जा सकता है-

1. **शुद्धता लाने के लिए** अभिव्यक्ति में होने वाली भूलों की मात्रा तथा आवृत्ति को कम किया जाता है।
2. **प्रवाह लाने के लिए** प्रयोग आवृत्ति की मात्रा में वृद्धि की जाती है ।
3. **स्वतन्त्रता के साथ प्रयोग करने के लिए** विविध तरह के भाषा-अभ्यास कराए जाते हैं। इस तरह भाषा-कौशल का समग्र रूप में विकास किया जाता है।

भाषायी दक्षता कई सम्बद्ध अभ्यासों का परिणाम है। इसलिए भाषा-कौशल की पाठ्य-सामग्री में विविध प्रकार के अभ्यासों की सामग्री की गणना की जाती है। भाषा-कौशल के विकास में दुहराने की क्रिया बहुत प्रभावशाली है। दुहराने की क्रिया भाषा के चारों कौशलों के प्रयोग में लाई जा सकती है।

❐

श्रवण और वाचन

4 भाषायी दक्षता को प्राप्त करने में श्रवण कौशल की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

अथवा

श्रवण कौशल से आप क्या समझते हैं? श्रवण कौशल का अर्थ स्पष्ट करते हुए श्रवण कौशल के उद्देश्यों और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–सामान्यत: कानों द्वारा ध्वनियों को ग्रहण करने और मस्तिष्क द्वारा उनको अनुभूत करने को 'सुनना' अथवा श्रवण कहते हैं। परन्तु भाषा के सन्दर्भ में सुनने का अर्थ होता है–मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव एवं विचारों को सुनकर समझना। इस प्रकार जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और हम उसे सुनकर उसके भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवा श्रवण कहलाती है। यह बात दूसरी है कि हम यथा भाव एवं विचार किस सीमा तक समझते और ग्रहण करते हैं।

सुनना (श्रवण) का अर्थ व परिभाषा–'श्रवण' शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका संबंध 'सुनने' और 'अधिगम' करना आदि से है। 'श्रवण' अंग्रेजी के शब्द 'Listening' शब्द का पर्याय है। 'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका अर्थ निकालने, सुनी हुई बातों पर चिंतन-मनन करने और अर्थ की प्रतिक्रिया देने से है। श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना अत्यंत आवश्यक है। बालक के जन्म लेने के उपरांत उसकी प्रारंभिक शिक्षा उसकी श्रवण शक्ति पर निर्भर करती है। यदि छात्र की श्रवण इन्द्रियों में दोष है, तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अत: उसका भाषा-ज्ञान शून्य के बराबर ही रहेगा। बालक सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है।

डॉ. किशोरी लाल शर्मा श्रवण कौशल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि–"श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता है, अपितु जो कुछ हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं। इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता, यह एक कड़ी है तथा सोद्देश्य है।"

सुनने के आवश्यक तत्व एवं आधार–मौखिक भाषा सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है उन्हें ही सुनने के आवश्यक तत्व एवं आधार कहते हैं। ये तत्व निम्नलिखित हैं-

- श्रोता की श्रवणेन्द्रिय (कान)।
- श्रोता की भाषा की ध्वनियों, ध्वनि समूहों एवं शब्दों का ज्ञान।
- श्रोता में मूलध्वनियों एवं ध्वनि समूहों में अन्तर करने की योग्यता।
- श्रोता में सुनने की तत्परता, सुनने में उसकी रुचि एवं अवधान।
- श्रोता में धैर्यपूर्वक पूर्ण मनोयोग से सुनने की आदत।
- श्रोता में सुनी हुई सामग्री का अर्थ एवं भाव समझने की योग्यता।
- श्रोता में बोलने वालों के हाव-भाव के अनुसार अर्थ एवं भाव समझने की योग्यता।

श्रवण कौशल का विकास–बच्चों में श्रवण कौशल के विकास का अर्थ है–उन्हें मौखिक भाषा सुनाकर उसके अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया में निपुण करना। इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सुनने के आवश्यक तत्वों का विकास किया जाए। जहाँ तक मातृभाषा के सन्दर्भ में सुनने के कौशल के विकास का प्रश्न है, इसका कुछ विकास तो बच्चों में विद्यालयों में प्रवेश लेने से पहले हो चुका होता है परन्तु उसकी अपनी सीमा होती है और यह सीमा बहुत छोटी होती है। विद्यालयों में बच्चों को मातृभाषा के सर्वमान्य रूप को सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने में दक्ष किया जाता है। इसके लिए हमें विद्यालयी शिक्षा के भिन्न-भिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न कार्य करने होते हैं।

श्रवण कौशल का महत्व–बच्चा जन्मोपरान्त ही सुनने लग जाता है। ये ध्वनियाँ उसके मन मस्तिष्क पर अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती हैं। अच्छी प्रकार से सुनने के कारण ही बालक ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को समझ पाता है। श्रवण कौशल ही अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है। इससे ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को पहचानने की क्षमता विकसित होती है। इसे अध्ययन की आधारशिला भी कहा जाता है। इससे वाचन कौशल का विकास होता है। इससे लेखन कौशल के विकास में भी सहायता मिलती है। श्रवण कौशल के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं–

1. बालक के व्यक्तित्व के विकास में श्रवण कौशल का अधिक महत्व होता हैं। बालक जिन ध्वनियों को बड़ों से सुनता हैं वह उसके मन-मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती हैं। श्रवण कौशल अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने की प्रमुख आधारशिला हैं।
2. बालक श्रवण के प्रति जागरूक बनता है तथा श्रवण कौशल द्वारा बालक की श्रवणेन्द्रियों का उपयोग होता है।
3. भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती हैं। नए-नए शब्दों को सुनकर बालक अपने शब्द भण्डार में वृद्धि करता हैं। बालक परिवार के सदस्यों और अध्यापकों की बात सुनकर स्वयं अपने उच्चारण, हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं उचित स्वरगति के अनुसार बोलने का प्रयास करता हैं। इस प्रकार उसकी मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है।
4. शांत रहकर, दूसरों की बात सुनकर व समझकर ही व्यक्ति विचारों के प्रतिपादन हेतु ठोस तर्क प्रस्तुत कर सकता है।
5. साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन तथा उनकी व्याख्या को सुनकर ही उसकी विषय वस्तु को ग्रहण किया जा सकता है। बालक कविता का रसास्वादन और कहानी का आनंद सुनकर ही कर सकता है।

श्रवण कौशल के उद्देश्य–भाषायी दक्षता प्राप्त करने के लिए श्रवण कौशल के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव है-

1. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।
3. छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना।
4. श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।
5. धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।
6. ग्रहणशीलता की मन:स्थिति बनाए रखना। शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल भाव व अर्थ समझ सकना।
7. किसी भी श्रुत सामग्री को मनोयोगपूर्वक सुनने की प्रेरणा प्रदान करना।

8. दूसरों के द्वारा उच्चरित शब्दों को सुनकर शुद्ध उच्चारण करने की योग्य बनाना।
9. श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण अंशों को पहचानने की योग्यता विकसित करना।
10. श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण, आकर्षक, मर्मस्पर्शी विचारों तथा भावों का चयन करने की योग्यता विकसित करना।
11. वक्ता के मनोभावों को समझने योग्य बनाना।

निष्कर्ष–सुनकर ज्ञान प्राप्त करना एक मानवीय प्रवृत्ति है। श्रवणीय सामग्री का सुनकर अर्थ ग्रहण करना, भाषा सामग्री सुनाकर अर्थ ग्रहण कराना, भाषा-शिक्षण का पहला कौशलात्मक सामान्य उद्देश्य है। इस कौशल के विकास से छात्र में ऐसी मनःस्थिति का निर्माण किया जाता है कि वे कही हुई बात समझ सकें एवं वक्ता के कथन में प्रयुक्त शब्दों, उक्तियों, मुहावरों का प्रसंगानुकूल भाव समझ सकें। इसीलिए छात्रों को कथा शैलियों से परिचित कराना आवश्यक है। शब्दों और वाक्यों में सार्थकता उनका प्रथम लक्षण है। सार्थक ध्वनियाँ मस्तिष्क में विचार या भाव बिम्ब बनाती हैं और शिक्षक उन भाव या विचार बिम्बों को स्थूल रूप देता है। बोलने की शैली व लहजे से वक्ता के भाव एवं अभिवृत्ति प्रकट होती है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसमें तुर्की, फारसी, अरबी, अंग्रेजी तथा संस्कृत के शब्दों का समावेश है और यही गुण भाषा को जीवित रखता है। क्योंकि भाषा में लगातार विकास एवं नए शब्दों का समावेश आवश्यक है। इसके लिए छात्रों को भाषायी विविधता से परिचित कराना भी आवश्यक है। ❐

5 वाचन कौशल का अर्थ और महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–वाचन भाषायी कौशलों में एक प्रमुख कौशल माना गया है। लेकिन पठन एक लिखित कौशल होने के कारण उसे गौण कौशल माना गया है। यह भाषायी कौशल में क्रम से तीसरे स्थान पर आता है। वाचन एक कला है। इस कला को सभी मनुष्य समान रूप से आत्मसात नहीं कर सकते हैं। बल्कि कुछ मनुष्य ही उसे अच्छी तरह से अर्जित कर सकते हैं।

वाचन का अर्थ–हम अधिकतर 'Reading' शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसके लिए हिंदी में दो शब्दों–'वाचन' और 'पठन' का प्रयोग होता है। इन दोनों में थोड़ा अंतर है, पठन मौन रहकर केवल आँखों से भी किया जा सकता है और वाचन का अर्थ है–जोर-शोर से पढ़ना, जिसका आनंद श्रोता भी ले सकें। स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर वाचन के द्वारा ही कराई जाती है। यह वाचन की प्रारंभिक अवस्था होती है। लिपिबद्ध भाषा अर्थात् लिखित सामग्री को बिना ध्वनि किए, मन ही मन में पढ़ने और साथ-साथ अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहते हैं।

वाचन कौशल का महत्व–वाचन भाषायी दक्षता का एक महत्वपूर्ण कौशल है। वाचन का अर्थ लिपि द्वारा अक्षर को पहचानना और उसके सहारे अर्थ-निष्पत्ति को प्राप्त करना है। वाचन के मूल में अर्थग्रहण की आवश्यकत्ता अधिक महत्वपूर्ण होती है। कोई भी साहित्य बिना महत्व के नहीं लिखा जाता है। उसके महत्व को ध्यान में रखकर ही साहित्य लिखा जाता है। उसी रूप से वाचन कौशल का महत्व मनुष्य के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है। वह इस प्रकार है–

1. **ज्ञानप्राप्ति**–वाचन का मूल महत्व ज्ञानप्राप्त करना है। कोई भी छात्र जब वाचन करता है, तो उसका मूल उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाने में होता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्र विभिन्न प्रकार की किताबें पढ़ता है। नए-नए विषयों की जानकारी हमें उससे प्राप्त होती है। कुछ छात्र ग्रंथों को ही अपना गुरु मानते हैं, क्योंकि ग्रंथ भी गुरु के समान ज्ञान देने का महान कार्य करता है। इस तरह वाचन का मूल उद्देश्य छात्र अपने जीवन में ज्ञान-प्राप्ति के लिए करता है।

2. **आनंद तथा मनोरंजन**–ज्ञानप्राप्ति के साथ-साथ छात्र आनंद तथा मनोरंजन भी प्राप्त कर सकता है। कोई छात्र अपनी रुचि की कहानी, कविता, नाटक तथा कोई फिल्मी गीत वाचन कर आनंद तथा मनोरंजन कर सकता है। जब घर में या सफर करते समय छात्र या कोई व्यक्ति अनेक बार समय बिताने के लिए कोई न कोई किताब या समाचारपत्र पढ़ते हैं तो इसे खास करके मनोरंजनात्मक या आनंद भरा वाचन ही कहा जाता है।

3. **सांस्कृतिक विकास**–मनुष्य को वाचन से विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त होता है। वाचन के कारण ही दो भिन्न धर्म की संस्कृति, रीति-रिवाज आदि बातों का सामान्य परिचय हमें मिल सकता है। वाचन का महत्व मनुष्य के जीवन में अपनी संस्कृति को बढ़ाने या अच्छी संस्कृति को आत्मसात करने में महत्व होता है।

4. **व्यक्तित्व विकास**–मनुष्य के जीवन में अपना प्रभावी व्यक्तित्व बनाने के लिए वाचन का महत्व होता है। व्यक्तित्व का मतलब है, सामाजिक संबंध स्थापित करने की और दूसरों पर प्रभाव डालने की क्षमता होना। वाचन से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य लोगों से श्रेष्ठ दिखाई देता है। इसलिए वाचन का महत्व मनुष्य के व्यक्तिगत उन्नति के लिए अर्थात् एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व बनाने के लिए होता है।

5. **भाषा पर अधिकार प्राप्त करना**–वाचन से नए-नए शब्द, मुहावरे तथा वाक्य का सैद्धांतिक ज्ञान हमें प्राप्त होता है। भाषा में शब्दों का सही रूप से उच्चारण करना वाचन कौशल सिखाता है। जो व्यक्ति अपने शब्द पर, उच्चारण पर प्रभुत्व निर्माण कर सकता है, ऐसा व्यक्ति दुनिया की किसी भी भाषा पर अपना अधिकार तथा प्रभुत्व बना सकता है।

6. **साहित्य लेखन या साहित्य सृजन**–वाचन का महत्व साहित्य सृजन करने के लिए होता है। किसी भी व्यक्ति को अपनी रचनात्मक प्रतिभा निखारने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की पुस्तकें पढ़ना आवश्यक होता है। उसके सहारे ही लेखक अपने विचारों के अनुरूप कविता, नाटक, उपन्यास आदि विभिन्न विधाओं का लेखन करता है।

7. **समीक्षा या आलोचना**–कोई व्यक्ति विशिष्ट विषय पर गहरा ज्ञान प्राप्त करता है। तो वह व्यक्ति उस विषय पर अच्छी समीक्षा या आलोचना कर सकता है। समीक्षा या आलोचना से तात्पर्य उस विषय से संबंधित गुण-दोषों को उजागर करना है। समीक्षा या आलोचना वही व्यक्ति कर सकता है, जो वाचन कौशल को अच्छी तरह से समझने में कामयाब हुआ है। इसलिए वाचन का महत्व समीक्षा या आलोचना करने के रूप में होता है।

8. **मार्गदर्शन के लिए**–व्यक्ति विभिन्न तरह की विभिन्न विषयों की अनेक किताबें पढ़कर ज्ञान को संग्रहित करता है। उस संग्रह का उपयोग आगे चलकर मार्गदर्शन के रूप में करता है। किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन में एक अच्छा मार्गदर्शक बनने के लिए वाचन करना सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि वाचन के बिना एक अच्छा मार्गदर्शन करना संभव नहीं होता है।

9. **सामान्य तथा सूक्ष्म अर्थग्रहण के लिए**–वाचन का महत्व अर्थग्रहण करने में है, अर्थात् सामान्य से सामान्य तथा सूक्ष्म से लेकर सूक्ष्म विषय का अर्थग्रहण करना है। अनेक व्यक्ति ज्ञानप्राप्ति या मनोरंजन के लिए वाचन करते हैं। लेकिन कभी-कभी छोटी से छोटी बात का पता लगाने के लिए भी वाचन करते हैं।

10. **रोजगार प्राप्त करने में**–वाचन का महत्व मनुष्य के जीवन में रोजगार प्राप्त करने के लिए होता है। किसी भी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करना है, तो उसमें वाचन कौशल सबसे महत्वपूर्ण है।

❒

6 भाषायी दक्षता को प्राप्त करने में वाचन कौशल की क्या भूमिका है? उल्लेख कीजिए।

अथवा

वाचन कौशल के विकास की प्रक्रिया की विवेचना कीजिए।

उत्तर–भाषायी कौशल में अन्य कौशलों के साथ-साथ वाचन कौशल का भी विशेष महत्व है। मनुष्य को वाचन कौशल से सभी क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। वाचन एक ऐसी ऊर्जा है जो मनुष्य को अधिक बुद्धिमान बनाने की प्रेरणा का निर्माण करती है। वाचन से ही मनुष्य का जीवन सुंदर व महान बन सकता है। भाषायी दक्षता को प्राप्त करने में वाचन कौशल का महत्वपूर्ण योगदान है-

1. **उपयुक्त सामग्री**–वाचन कौशल को अर्जित करने के लिए व्यक्ति के पास वाचन की उपयुक्त सामग्री का होना आवश्यक है। व्यक्ति के पास जितनी अधिक वाचन सामग्री होगी, उतनी ही अधिक वाचन शक्ति को अर्जित करने में मदद मिलेगी। वाचन दक्षता को प्राप्त करने के लिए पाठशाला, कक्षा, पुस्तकें, कुशल अध्यापक की जरूरत होती है। इनके माध्यम से व्यक्ति वाचन कौशल को धीरे-धीरे विकसित कर सकता है।
2. **लिपि ज्ञान**–वाचन कौशल को अर्जित करने के लिए विभिन्न सामग्री के साथ-साथ लिपि का ज्ञान होना भी आवश्यक है। लिपि-ज्ञान के अभाव में वाचन कौशल अर्जित करना संभव नहीं है। मनुष्य भाषा श्रवण से सीखता है। इससे बोलने की क्षमत्ता आती है लेकिन पढ़ने की क्षमता नहीं। इसलिए वाचन दक्षता को अर्जित करने के लिए लिपि-ज्ञान आवश्यक होता है। लिपि ज्ञान से हमें भाषा का परिचय होता है। भाषा के स्वर, व्यंजन तथा व्याकरण के सभी नीति-नियमों का भी परिचय होता है। इसलिए सबसे पहले हमें लिपि-ज्ञान होना वाचन कौशल के लिए आवश्यक है।
3. **शब्द तथा वाक्य रचना का ज्ञान**–लिपि चिह्नों के सहयोग से शब्द बनते हैं। शब्द की सहायता से वाक्य बनाता है। शब्द और वाक्य का ज्ञान वाचन शिक्षण अर्जित करते समय सबसे महत्वपूर्ण है। एक शब्द के लिए अनेक पर्यायी शब्द होते हैं। लेकिन उन पर्यायी शब्दों का उपयोग उचित समय पर ही करना अवश्यक होता है क्योंकि अनेक बार शब्द का ज्ञान न होने के कारण वाचन शिक्षण में बाधा उत्पन्न हो सकती है।
4. **उचित बलाघात**–वाचन कौशल को अर्जित करते समय उचित बलाघात का उपयोग करना अवश्यक होता है। बलाघात के कारण ही वाचन कौशल में एक लय निर्मित होती है। यह लय ही वाचन कौशल का एक अच्छा लक्षण है। बलाघात से तात्पर्य शब्द का सही उच्चारण करते हुए अर्थ-निष्पत्ति करना है। जो छात्र शब्द का सही उच्चारण करना चाहता है, उस छात्र को बलाघात का ज्ञान होना अवश्यक है। क्योंकि बलाघात के सहारे ही वाचन कौशल को हम सही रूप से अर्जित कर सकते हैं।
5. **नेत्रगति**–वाचन शिक्षण में वाचन कौशल को अर्जित करने के लिए नेत्रगति का भी रहना आवश्यक है। जिस तरह से छात्र श्रवण करता है। उसी तरह से आँखों से वाचन भी अर्जित कर सकता है। वाचन को प्राप्त करने के लिए सिर्फ नेत्रगति होना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि उसके साथ ही नेत्र-ज्योति होना सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में वाचन की योग्यता को प्राप्त करना बड़ा कठिन होता है।
6. **श्रवण और भाषण**–वाचन शिक्षण में श्रवण और भाषण का विशेष महत्व है। श्रवण और भाषण यह वाचन कौशल को अर्जित करने के मूलभूत कौशल हैं। व्यक्ति सबसे पहले सुनता है, उसके बाद बोलने लगता है और बाद में वाचन करने लगता है। अर्थात् श्रवण और भाषण पर वाचन कौशल निर्भर है। हम जिस तरह सुनते हैं, उसी तरह से वाचन भी करते हैं। इसलिए वाचन शिक्षण में श्रवण और भाषण का विशेष महत्व है।

वाचन-दक्षता का अर्थ–वाचन-दक्षता का अर्थ है–शब्द भंडार की वृद्धि तथा वाचन की गति में वृद्धि करना। प्राथमिक अवस्था में छात्रों को कठिन शब्दों से मुक्त रखा जाता है। ताकि शब्दों की दुर्बोधता में पड़कर छात्र वाचन कौशल को छोड़ न पाएँ। परन्तु छात्र जब पूरी तरह से वाचन करना सीख लेता है तथा वह किसी विशिष्ट जानकारी को प्राप्त करने के लिए वाचन करने लगता है, तब विभिन्न तरह के शब्द भंडार को सुव्यवस्थित रूप से उनकी वाचन सामग्री में रखना आवश्यक होता है।

वाचन-दक्षता के विकास का प्रमुख साधन 'शब्द भंडार' है। छात्रों के शब्द-भंडार के विकास में वाचन की सामग्री का विशेष महत्व है। छात्र का जितना अधिक गहन वाचन होगा, उतना ही उसके पास शब्दों का भंडार होगा। प्रारंभ में छात्र शब्दों के अर्थ से अपरिचित होते हैं, परन्तु बाद में उसके संदर्भ, वाक्य तथा कथानक के आधार पर वे शब्दों के अर्थ समझने में समर्थ होते हैं।

वाचन-दक्षता का विकास : द्रुतवाचन–वाचन दक्षता को विकसित करने की प्रक्रिया में द्रुतवाचन एक महत्वपूर्ण वाचन है। प्राथमिक कक्षाओं में वाचन करनेवाला छात्र अपनी छोटी आयु के कारण वाचन में तीव्रता नहीं ला पाता। शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने की चिन्ता तथा बोले गए वाक्यों के भावों-विचारों को समझने की असमर्थता आदि के कारण छात्र रुक-रुक कर पढ़ता है। धीरे-धीरे अभ्यास के फलस्वरूप वाचन की गति मन्द से सामान्य हो जाती है, और सामान्य से निरंतर वाचन करने से तेज हो जाती है।

द्रुतवाचन का अर्थ है–अधिक गति के साथ वाचन करते हुए विषयवस्तु को समझ सकना। गति का अभिप्राय है कम समय में अर्थ ग्रहण करते हुए अधिक पृष्ठों का वाचन करना। इस प्रकार वाचन की कुशलता का विकास वाचन की आदत-निर्माण द्वारा ही सहज रूप से संभव है। वाचन की दक्षता का विकास करने के लिए निम्नलिखित बातों को देखना आवश्यक है-

1. **सस्वर वाचन तथा मौन वाचन**–वाचन की दक्षता का विकास करने में सस्वर वाचन तथा मौन वाचन का विशेष महत्व है। सस्वर वाचन के सहारे छात्र वाचन कौशल को अर्जित कर सकता है। सस्वर वाचन ऐसा एक महत्वपूर्ण वाचन प्रकार है, जिसमें छात्र वाचन के वर्ण, शब्द, वाक्य तथा व्याकरण के सभी नियमों के तहत उच्चारण कर सकता है। इसलिए द्रुतवाचन का विकास करने के लिए छात्र के पास सस्वर वाचन का पूरा ज्ञान होना आवश्यक है। सस्वर वाचन की तरह मौन वाचन भी द्रुतवाचन का विकास करने के लिए महत्वपूर्ण वाचन प्रकार है।
2. **छात्रों की आयु**–दुतवाचन बढ़ाने के लिए छात्रों की आयु को ध्यान में रखना आवश्यक है। छात्रों की आयु तथा स्तर के अनुसार ऐसे अनेक विषयों को प्रस्तुत करना आवश्यक है ताकि अधिक से अधिक छात्र द्रुतवाचन की और अकर्षित हो जाएँ। प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों के सामने आसान शब्द, भाषा में सरलता तथा विषय में उनके आयु के समान रोचकता हो। तभी छात्र धीरे-धीरे द्रुतवाचन की ओर आगे बढ़ाने लगता है। उच्चशिक्षा प्राप्त करनेवाला छात्र वाचन की सभी बातों से परिचित होता है। इसलिए उनकी आयु व स्तर के अनुसार द्रुतवाचन के लिए कोई विषय रखा जाए तभी द्रुतवाचन का विषय छात्रों के बीच हो सकता है।
3. **छात्रों की अभिरुचि**–द्रुतवाचन को अधिक पल्लवित करने के लिए अध्यापक को छात्रों की अभिरुचि के अनुसार साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना उचित है। छात्रों की रुचि किस तरह की है, आज कौनसा साहित्य पढ़ने के लिए उसके मन में जिज्ञासा है। उसकी रुचि को देखकर साहित्य पढ़ने के लिए देना आवश्यक है। प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों की अभिरुचि सिर्फ शब्द पढ़ने तक या उसका सही उच्चारण करने तक सीमित होती है, लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की अभिरुचि ज्ञानात्मक तथा शोध साहित्य की ओर अधिक होती है, तो उनके सामने ऐसा ही साहित्य रखना उचित है। तभी द्रुतवाचन का विकास हो सकता है।

4. **वाचन सामग्री की उपयुक्तता**–द्रुत वाचन की योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त वाचन सामग्री का होना आवश्यक है। वाचन-सामग्री छात्र की रुचि के अनुसार हो, जितनी मात्रा में वाचन की सामग्री छात्रों की रूचि के अनुसार उपलब्ध होगी, छात्र उतनी ही अधिक मात्रा में वाचन की ओर अपना लक्ष्य केन्द्रित करेगा तथा धीरे-धीरे द्रुत वाचन की ओर बढ़ेगा।
5. **अर्थ ग्रहण की क्षमता**–वाचन की आदत बढ़ाने के लिए छात्रों के मन में सबसे पहले अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास करना होगा। वाचन का अर्थ सिर्फ लिपियों तथा शब्दों का उच्चारण करने तक सीमित नहीं है। अपितु उसके साथ शब्दों का मन ही मन अर्थग्रहण करना भी है। जो छात्र लिपियों को पहचाने, शब्दों का उच्चारण करने के साथ शब्दों का पूरा अर्थग्रहण कर लेता है तो वह छात्र द्रुतवाचन को धीरे-धीरे विकसित कर सकता है।
6. **नेत्रगति**–वाचन की आदत का विकास करने के लिए छात्रों की नेत्रगति महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि वाचन एक कला है। उस कला को वही छात्र आत्मसात कर सकता है, जिसकी नेत्र-ज्योति अच्छी है। सभी छात्रों को समान रूप से आँखों की रोशनी नहीं मिली है। लेकिन जिस छात्र को वाचन की आदत का विकास करना है, तो छात्रों के पास नेत्रगति उसके अनुकुल होनी चाहिए।
7. **शब्दों और वाक्यों की सरलता**–वाचन दक्षता को विकसित करनेवाले सभी छात्र एक आयु के नहीं होते हैं। प्राथमिक कक्षा में पढ़ने वाले छात्र वाचन की आदत को विकसित करना चाहता है तो उसके सामने आसान शब्दों का ही उपयोग करना उचित है। क्योंकि उसकी बौद्धिक क्षमता उसी स्तर की होती है। लेकिन जब उसके सामने कठिन शब्दों व वाक्यों का प्रयोग करने लगते हैं तो वाचन-कौशल के विकास में रुकावट उत्पन्न हो सकती है और छात्र वाचन कौशल के विकास-मार्ग से भटक जाता है। इसलिए वाचन की आदत का विकास करने के लिए छात्रों के सामने सबसे पहले आसान और सरल शब्दों व वाक्यों का ही उपयोग करना आवश्यक है।

❐

7 **सुनने एवं बोलने के कौशल के स्रोत एवं सामग्री का परिचय दीजिए।**

अथवा

श्रवण व वाचन कौशल को विकसित करने के माध्यमों तथा सामग्रियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–भाषा प्रयोग में चार क्रियाएँ (दक्षताएँ) सम्मिलित हैं–भाषा को सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। इनका विश्लेषण करने पर निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति भाषा शिक्षण के माध्यम से सम्भव है–(1) अन्य व्यक्तियों के कथन, भाषण आदि को सुनकर उसका अर्थ, आशय तथा भाव समझना। (2) अपने विचारों, भावों, उद्देश्यों को भाषा में बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करना। (3) अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखित भाषा को समझना। (4) अपने भावों-विचारों को लिपिबद्ध रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता पैदा करना।

इन्हीं दक्षताओं के विकास के लिए सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने के कौशलों का अभ्यास कराया जाता है जिससे छात्र इन क्रियाओं पर अधिकार प्राप्त कर सकें। बच्चों को बचपन में जो छोटी-छोटी कहानियाँ, बालगीत सुनाये जाते हैं, वो वास्तव में बच्चों में सुनने के कौशल के विकास एवं दक्षता के लिए ही सुनाया जाता है। बोलने की शक्ति विकसित करने के लिए अध्यापक उनसे घर के विषय में वार्तालाप करता है, उनसे उनके खिलौने के विषय में, माता-पिता, पड़ोसियों के विषय में पूछताछ करता है। पशु-पक्षियों के विषय में साधारण बातचीत करता है। बालक जिस विद्यालय में पढ़ता है, उसके भवन, उपवन, प्रारम्भिक कृषि, बागवानी आदि कार्यों के विषय में उनसे वार्तालाप करता है। इससे छात्रों को आपस में वार्तालाप करने की प्रेरणा मिलती है।

सुनने एवं बोलने के कौशल के स्रोत एवं सामग्री—श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास भाषा शिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस कौशल के विकास के लिए शिक्षक नाना प्रकार के स्रोत एवं सामग्री का प्रयोग ता है जो निम्नलिखित हैं-

1. **सस्वर वाचन**—शिक्षक के द्वारा किए गए आदर्श वाचन और कक्षा के किसी छात्र द्वारा किए जाने वाले अनुकरण को ध्यानपूर्वक सुनकर शुद्ध उच्चारण, बलाघात, गति आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे शिक्षक को पता रहेगा कि छात्रों का श्रवण कौशल एवं पठन व वाचन कौशल कितना विकसित हो रहा है।
2. **श्रुत लेख**—इससे श्रवण-कौशल के प्रशिक्षण एवं विकास पर ध्यान दिया जा सकता है। श्रुत लेख शुद्ध लिखने के अभ्यास के लिए सर्वश्रेष्ठ साधन है। श्रुत-लेख के अन्तर्गत बालकों को सुनकर लिखना होता है। जो बालक ध्यानपूर्वक सुनेगा, वह समस्त सामग्री को सही और शुद्धता के साथ लिख सकेगा। लेकिन जो छात्र ध्यानपूर्वक सुनने का प्रयास नहीं करेगा, उसके लेख में शब्द या वाक्यों के छूटने का भय बना रहेगा। श्रुत-लेख सामग्री छात्रों के मानसिक और बौद्धिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।
3. **भाषण**—श्रवण का प्रशिक्षण देने हेतु भाषण का भी अभ्यास कराना लाभकारी होता है। छात्रों को पहले से यह बताना उचित होता है कि भाषण के बाद उनसे प्रश्न पूछे जाएंगे, तो सभी छात्र भाषण को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
4. **वाद विवाद**—श्रवण-कौशल का प्रशिक्षण देने हेतु वाद-विवाद क्रिया बहुत सार्थक और सशक्त होती है। इस क्रिया में भाग लेने वाले छात्रों को बहुत सचेत रहना पड़ता है। अगर वे ध्यान से नहीं सुनेंगे तो प्रतिपक्षी वक्ता के प्रश्नों का उत्तर देने में असफल रहेंगे। वाद-विवाद के समाप्त होने पर अन्य छात्रों से प्रश्न करने चाहिए ताकि इस बात का पता लग सके कि कक्षा में कितने छात्र ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।
5. **विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न**—शिक्षक को छात्रों से पठित-सामग्री पर प्रश्न पूछने चाहिए। छात्रों के उत्तर से यह जाँच हो जाएगी कि छात्र सुनकर विषय-वस्तु को ग्रहण कर रहे हैं या नहीं। शिक्षक के द्वारा प्रश्न पूछे जाने से छात्र भी सावधान हो जाएंगे तथा कक्षा में शिक्षक की बात को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।
6. **कहानी कहना तथा सुनना**—सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को कहानी सुनाये तथा बाद में उनसे सुने। इससे भी ज्ञात हो जाएगा कि छात्रों ने कहानी ध्यानपूर्वक सुनी या नहीं। बालक कहानी सुनकर अपार आनन्द लेते हैं। इसलिए विद्यार्थियों का ध्यान कहानी सुनने की ओर आकर्षित किया जा सकता है।
7. **मल्टीमीडिया**—ग्रामोफोन से कहानी, कविता, नाटक आदि सुनकर छात्र-छात्रों की साहित्यिक रुचि पैदा की जा सकती है। शुद्ध-उच्चारण की दृष्टि से इसकी सहायता ली जा सकती है।
8. **टेपरिकॉर्डर**—टेपरिकॉर्डर के द्वारा किसी साहित्यिक कार्यक्रम को रिकॉर्ड करके जब चाहें छात्र-छात्राओं को सुनाया जा सकता है। चलचित्र (सिनेमा) में आवाज सुनाई देने के साथ-साथ दृश्य भी दिखाई देते हैं। नाटकों को विद्यार्थी ध्यान से देखने के साथ-साथ ध्यान से सुनते भी है। श्रवण-कौशल के विकास हेतु चलचित्र का प्रयोग करना लाभकारी सिद्ध होता है। जिस प्रकार किसी भी वार्ता आदि को टेप करके टेपरिकॉर्डर द्वारा विद्यार्थियों को सुनाया जा सकता है, उसी प्रकार किसी कार्यक्रम को रिकॉर्ड कर वीडियो के माध्यम से दूरदर्शन पर दिखाया जा सकता है। विद्वानों के भाषणों एवं विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की कैसेट का प्रयोग किया जा सकता है। इससे श्रवण कौशल के साथ-साथ भाषण-कौशल को विकसित करने में भी सहायता मिलती है।
9. **रोल प्ले**—रोल प्ले के माध्यम से छात्रों का श्रवण एवं वाचन दोनों कौशलों का भलीभाँति विकास सम्भव है। इसमें किसी का रोल नियोजित ढंग से करने से पूर्व छात्र को एक चरित्र दिया जाता है। उस चरित्र के अनुसार छात्र उसका रोल करता है। उदाहरण स्वरूप रेल के टिकट खरीदने का, फोन पर एक मीटिंग करने का, किसी भी प्रकार का रोल प्ले करवाया जा सकता है।

10. **परिस्थितियों के अनुसार संवाद**—विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार के भाव को प्रकट करना है एवं कैसे वाचन करना है, इसके लिए शिक्षक कृत्रिम रूप से ऐसी परिस्थितियाँ बनाने एवं उनके अनुसार छात्रों को संवाद बोलने के लिए प्रेरित करें। छात्र-छात्राओं को अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को समय-समय पर उन अनुभवों की मौखिक व्याख्या करने के लिए अवसर प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त नाटक साहित्य की ऐसी सशक्त एवं सार्थक विधा है, जिसके माध्यम से मौखिक अभिव्यक्ति के सभी गुणों का विकास होता है। इसमें भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं को पात्र के चरित्र के अनुसार उचित हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं प्रवाह के साथ संवाद प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। नाटक मंचन के द्वारा छात्र-छात्राएं मौखिक-अभिव्यक्ति की कई शैलियों को सीखते हैं।

11. **भाषा लैब**—भाषा लैब उपकरणों की सहायता से भाषा सिखाने का एक सक्रिय, स्वप्रयत्नपूर्ण, रोचक तथा उपयोगी आधुनिक शिक्षण अभिकरण है। भाषा लैब में छात्रों को अनुदेश पहले से रिकॉर्ड किए गए भाषण, व्याख्यान द्वारा दिए जाते हैं। छात्र शीर्ष ध्वनि यन्त्रों के माध्यम से भाषा में कहे गए शब्द एवं वाक्य सुनते हैं। पुनः थोड़ी देर के लिए रुका जाता है जिससे छात्र बोलने वाले के शब्दों एवं वाक्यों को दो या तीन बार दोहरा सकें। बाद में सुनाए गए, दिखाए पाठ पर आधारित प्रश्न किए जाते हैं। उस कविता का सौन्दर्य निरूपण करते हैं और इस प्रकार श्रवण एवं वाचन कौशल में दक्षता प्राप्त करते हैं।

12. **मौलिक सामग्री**—मौलिक सामग्री छोटे बच्चों के श्रवण एवं वाचन कौशल में बहुत सहायक होती है, जैसे कि कोई वस्तु दिखाकर उस पर आधारित प्रश्न कर सकते हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से छात्रों के श्रवण कौशल एवं वाचन कौशल दोनों का विकास हो पाएगा। इसके अलावा छात्र मौलिक सामग्री देखकर आनन्दित भी होंगे। इसके अतिरिक्त मौलिक सामग्री के माध्यम से शिक्षक एक संप्रेषणात्मक वातावरण का निर्माण करता है जिसमें कि वह मौलिक सामग्री समस्त संप्रेषण का आधार बनती है। ❐

पठन और लेखन

8 पठन कौशल का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा उसके प्रकारों, तत्वों और विधियों की विवेचना कीजिए।

अथवा

मौखिक या सस्वर पठन कौशल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सामान्यतः लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना अथवा पठन कहा जाता है। जैसे—पम्फलेट पढ़ना, समाचार-पत्र पढ़ना और पुस्तकें पढ़ना। परन्तु भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में पढ़ने का अर्थ होता है—किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भावों एवं विचारों को पढ़कर समझना। अर्थ बोध एवं भाव की प्रतीति पढ़ने के आवश्यक तत्व होते हैं। इस प्रकार जब हम किसी के द्वारा लिखे किसी लेख, कहानी, निबन्ध, नाटक अथवा पद्य को पढ़कर उसका अर्थ एवं भाव ग्रहण करते हैं तो हमारी इस क्रिया को पढ़ना अथवा पठन कहते हैं, यह बात दूसरी है कि हम उसका अर्थ एवं भाव किस सीमा तक समझते और ग्रहण करते हैं।

पठन कौशल के विकास में शिक्षक छात्रों को केवल अक्षर ज्ञान नहीं देता है बल्कि पाठ्य-सामग्री का बोध करना एक महत्वपूर्ण अंग है। बोध पढ़ने वाले को निष्क्रिय से सक्रिय बना देता है। ज्ञान प्राप्त कर छात्र पाठय-सामग्री से अन्तःक्रिया करता है। इसके अतिरिक्त इसका विकास, पठन कार्य प्रभावकारी होता है और छात्र

आनन्द का अनुभव करता है। अर्थ ग्रहण करने से छात्र में नए संप्रत्ययों का निर्माण होता है। उसके शब्द-भण्डार में वृद्धि होती है। छात्र का तार्किक विकास होता है। नए ज्ञान को पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित करने की योग्यता का विकास होता है। पठन का अर्थ केवल लिपि ज्ञान नहीं है, बल्कि पढ़ना एवं संज्ञानपरक प्रक्रिया है अतः इसमें अर्थ ग्रहण या ज्ञान अति आवश्यक है।

पठन की परिभाषा–शिक्षा के क्षेत्र में पठन सीखने का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इससे छात्रों को लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सरलता होती है और अर्थग्रहण की योग्यता विकसित होती है। अर्थ को समझने की योग्यता के बिना लिखित अथवा मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर समझ पाना सम्भव नहीं है। साहित्य के अमृत रस का पान केवल वही पाठक कर सकता है जो मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर अर्थग्रहण की सामर्थ्य रखता है। इसलिए भाषा शिक्षण में पठन का विशेष महत्व है।

- **डिसेण्ट के अनुसार**–"पठन लेखन द्वारा उद्दिष्ट सुलिखित/सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको सम्बन्धित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।"
- **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** के अनुसार–"पठन में पाठक दूसरे व्यक्ति के लिखित भावों एवं विचारों को परिस्थिति एवं प्रसंग के अनुरूप ग्रहण करता है। इस प्रकार लिखित संकेतों या वर्णों का उनसे सम्बद्ध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया 'पठन कौशल' कहलाती है।"

मौखिक पठन कौशल–मौखिक रूप से पढ़ने की दक्षता को पठन कौशल कहते हैं जबकि लिखित रूप को पढ़ना वाचन कौशल कहलाता है। क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार होते हैं–(1) मौखिक पठन या सस्वर वाचन (2) मौन पठन। जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण करके पढ़ते हैं तो वह मौखिक पठन कहलाता है। इसे सस्वर पठन भी कहते हैं। मौखिक पठन के अर्थ को शिक्षा शब्दकोश में स्पष्ट करते हुए लिखा है–"मौखिक पठन उच्च स्तर में पठन की क्रिया है।"

भाषा शिक्षण में प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक पठन का विशेष महत्व है। इससे पढ़ने में बालकों की झिझक दूर हो जाती है। छात्रों का शब्दोच्चारण शुद्ध होता है। पठन के समय वे शब्दों को देखते हैं जिससे उनका अक्षर विन्यास शुद्ध होता है और शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। इसमें बालकों की दृश्येन्द्रियाँ, ध्वनि यंत्र एवं मस्तिष्क तीनों प्रशिक्षित होते हैं। इसके अभ्यास से बालक वाद-विवाद एवं भाषण कला में निपुण हो जाते हैं।

पठन कौशल के उद्देश्य–पठन कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

(1) छात्रों को शुद्धोच्चारण करने में योग्य बनाना।

(2) छात्रों को उचित लय, स्वर, यति से पठन की योग्यता प्रदान करना।

(3) छात्रों को ध्वनियों के उचित आरोह, अवरोह तथा विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर पठन में निपुण बनाना।

(4) छात्रों में मौखिक पठन द्वारा आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता विकसित करना।

सस्वर/मौखिक पठन के प्रकार–मौखिक पठन दो प्रकार का होता है-

1. **व्यक्तिगत पठन**–इसमें शिक्षक अथवा छात्र व्यक्तिगत रूप से पठन करता है।
2. **सामूहिक पठन**–इसमें समस्त कक्षा के विद्यार्थी एक साथ मिलकर समान स्वर, गति और लय से मौखिक पठन करते हैं।

कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन के प्रकार–कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन के तीन प्रकार होते हैं–

(1) आदर्श पठन, (2) अनुपठन, (3) अनुकरण पठन।

1. **आदर्श पठन**–शिक्षक जो आदर्श पाठ छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, वह आदर्श पठन कहलाता है। यह आदर्श पठन व्यक्तिगत होता है। यहाँ पर विशेष ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी गद्य-शिक्षण में आदर्श कथन किया जाता है और हिन्दी कविता-शिक्षण में आदर्श पाठ किया जाता है।

2. **अनुपठन**–भाषा-शिक्षण में अनुपठन का भी महत्व है। यह प्रारम्भिक कक्षाओं में उपयोगी होता है। पठन का अभ्यास कराने के लिए अनुपठन का आश्रय लिया जाता है। प्रारम्भिक स्तर पर छात्र हिन्दी को मौखिक रूप से पढ़ने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिसे अनुपठन द्वारा दूर किया जा सकता है। इसमें शिक्षक गद्यांश/पद्यांश के कुछ अंश का पहले पाठ करता है। तत्पश्चात् उतने ही अंश का छात्र सामूहिक रूप से सस्वर पाठ करते हैं।

3. **अनुकरण पठन**–छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से शिक्षक के आदर्श पठन का अनुकरण करके किए गए पठन को अनुकरण पठन कहते हैं। हिन्दी गद्य-शिक्षण में छात्रों से अनुकरण कथन कराते हैं और हिन्दी कविता-शिक्षण में अनुकरण पाठ कराते हैं।

मौखिक पठन के दोष–महर्षि याज्ञवल्क्य ने मौखिक पठन के 14 दोषों का उल्लेख किया है–शंकित होकर पढ़ना, भयभीत होकर पढ़ना, चिल्लाकर पढ़ना, अस्पष्ट पढ़ना, अनुनासिक पढ़ना, कौवे की तरह कर्कश स्वर में पढ़ना, मूर्धा से पढ़ना, समुचित उच्चारण करके न पढ़ना, स्वरहीन पढ़ना, नीरस ढंग से पढ़ना, मिला-मिलाकर अस्पष्ट पढ़ना, विषम आरोह-अवरोह से पढ़ना, व्याकुलता से पढ़ना तथा तालुहीन की तरह पढ़ना।

उपर्युक्त पठन दोषों के अतिरिक्त महर्षि पाणिनि ने निम्नलिखित छः प्रकार से पठन करने वाले पाठकों को अधम कोटि का बताया है–1. गा-गाकर पढ़ने वाला, 2. अधिक शीघ्रता से पढ़ने वाला, 3. पढ़ते समय सिर हिलाने वाला, 4. चुपचाप पढ़ने वाला, 5. अर्थ को समझे बिना पढ़ने वाला, 6. दबे स्वर में पढ़ने वाला।

मौखिक पठन के तत्व–मौखिक पठन के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं–

1. **उचित आसन एवं मुद्रा**–मौखिक पठन के लिए उचित आसन एवं मुद्रा का होना आवश्यक है। यदि बैठकर पढ़ना हो तो कुर्सी पर सीधा बैठना चाहिए ताकि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और पैर 90° का कोण बनाते हुए लटके रहें। खड़े होकर पठन में बिलकुल सीधा खड़ा होना चाहिए। पुस्तक को बायें हाथ से पकड़ना चाहिए जो 45° का कोण बनाती हुई आँखों से एक फुट की दूरी पर हो। इससे पाठक को शीघ्र थकान नहीं आती है।

2. **माधुर्य**–मौखिक पठन में माधुर्य बहुत ही आवश्यक तत्व है। मधुरता के साथ किया गया मौखिक पठन सुनने वाले को प्रिय लगता है और प्रभावपूर्ण होता है।

3. **वर्णों का स्पष्ट उच्चारण**–मौखिक पठन में वर्णों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए ताकि सुनने वाला शुद्ध-शुद्ध सुन सके।

4. **समुचित पदच्छेद**–मौखिक पठन करते समय पदच्छेद पर समुचित ध्यान देना चाहिए। लम्बे-लम्बे पदों को समुचित सन्धिविच्छेद एवं समास विग्रह द्वारा अलग-अलग कर लेने से मौखिक पठन में सरलता होती है। एक पद बोलने के पश्चात् दूसरा पद बोलने से सभी पद स्पष्ट और पृथक् पृथक् प्रतीत होते हैं।

5. **समुचित स्वर**–मौखिक पठन का प्रमुख तत्व स्वर भी है। अतः स्वर पर समुचित ध्यान देना चाहिए। समुचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ने से मौखिक पठन प्रभावपूर्ण हो जाता है।

6. **धैर्य**–मौखिक पठन में धैर्य भी विशेष महत्व रखता है। धैर्यपूर्वक किया गया मौखिक पठन प्रभावशाली होता है।

7. **उचित लय**–मौखिक पठन में समुचित लय होनी चाहिए। बिना उचित लय के किया गया मौखिक पठन कर्कश प्रतीत होता है।

मौखिक पठन की विधियाँ–मौखिक पठन की विभिन्न विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख विधियाँ हैं–

1. **वर्णमाला या अक्षर ज्ञान विधि**–हिन्दी भाषा शिक्षण में इस विधि का प्रयोग विशेष रूप से होता है। इस विधि में सर्वप्रथम वर्णमाला के स्वर तथा व्यंजन वर्णों का बाद में संयुक्ताक्षरों का ज्ञान छात्रों को कराया जाता

है। वर्णों का समुचित ज्ञान हो जाने पर बालकों को शब्दों के पढ़ने का ज्ञान कराया जाता है, तत्पश्चात् वाक्यों के पढ़ने का। इस प्रकार बालक पढ़ने में निपुण हो जाते हैं।

- **वर्णमाला विधि के गुण**–इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं–
  1. यह विधि वर्णों के ज्ञान एवं उनके उच्चारण शिक्षण के लिए उपयोगी है।
  2. यह विधि समय की दृष्टि से मितव्ययी है।
  3. यह विधि हिन्दी सिखाने के लिए अधिक श्रेयस्कर है क्योंकि हिन्दी वर्णमाला पूर्णत: वैज्ञानिक है। इसके वर्ण एवं ध्वनि एक ही हैं। इसमें कोई भी वर्ण निरर्थक नहीं है। वर्ण का नाम ध्वनि का प्रतीक है।
  4. इस विधि में बालक क्रमानुसार पढ़ना सीखते हैं।
- **वर्णमाला विधि के दोष**–इस विधि के दोष निम्नलिखित हैं–
  1. इस विधि से छात्र वर्ण सीखने में रुचि नहीं लेते हैं क्योंकि वर्ण स्वयं में निरर्थक होते हैं।
  2. यह विधि नीरस है। इस विधि द्वारा शिक्षण में बालक कम रुचि लेते हैं।
  3. मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि जितना समय वर्ण को पहचानने में लगता है उतना ही समय शब्दों को पहचानने में। अत: वर्णों का ज्ञान कराना व्यर्थ प्रतीत होता है।
  4. वर्ण के समझने के उपरान्त शब्द सरल नहीं होता वरन् शब्द समझने के उपरान्त वर्ण को समझना सरल होता है। जैसा प्रो. रामराजा ने लिखा है–"यह धारणा बड़ी भ्रामक है कि बालक वर्ण को सरलता से समझ लेगा और वर्ण को समझने के पश्चात् शब्द समझना सरल होगा।"

2. शब्द विधि–यह विधि सर्वप्रथम योरोप में कामेनियस द्वारा 1648 ई. में अपनी पुस्तक The Orbis Pictus में प्रतिपादित की गई थी और 1846 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका में रसेल वेब द्वारा प्रस्तावित हुई थी। यह पठन शिक्षण की विधि है, जो सम्पूर्ण शब्द से प्रारम्भ होती है, परन्तु इसमें ध्वनियों पर विशेष बल दिया जाता है। इस विधि में बालकों को सर्वप्रथम वर्णों के स्थान पर शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। बालक को शब्दों का पठन पहले सिखाया जाता है। शब्द पठन में कुशल हो जाने पर छात्रों को वाक्य पढ़ना सिखाया जाता है, अन्त में वर्णों के उच्चारण। हिन्दी भाषा-शिक्षण में यह विधि सबसे अधिक उपयोगी है। देखो और कहो विधि, ध्वनि साम्य विधि, अनुध्वनि विधि तथा साहचर्य विधि आदि शब्द विधि की ही प्रकार मात्र हैं। शब्द विधि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए शिक्षा शब्दकोश में लिखा है–"शब्द विधि पठन शिक्षण की विधि हैं, जिसमें प्रथमत: शब्दों को पूर्ण रूप में प्रस्तुत किया जाता है और बाद में खण्डों में विश्लेपित किया जाता है।"

3. वाक्य विधि–सन् 1885 में फर्नहम ने पठन शिक्षण के लिए वाक्य विधि को अपनाने का सुझाव दिया था। उसका मत था कि भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य है, न कि शब्द अथवा वर्ण। इस विधि में सर्वप्रथम बालकों को वाक्य पढ़ना सिखाया जाता है क्योंकि वाक्य ही पूर्ण अर्थ दे सकता है। महर्षि पतंजलि ने पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द समूह को ही वाक्य माना है। अत: पूर्ण अर्थ प्राप्त होने के कारण बालक वाक्यों को ही पढ़ने में विशेष रुचि लेते हैं। इस विधि में बालकों को पहले वाक्य का पढ़ना फिर शब्दों का और अन्त में वर्णों का उच्चारण करना सिखाया जाता है। समवेत पाठ विधि, भाषा-शिक्षण-यन्त्र विधि वाक्य विधि के ही प्रकार मात्र हैं।

निष्कर्ष–उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तीनों ही विधियाँ अपने में परिपूर्ण नहीं हैं। वर्णमाला विधि में वर्णों के पठन से प्रारम्भ किया जाता है, फिर शब्द और अन्त में वाक्य पठन सिखाया जाता है। वाक्य विधि में सबसे पहले वाक्य, फिर शब्द और अन्त में वर्ण। इस प्रकार हम देखते हैं कि शब्द विधि का दोनों में प्रयोग हुआ है। अत: शब्द विधि को ही मौखिक पठन शिक्षण में प्रयोग करना चाहिए तथा वर्णमाला एवं वाक्य विधि को शब्द विधि की पूरक के रूप में यथा स्थान प्रयोग करना चाहिए।

❒

9 **मौन पठन किसे कहते हैं? मौन पठन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उसके तत्वों और प्रकारों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण किए बिना पढ़ा जाता है तो वह मौन पठन कहलाता है। मौन पठन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए शिक्षा शब्दकोश में लिखा है–"मौन पठन श्रवणीय शब्दोच्चारण के बिना गया पठन है।"

मौन पठन का महत्व–हिन्दी-शिक्षण में मौन पठन का अपना विशेष महत्व है। मौखिक पठन का अभ्यास हो जाने पर बालक स्वत: मौन पठन में रुचि लेने लगता है। इस सम्बन्ध में जड्ड (Judd) ने लिखा है–"शिक्षकों को यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि उच्च कक्षाओं में पठन की सबसे अच्छी विधि मौन वाचन ही है। जब कोई बालक चलना सीख लेता है तो वह खिसकना छोड़ देता है। इसी प्रकार जब वह मौनवाचन में सफलता प्राप्त कर लेता है, तो वह सस्वर पठन की आदत छोड़ देता है।" मौन पठन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि मौखिक पठन में समय अधिक लगता है। प्रत्येक अवसर पर मौखिक पठन नहीं किया जा सकता है। मौखिक पठन से अन्य छात्रों की स्वतन्त्रता भंग होती है और उनके कार्यों में बाधा पड़ती है। इस प्रकार मौन पठन अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी है।

मौन पठन के उद्देश्य–

1. छात्रों को पाठ्यवस्तु को शीघ्रता से पढ़ने के सुयोग्य बनाना।
2. पठित अंश में निहित भावों एवं विचारों को आत्मसात् करने की योग्यता प्रदान करना।
3. छात्रों के शब्द, मुहावरा एवं लोकोक्ति भण्डार में वृद्धि करना।
4. छात्रों को पठित अंश के केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने के सुयोग्य बनाना।
5. छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना।
6. स्वस्थ मनोरंजन एवं आनन्दानुभूति के साथ-साथ छात्रों का बौद्धिक विकास करना।
7. छात्रों को हिन्दीतर विषयों को द्रुतगति से पढ़ने एवं उसे आत्मसात कर सकने के सुयोग्य बनाना।
8. छात्रों की हिन्दी-साहित्य के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करना।

मौन पठन के तत्व–मौन पठन के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं-

1. **उचित आसन एवं मुद्रा**–मौन पठन के लिए उचित आसन एवं मुद्रा विशेष आवश्यक है। मौन पठन करते समय पाठक को सीधा बैठना चाहिए, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी सीधी बनी रहे और पैर 90° का कोण बनाते हुए लटके रहने चाहिए। पाठ्य-पुस्तक एक फुट की दूरी पर रहनी चाहिए। मौन पठन में पाठक को मुँह बन्द रखना चाहिए उसके होंठ नहीं हिलने चाहिए। ऐसा न होने से पाठक को शीघ्र थकान आ जाती है और वह मौन पठन में ऊबने लगता है।
2. **परिचित शब्दावली**–मौन पठन में कौशल प्राप्त करने के लिए परिचित शब्दावली का होना आवश्यक है। इससे छात्रों को मौन पठन में सरलता रहती है और विषयवस्तु को आत्मसात् करने में कठिनाई नहीं होती है।
3. **एकाग्रता**–मौन पठन के लिए छात्रों में एकाग्रता का होना आवश्यक है। बिना एकाग्रता के मौन पठन में छात्रों का ध्यान विषयवस्तु पर अधिक समय तक केन्द्रित नहीं रह पाता है। अत: एकाग्र एवं .शान्तचित्त होकर मौन पठन से किसी भाव या विचार को सरलता से हृदयंगम किया जा सकता है।
4. **धैर्य**–मौन पठन में छात्रों से धैर्य धारण करने की अपेक्षा रहती है क्योंकि मौन पठन नीरस होता है तथा लाभ भी प्रत्यक्ष प्रतीत नहीं होता है। अत: दुर्बोध भाव या विचार आ जाने पर छात्र घबरा जाते हैं, धैर्य छोड़ देते हैं और अर्थ-बोध हेतु प्रयास नहीं करते हैं।

5. **अर्थ बोध**–मौन पठन में अर्थ-बोध का भी महत्व है। बिना अर्थ-बोध के मौन पठन निरर्थक होता है। अत: सामान्य गति से मौन पठन करते हुए अर्थ-बोध हेतु प्रयास करना चाहिए।
6. **शान्त वातावरण**–मौन पठन के लिए कक्षा या स्थल का वातावरण पूर्ण शान्त होना चाहिए। शान्त वातावरण में छात्रों का ध्यान विषयवस्तु पर केन्द्रित बना रहता है। उनके पठन में कोई बाधा नहीं पड़ती है। इससे वे अधिक समय तक मौन पठन कर सकते हैं।

मौन पठन के प्रकार–उद्देश्य के आधार पर मौन पठन के दो प्रकार हैं–1. गहन पठन और 2. विस्तृत पठन या द्रुत पठन।

1. गहन पठन–गहन पठन का शाब्दिक अर्थ है-गहनता से पढ़ना। पाठ्य सामग्री का एक निश्चित/सीमित मात्रा में पठन गहन पठन कहलाता है। शिक्षा शब्दकोश में गहन पठन के विषय में लिखा है–"गहन पठन अभिव्यक्ति की प्रक्रिया, अर्थ, व्याकरण का विशद् विवरण आदि के लिए ध्यान युक्त सचेत पठन है।" इसमें छात्र वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों तक ही अलग ध्यान केन्द्रित नहीं करते हैं। वरन् पठित समग्र सामग्री का समीक्षात्मक पठन करते हैं। इसलिए इसे समीक्षात्मक पठन भी कहा जाता है। इस प्रकार गहन पठन छात्रों में लिखित अथवा मुद्रित सामग्री को शुद्धता से पढ़ने एवं पूर्ण अवबोध के कौशल का विकास करने से सम्बन्धित है।

- **गहन पठन की प्रक्रिया**–इसमें हिन्दी-शिक्षक सर्वप्रथम कक्षास्तर के अनुरूप सहायक पुस्तक अथवा पाठ्य-पुस्तक से गहन पठन हेतु पाठ्य सामग्री का चयन करता है। गहन पठन हेतु प्रस्तावित गद्य पाठ अधिक विस्तृत नहीं होना चाहिए। प्रारम्भ में एक पृष्ठ ही गहन पठन के लिए पर्याप्त होता है। छोटे पाठ में निहित विचार को समझना सरल होता है। यदि पाठ बड़ा हो, तो उसे अर्थपूर्ण एवं स्वत: पूर्ण अन्वितियों में विभक्त कर लेना चाहिए। प्रस्तावित पाठ का कक्षा में पठन कराने के उपरान्त शिक्षक छात्रों को पठित पाठ्य सामग्री से सम्बन्धित प्रश्न देता है, जिनके उत्तर छात्र घर पर पाठ्य सामग्री को पुन: पढ़कर लिखते हैं। दूसरे दिन कक्षा में शिक्षक उन पर छात्रों से चर्चा करता है। इससे छात्र पाठ्य सामग्री को दत्तचित्त होकर पढ़ते हैं और उसका अर्थग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

2. विस्तृत पठन–विस्तृत पठन का शाब्दिक अर्थ है–विस्तृत रूप से पढ़ना। विषयवस्तु को आत्मसात् करते हुए तेजगति से अधिक पाठ्य सामग्री/पृष्ठों को व्याप्त करके पठन करना विस्तृत पठन कहलाता है। विस्तृत पठन में छात्रों के पठन की गति अधिक तेज होती है। इसीलिए इसे द्रुत (रेपिड रीडिंग) भी कहते हैं। शिक्षा-शब्दकोश में विस्तृत पठन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है–विस्तृत पठन अभिव्यक्ति की प्रक्रिया अथवा विशद् विवरण की अपेक्षा मुख्य विचार के लिए द्रुत हुए लिखा पठन है।"

- **विस्तृत पठन की प्रक्रिया**–इसमें हिन्दी-शिक्षक सर्वप्रथम सहायक पुस्तक अथवा पाठ्य-पुस्तक से प्रमुख व्यक्तियों की आत्मकथाओं, जीवनियों, रोचक एवं शिक्षाप्रद कहानियों, गाथाओं, नाटक, एकांकी, वार्तालाप, विवरणात्मक एवं वर्णनात्मक लेख आदि से विस्तृत पठन हेतु पाठ का चयन करता है। चयनित पाठ के कठिन शब्दों एवं वाक्यांशों के अर्थ स्पष्ट कर देता है। तदुपरान्त छात्रों को प्रस्तावित पाठ का विस्तृत द्रुत पठन करने का निर्देश देता है। छात्र शिक्षक की सहायता के बिना विस्तृत मौन पठन करते हैं। पठन की समाप्ति पर शिक्षक छात्रों से पठित विषयवस्तु पर प्रश्न पूछता है। यह जाँच हो जाती है कि छात्रों ने पाठ्य सामग्री का दत्तचित्त होकर विस्तृत द्रुत पठन किया है और पाठ्य सामग्री का मुख्य विचार समझ लिया है।

❐

10 लेखन कौशल से आप क्या समझते हैं? लेखन कौशल के महत्व का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–लेखन-कौशल का अर्थ है–भाषा-विशेष में स्वीकृत लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता। अधिकांशत: सभी भाषाओं की अपनी लिपि-व्यवस्था होती है। इन लिपि-प्रतीकों

को वे ही समझ सकते है, जिन्हें उस भाषा लिपि-व्यवस्था का ज्ञान हो। इससे आशय यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते है जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की अच्छा ज्ञान हो।

स्पष्ट है कि लेखन लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। केवल वर्णो की रचना अथवा शब्दों के अनुलेखन को लेखन नहीं कहा जा सकता। लेखन-व्यवस्था के विभिन्न घटकों से परिचित होना तथा लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करना लेखन के आवश्यक अंग है। यही कारण है कि चित्रकार, पेण्टर तथा टंकित करने वालों को लेखन का ज्ञाता नही माना जा सकता। लेखन-कुशलता के लिए भाषा विशेष तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की पर्याप्त जानकारी जरूरी है।

- **रॉबर्ट लैडो के अनुसार**–"अन्य भाषा में लेखन-कौशल सीखने से आशय लेखन-व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपि-बद्ध करना है जिन्हें लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चरित रूप से प्रयुक्त किया हो अथवा दोहराया हो।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि अन्य भाषा में लेखन-कौशल सिखाने का अर्थ छात्र को उस भाषा की लेखन-व्यवस्था से परिचित कराना है। इसमें भाषा की लिपि-व्यवस्था तथा उसकी विशिष्टताओं की जानकारी के साथ-साथ उस भाषा का पर्याप्त ज्ञान जरूरी है तभी लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति संभव है। प्रत्येक भाषा की अपनी परम्परागत लेखन-व्यवस्था होती है, इसमें वैयक्तिक अभिरूचि के अनुसार परिवर्तन नही किया जा सकता। अत: भाषा की अन्य विशिष्टताओं के साथ लिपि-प्रतीकों की रचना की योग्यता लेखन-कौशल की प्रमुख विशेषता है।

लेखन को भाषा का गौण कौशल एवं विचारों की आंशिक अभिव्यक्ति माना जाता है, भाषा का उच्चरित रूप ही वस्तुत: पूर्ण माना जाता है। प्रत्येक भाषा की लेखन-व्यवस्था अलग होती है, यही कारण है कि दो भाषाओं में समान लिपि-प्रतीकों का प्रयोग होने पर भी उनका मूल्य दोनों भाषाओं में अलग होता है। मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन सीखने के लिए भाषा में प्रयुक्त लिपि-प्रतीकों के आन्तरिक मूल्यों से परिचित होना जरूरी है। इन मूल्यों से परिचित होने के साथ-साथ लेखन की कुशलता प्राप्त करना भी आवश्यक है। लेखन की कुशलता अभ्यास-जनित है। अभ्यास को आदत के रूप में परिणत करने पर ही लिपि-व्यवस्था पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। लेखन-व्यवस्था का सतत अभ्यास करने तथा सजग रूप में उसका प्रयोग करने पर वह व्यवहार का सहज अंग बन जाती है, आदत के रूप में परिणत हो जाती है। इसके आधार पर ही लेखन-कौशल का विकास संभव है। अत: छात्र में इस प्रकार की अभ्यास-जनित कुशलता उत्पन्न करना मातृभाषा तथा अन्य भाषा-शिक्षण का विशिष्ट उद्देश्य है।

लेखन कौशल का महत्व–भाषा-शिक्षण में, विशेषकर अन्य भाषा-शिक्षण में लेखन-कौशल का विशेष महत्व है। लेखन-कौशल के महत्व का अनुमान निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर लगाया जा सकता है--

1. **सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण**–भाषा के लिपिबद्ध प्रतीकों का मानव-सभ्यता के विकास में विशेष योगदान रहा है। इसके माध्यम से मानव-जाति की मान्यताएँ लिखित सामग्री के रूप में सुरक्षित रहती है और क्रमश: एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संक्रमित होती है। मानव अपने पूर्वजों के जीवन, उनके आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों से लिपिबद्ध सामग्री के माध्यम से ही भली-भाँति परिचित होता है। उसके विकास की दिशाएँ इसके द्वारा ही प्रशस्त होती है।
2. **विचारों का आदान-प्रदान**–अन्य भाषा में लेखन-कौशल के विकास द्वारा अन्य भाषा-भाषी जन समुदाय के साथ विचारों का आदान-प्रदान संभव होता है। इसके माध्यम से वह व्यापक क्षेत्र में अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषत करने में समर्थ होता है। लेखन के अभाव में विचारों की अभिव्यक्ति संभव नही है।

3. **ज्ञान क्षेत्र का विस्तार**–लेखन-कौशल के माध्यम से छात्र का ज्ञान क्षेत्र विस्तृत होता है। वह विविध प्रकार की सामग्री एवं विविध विषयों के संबंध में न केवल लेखन के आधार पर जानकारी प्राप्त करता है बल्कि अपने भावों तथा विचारों को भी लिपिबद्ध करने की योग्यता अर्जित करता है। ज्ञानात्मक तथा भावात्मक सामग्री का गहन अध्ययन तथा तत्संबंधी विचारों की स्थायी अभिव्यक्ति की कुशलता लेखन के माध्यम से ही संभव है।

4. **भाव-प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम**–मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन-कौशल का विकास भाव-प्रकाशन के स्थायी एवं व्यापक रूप पर अधिकार प्राप्त करने का साधन है। लेखन भाव-प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम तथा भाषा सीखने का चरम सोपान है। इस कुशलता के विकास द्वारा अन्य भाषा के छात्र को अपने भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का एक सबल साधन उपलब्ध होता है। वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा मनोरंजन के उद्देश्य से लेखन-कौशल का उपयोग कर सकता है। लेखन पर अधिकार प्राप्त करने से छात्र में न केवल आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न होता है बल्कि रचनात्मक कुशलता का भाव भी जाग्रत होता है। भाषायी उपलब्धि की यह चेतना आगे चलकर ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न दिशाओं मे प्रेरणा का स्रोत बनती है।

5. **साहित्यिक सृजन का मूल आधार**–लेखन-कौशल साहित्यिक सृजन का मूल आधार है। लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की शाश्वत अभिव्यक्ति साहित्य का रूप ग्रहण करती है। यद्यपि भाषा के मौखिक रूप द्वारा भी साहित्य-सृजन होता है परन्तु वह अत्यन्त सीमित और देश-काल से नियन्त्रित होता है। व्यापक धरातल पर साहित्य की अभिव्यक्ति को स्थायित्व प्रदान करने का गौरव लेखन-कौशल को ही प्राप्त है।

6. **संस्कृति की जानकारी**–लेखन-कौशल का महत्व इस दृष्टि से भी स्वत: स्पष्ट है कि प्रत्येक लेखन-व्यवस्था के साथ उसकी संस्कृति भी सम्बद्ध रहती है। लेखन के माध्यम से सम्बद्ध संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन और संक्रमण होता है। लेखन-कौशल से परिचित होने के साथ ही छात्र भाषायी संस्कृति से भी परिचित होता है। इस प्रकार अन्य भाषा का अध्येता लेखन-कौशल के माध्यम से ही भाषा में निहित संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है। लेखन-कौशल की महत्ता इस दृष्टि से स्वत: स्पष्ट है।

अत: किसी समाज की संस्कृति से अवगत होने के लिए उस मानव समुदाय की भाषा को पढ़ना और लिखना सीखना अत्यन्त जरूरी है। लेखन के माध्यम से लेखक पाठकों तक अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित कर सकता है। इतना ही नही, अपने उच्चतम रूप में यह सर्जनात्मक लेखन का भी एकमात्र माध्यम है। लेखन के माध्यम से ही वह अपने विचारों तथा भावों को साहित्यिक रचना के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित कर सकता है।

निष्कर्ष–वस्तुत: लेखन-कौशल का शिक्षण भाषायी कौशलों में विशेष महत्व रखता है। इसका कारण यह है कि वार्तालाप तथा वाचन की तुलना में लेखन एक जटिल कौशल है। इसमें शैलीगत तत्व वार्तालाप की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। वार्तालाप में विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति वक्ता की भाव-भंगिमा, अनुतान-साँचे तथा विवृति द्वारा अधिक स्पष्ट होती है। परन्तु लेखन में भाषा के चयनित प्रयोग के साथ सी साथ शैलीगत विशेषताएँ भी अपेक्षित हैं; भाषा की संरचना और शब्द-भण्डार पर पर्याप्त अधिकार भी आवश्यक होता है। अत: लेखन-कौशल को विविध कुशलताओं का समन्वित रूप माना जा सकता है।

❒

11 भाषायी दक्षता के लेखन कौशल के उद्देश्यों और विधियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–विद्यार्थियों को पहले पढ़ना सिखाना चाहिए या लिखना, यह विवादास्पद विषय है। मारिया मॉण्टेसरी के मतानुसार, बालक को पढ़ने से पहले लिखना सिखाना जरूरी है। अपने मत के पक्ष में उन्होंने तर्क दिए हैं कि पढ़ने की क्रिया अपेक्षाकृत कठिन हैं, लिखने में केवल शारीरिक कौशल की ही जरूरत होती हैं, जबकि पढ़ने में मन व शरीर की अनेक जटिलताओं का सामना करना पड़ता हैं। अभी तक इस पर मतभेद हैं। मॉण्टेसरी के आलोचकों के मतानुसार पढ़ना ही पहले सिखाया जाना चाहिए और लिखना पढ़ने के बाद। वास्तव में माध्यम मार्ग ही सही हैं। दोनों क्रियाएँ साथ-साथ कराने से कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों में सामन्जस्य स्थापित होता है। पढ़ना सिखाने और लिखना सिखाने की विधि में सामन्जस्य होना चाहिए। लिखना सिखाने की प्रणाली भी पढ़ना सिखाने के ही अनुरूप होगी।

लेखन कौशल के उद्देश्य–लेखन कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. विद्यार्थियों को लेखन कला का पूर्ण परिचय देना ताकि वे अपने भावों, विचारों एवं अनुभवों को मूर्त रूप दे सकें एवं दूसरों के भावों को लिपिबद्ध कर सकें।
2. विद्यार्थियों को सुन्दर, सुडौल तथा स्पष्ट लेख की शिक्षा देना।
3. विद्यार्थियों के शब्दकोश को सक्रिय रूप देना।
4. मातृभाषा या हिन्दी अक्षरों का वास्तविक स्वरूप चित्रित कर सकने की क्षमता का विकास करना।
5. विद्यार्थियों को लिखने का इतना अभ्यास कराना कि वे यन्त्रवत् गति के साथ धारा प्रवाह रूप से लिख सकें।
6. विभिन्न विराम चिह्नों का उचित प्रयोग सिखाना।
7. विद्यार्थियों को अपने विचारों तथा अनुभवों को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने का अभ्यास कराना।

लेखन कौशल की विधियाँ–वर्णो को लिखना सिखाने की अनेक विधियां हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित हैं––

1. अनुकरण विधि–इस विधि के माध्यम से सामान्यत: विद्यालय में लिखना सिखाया जाता हैं। इस विधि में शिक्षक स्लेट पर या श्यामपट्ट पर वर्ण लिख देते है और उसका अनुकरण करके छात्र स्वयं वैसे ही वर्ण लिख लेते हैं। इस प्रकार से विद्यार्थी शिक्षक के हाथ के परिचालन को देखकर या उसका अनुकरण करते हुए वैसे ही अपनी स्लेटों पर नकल कर लेते हैं।

2. पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि–इस विधि के द्वारा तीन बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना बहुत जरूरी हैं, इस विधि की पहली विचारणीय बात यह हैं कि प्रत्येक वर्ण को निम्न आकृतियों के संयोग से बनने के कारण छोटे-छोटे भाग में पृथक्करण करना, खड़ी, टेढ़ी और आड़ी लकीर, वृत्त, अर्द्धवृत्त, उल्टा अर्द्धवृत्त इत्यादि। इस विधि की दूसरी विचारणीय बात यह हैं कि कठिनाइयों के क्रमानुसार वर्णो का वर्गीकरण होना चाहिए। उदाहरणार्थ, हिंदी में इनका कार्यान्वयन इस प्रकार किया जा सकता है ग, म, न, भ, झ, र, ण, स, ए, ऐ आदि। इस विधि की तीसरी विचारणीय बात इस विधि के अनुसार यह है कि विभिन्न आकृतियों का वर्ण बनाने के लिए एकीकरण करना। अत: इस प्रकार से रचनात्मक विधि तीन क्रियाओं पर आधारित हैं– पृथक्करण, वर्गीकरण और एकीकरण।

3. मॉण्टेसरी विधि–लिखना सिखाने की विधि मॉण्टेसरी की एक मौलिक देन है। लिखना सिखाने के लिए बालक को लकड़ी अथवा गत्ते से बने अक्षरों पर अंगुली फेरने को कहा जाता हैं। जब बालक की अंगुलियाँ गत्ते से बने अक्षरों पर जम/सध जाती हैं तब वह अक्षर लिखना सरलता-पूर्वक सीख जाता हैं। गत्ते के एक बड़े तख्ते पर वर्ण की आकृतियाँ बनाकर शिक्षक दे देता हैं। बालक शिक्षक की सहायता से उन्हें काट लेंगे, अब गत्ते में कटी हुई आकृतियाँ रह जाएंगी अत: नीचे कागज रखकर खाली कटे हुए स्थानों पर पेंसिल चलाने से नीचे के कागज पर वर्ण बन भी जाएंगे और वर्ण लिखने के लिए हाथ के परिचालन का अभ्यास भी बालक को हो जाएगा। यह एक रोचक विधि हैं। लिखना सिखाने की यह पद्धति वास्तव में प्रशंसनीय विधि हैं।

4. जैकॉटॉट विधि–जैकॉटॉट विधि के माध्यम से लिखना सिखाने के लिए बालक को पठित वाक्य लिखकर दे दिया जाता है। जब एक शब्द बालक लिख लेता है तो स्वयं ही उसे शिक्षक द्वारा लिखी हुई मूल प्रति से मिला लेता है और अपनी अशुद्धि का सुधार स्वयं करता हैं। जब इसी प्रकार पूरा वाक्य लिख चुका होता है तो फिर उसे स्मृति के आधार पर पूरा वाक्य लिखने को कहा जाता हैं और मूल प्रति की सहायता से अंत में अपनी अशुद्धि का सुधार वह स्वयं करता हैं।

5. विश्लेषण विधि–विश्लेषण विधि में लेखन शिक्षण शब्द, वाक्य एवं वाक्य, शब्द इन दो क्रमों में चल सकता है। दोनों क्रमों को रोचक बनाने के लिए चित्रों की सहायता भी ली जा सकती है। इन चारों विधियों को क्रमशः शब्द विधि, वाक्य विधि, चित्र-शब्द विधि तथा वाक्य-चित्र विधि कहा जाता हैं। विश्लेषण विधि वाचन शिक्षण की दृष्टि से अधिक उपयोगी हैं लेकिन लेखन शिक्षण हेतु अधिक उपयोगी नहीं हैं क्योंकि लिखने में अक्षर विशेष पर ध्यान करना पड़ता हैं। संपूर्ण वाक्य का आकार विद्यार्थियों की दृष्टि परिधि से बाहर हो जाता हैं। लेखन शिक्षण की दृष्टि से ये विधि कठिन हैं।

6. संश्लेषण विधि–संश्लेषण विधि के अंतर्गत पहले वर्ण, फिर शब्द और अंत में वाक्य लिखना सिखाया जाता हैं। वर्णमाला से परिचित कराने के बाद वर्णों से मिलकर बनने वाले शब्दों को लिखना सिखाया जाता है इसलिए इसे संश्लेषण विधि कहते हैं। इसे वर्ण, शब्द, वाक्य विधि भी कहा जाता हैं। वर्ण तीन प्रकार से प्रस्तुत किए जा सकते हैं। वर्णमाला विधि द्वारा निश्चित क्रम के अनुसार (अ, आ, इ, ई) एक सी आकृति वाले वर्ण एक साथ (समूह विधि द्वारा) जैसे–अ, आ, ओ, औ, अं, अः, चित्राक्षर विधि द्वारा जिस वस्तु का नाम उस वर्ण से आरंभ होता हैं उसके चित्र के साथ संबंध स्थापित करते हुए संश्लेषित करता हैं (अ से अमरूद, आ से आम चित्र सहित)। हमारी वर्तमान पाठ्य-पुस्तकें चित्राक्षर विधि द्वारा लिखी गई हैं। चित्राक्षर विधि सबसे अधिक रोचक है। यह वर्ण का संबंध सार्थक वस्तु के साथ जोड़कर वर्ण को भी सार्थक बना देती हैं। लेखन शिक्षण प्रारंभ करने की दृष्टि से संश्लेषण विधि सर्वश्रेष्ठ विधि है।

7. मनोवैज्ञानिक प्रणाली–लिखना सिखाने के लिए मनोवैज्ञानिक विधि का विशेष महत्व हैं। मनोवैज्ञानिक विधि में वर्णमाला के अक्षर तथा शब्द आदि सिखाने की अपेक्षा पूरा वाक्य बोलना तथा लिखना सिखाया जाता हैं। बालक जब पूरे वाक्य बोलने लगते हैं एवं उनकी कर्मेन्द्रियाँ तथा ज्ञानेन्द्रियाँ मजबूत हो जाएँ, तो उन्हें पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करना चाहिए।

2 भाषायी दक्षता की निर्माण प्रक्रिया

निबंधात्मक प्रश्न

भाषिक संरचना की समझ और विकास

1 भाषा का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा भाषा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

भाषा की परिभाषा देते हुए इसके अभिलक्षणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भाषा शब्द संस्कृत की भाष् धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका कोशीय अर्थ है–कहना या प्रकट करना। अत: भाषा को मनुष्य के भावों या विचारों को प्रकट करने का साधन कहा जा सकता है।

भाषा की परिभाषा–भाषा विचाराभिव्यक्ति का माध्यम है। हम जिस माध्यम से बोलकर या लिखकर विचार प्रकट करते हैं, उसे भाषा कहते हैं। प्रमुख भारतीय विद्वानों ने भाषा को इस प्रकार पारिभाषित किया है-

1. **पतंजलि के अनुसार**–"वर्णों में व्यक्त वाणी को भाषा कहते है।"
2. **कामता प्रसाद गुरू के अनुसार**–"भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचारों को स्पष्टत: समझ सकता है।"
3. **किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार**–"विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द समूह ही भाषा है।"
4. **डॉ. भोलानाथ तिवारी लिखते हैं**– "भाषा, उच्चारण अवयवों से उच्चरित, यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान प्रदान करते हैं।"

इन परिभाषाओं के आधार पर भाषा के स्वरूप को निम्नलिखित सूत्रों में निबद्ध किया जा सकता है-

(क) भाषा उच्चरित ध्वनि संकेतों की व्यवस्था है।

(ख) ध्वनि संकेत यादृच्छिक होते हैं।

(ग) भाषा एक व्यवस्था है।

(घ) भाषा संप्रेषण का सहज माध्यम है।

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ–भाषा विचाराभिव्यक्ति का माध्यम है। जब हम भाषा का संदर्भ मानवीय भाषा से लेते हैं तो यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मानवीय भाषा की मूलभूत विशेषताएँ या अभिलक्षण कौन-कौन से हैं? ये अभिलक्षण ही मानवीय भाषा को अन्य भाषिक संदर्भों से पृथक करते हैं। भाषा मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. भाषा सामाजिक वस्तु है–भाषा की परिभाषा में कहा गया है कि भाषा विचार विनिमय का माध्यम है। इसके द्वारा ही किसी समाज के लोग विचारों का आदान प्रदान करते हैं। भाषा के लिए दो पक्ष जरूरी हैं,

वक्ता और श्रोता। जैसे ही व्यक्ति एक से दो होते हैं, समाज के निर्माण की शुरूआत हो जाती है। यहीं से भाषा की सामाजिकता शुरू होती है।

भाषा का जन्म समाज में होता है और समाज में ही वह विकसित होती है। बिना समाज के भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यदि किसी बालक को जन्म के तत्काल बाद जंगल में छोड़ दिया जाए, तो वह भाषा का एक भी शब्द नहीं सीख पाएगा और न ही उसे भाषा की जरूरत महसूस होगी।

2. भाषा पैतृक या आनुवांशिक सम्पत्ति नहीं है–भाषा, ऊपरी तौर पर, मनुष्य की जन्मजात सम्पत्ति है। बच्चा परिवार में रहकर कब भाषा सीख जाता है, इसका पता ही नहीं चलता। सामान्यतः तीन साल का बच्चा उतनी भाषा जानता है, जितनी व्यवहार के लिए आवश्यक होती है। वह बड़ा होता जाता है और उसकी भाषा का क्षेत्र भी उसी अनुपात में बढ़ता जाता है। भाषा सीखने के लिए उसे कभी कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। भाषा की यह अर्जन प्रक्रिया माँ की गोद से प्रारंभ होती है। इसीलिए हम स्वभाषा को 'मातृभाषा' कहते हैं। परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि भाषा हमें माँ के दूध के साथ सहज मिल जाती है। यदि ऐसा होता तो भाषा सीखने की आवश्यकता ही न होती। स्पष्ट है कि भाषा पैतृक या एक आनुवंशिक संपत्ति नहीं है।

3. भाषा अर्जित वस्तु है–ऊपर के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भाषा हम माँ के पेट से सीखकर नहीं आते। वह हमें अर्जित करनी पड़ती है। बच्चा अधिकतर भाषा व्यवहार से सीखता है। भारतीय काव्यशास्त्र में इस अर्जन प्रक्रिया का एक सुंदर उदाहरण मिलता है। एक बच्चे ने देखा कि एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा 'गाय लाओ'। दूसरा व्यक्ति गया और कुछ समय बाद एक पशु के साथ लौटा। कुछ समय बाद उस व्यक्ति ने दूसरे से कहा 'घोड़ा लाओ'। दूसरा व्यक्ति फिर गया और एक अन्य पशु के साथ वापस आया। बालक ने इस व्यवहार से तीन शब्द सीखे–गाय, घोड़ा, और लाओ। वस्तुतः बच्चा अधिकतर भाषा इसी प्रकार सीखता है।

4. भाषा परम्परागत वस्तु है–भाषा एक सनातन वस्तु है, जो हमें परंपरा से प्राप्त होती है। हम अपने परिवार में जो भाषा बोलते हैं, वह हमें अपने माता-पिता से मिलती है, माता-पिता को दादा-दादी से और उन्हें अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से। यह प्रवाह अनादिकाल से इसी प्रकार चला आ रहा है। समय के साथ भाषा बदलती रहती है, परंतु उसका प्रवाह कभी खंडित नहीं होता। यदि हम किसी नई भाषा का निर्माण करना चाहें तो नहीं कर सकते।

5. भाषा नित्य परिवर्तनशील है–भाषा निरंतर बदलती रहती है। यह परिवर्तन ध्वनि, रूपरचना, वाक्यविन्यास और अर्थ सभी क्षेत्रों में होता है। ध्वनि परिवर्तन के कारण संस्कृत के हस्त, कर्ण, अक्षि आदि शब्द हाथ, कान और आँख हो गए। उधर अर्थपरिवर्तन के चलते 'असुर' देवता से राक्षस बन गए। भाषा की परिवर्तनशीलता केवल समय तक ही सीमित नहीं है। स्थान के साथ-साथ भी उसका स्वरूप बदलता है। इसीलिए एक कहावत है कि 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी।'

6. भाषा व्याकरण द्वारा नियंत्रित होती है–ऊपर कहा गया है कि भाषा नित्य परिवर्तनील है। परंतु व्याकरण इस परिवर्तन को नियंत्रित रखता है। अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण भाषा परिवर्तन चाहती है, और व्याकरण उसे स्थिर रखना चाहता है। एक विद्वान ने कहा है कि व्याकरण भाषा का पुलिसमैन है। भाषा एक व्यवस्था है। यदि उसे अनुशासन में नहीं रखा जाएगा तो भाषिक अराजकता छा जाएगी और परिवर्तन की गति इतनी तेज हो जाएगी कि एक पीढ़ी की भाषा दूसरी पीढ़ी के लिए दुर्बोध हो जाएगी। इसलिए भाषा के मानकीकरण और स्थिरीकरण की आवश्यकता होती है।

7. भाषा कठिनता से सरलता की ओर जाती है–प्रयत्नलाघव मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है, जो भाषा के विकास पर भी लागू होती है। संस्कृत के संयुक्ताक्षर पालि और प्राकृत में द्वित्ताक्षरों में परिवर्तित हो गए और बाद में द्वित्व भी समाप्त हो गया। कर्म→कम्म →काम, अक्षि→अक्खि →आँख आदि शब्दों का विकास क्रम इसका प्रमाण है।

8. भाषा भाव-सम्प्रेषण का साधन है—भाषा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को दूसरे तक पहुंचाता है। विविध संकेतों और आंगिक साधनों के द्वारा अपना अभिप्राय स्पष्ट रूप से श्रोता तक नहीं पहुंचाया जा सकता है। इसलिए भाषा के द्वारा बोलकर या लिखकर विचार प्रकट करना सहज और प्रभावी है। ❐

2 भाषा से आप क्या समझते हैं? भाषा के स्वरूप या प्रकृति की विवेचना कीजिए।

उत्तर—भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भावों या विचारों को दूसरों पर प्रकट करते हैं और दूसरों के भावों अथवा विचारों को समझते हैं। अर्थात् विचार-विनिमय के साधन को भाषा कहते हैं। मनुष्य अपने भाव या विचार तीन प्रकार से प्रकट करता है—1. बोलकर, 2. लिखकर और 3. संकेतों के द्वारा।

1. **मौखिक**—जब वक्ता बोलकर अपने विचारों को व्यक्त करता है और श्रोता उसे कानों से सुनकर समझता है तो भाषा का यह रूप मौखिक कहलाता है। जैसे—भाषण देना, वार्तालाप के द्वारा विचार प्रकट करना।
2. **लिखित**—विचारों और भावों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। जैसे—पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख द्वारा विचार प्रकट करना आदि लिखित भाषा के अन्तर्गत आते हैं।
3. **सांकेतिक**—जब हम अपने भाव या विचार संकेतों द्वारा प्रकट करते हैं, उसे भाषा का सांकेतिक रूप कहते हैं। जैसे—सिर हिलाना, झण्डी दिखाना, बुलाने या नहीं बुलाने के लिए हाथ का संकेत करना तथा आँखों ही आँखों में बातें करना।

मनुष्य अपने भावों, विचारों एवं अनुभूतियों को भली-भाँति केवल ध्वनि संकेतों के माध्यम से ही प्रकट कर सकता है। अत: मनुष्य के ध्वनि-अवयवों से नि:सृत ध्वनियाँ ही भाषा के अन्तर्गत आती हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ध्वनियाँ सार्थक होनी चाहिए जिससे उनका विश्लेषण और अध्ययन हो सके। निरर्थक ध्वनियाँ भाषा के अन्तर्गत नहीं आतीं।

भाषा की प्रकृति—"भाषा यादृच्छिक मौखिक प्रतीकों की व्यवस्था है जिसके द्वारा उस भाषायी समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान-प्रदान एवं सहयोग करते हैं।" इस परिभाषा में भाषा सम्बन्धी पाँच बातें आती हैं—

1. भाषा एक व्यवस्था है।
2. भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है।
3. ये प्रतीक मौखिक अथवा वाचिक है।
4. ये प्रतीक यादृच्छिक है।
5. भाषा परस्पर विचार विनिमय एवं सामाजिक क्रियाकलाप का साधन है।

इन पाँच बातों में प्रथम चार का सम्बन्ध भाषा की रचना एवं उसमें शामिल तत्वों से है और पाँचवीं बात का सम्बन्ध भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता एवं उसके महत्व से है।

1. भाषा एक व्यवस्था है—किसी भी भाषा के स्वरूप पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि भाषा एक व्यवस्था है, वह एक संगठन है। भाषा का मूल तत्व ध्वनि या वर्ण हैं। प्रत्येक भाषा में कुछ मूल ध्वनियाँ मान्य हैं। उनकी एक मान्य व्यवस्था है, जैसे—स्वर, व्यंजन, संयुक्त स्वर और व्यंजन, ध्वनियों के उच्चरित एवं लिखित रूप आदि। वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। सार्थक शब्दों के क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भाषा विभिन्न शब्दों या पदों का क्रमबद्ध रूप है। ध्वनि, शब्द, पद और पदबंध, वाक्यांश, वाक्य और अनुच्छेद इन स्तरों पर भाषा की संरचना फैली रहती है।

2. **भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है**–शब्दों से भाषा का निर्माण होता है और ये शब्द किसी पदार्थ, भाव, विचार, अनुभूति आदि के ध्वन्यात्मक संकेत या प्रतीक हैं। हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु या विचार को प्रकट करने के लिए उनके प्रतीक रूप से शब्द का प्रयोग किया जाता है। ये प्रतीक किसी न किसी वस्तु के नामकरण ही तो हैं जिनके माध्यम से एक व्यक्ति अपने भाव को दूसरे व्यक्ति में संचारित करके प्रतिक्रिया उत्पन्न करने में समर्थ होता है। अत: भाषा को प्रतीकों की व्यवस्था कहा गया है।

3. **प्रतीक मौखिक अथवा वाचिक हैं**–जिन प्रतीकों से भाषा का निर्माण होता है, मूलत: वे मौखिक प्रतीक हैं। ये प्रतीक मनुष्य के मुख से निकले ध्वनि-समूहों से निर्मित होते हैं। ये ध्वनियाँ श्रव्य होते हुए भी भाषा के अन्तर्गत नहीं मानी जाती। इसी प्रकार स्वरिक ध्वनियाँ जैसे कराहना, रुदन-क्रंदन, हर्ष-विस्मय आदि का भी कोई प्रतीकात्मक मूल्य नहीं है क्योंकि वे स्वयं से बाहर किसी वस्तु या विचार के प्रतीक नहीं। भाषा के लिखित रूप मौखिक प्रतीकों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: भाषा का उच्चरित या मौखिक रूप ही उसका मूल रूप है।

4. **भाषायी प्रतीक यादृच्छिक हैं**–भाषा में प्रयुक्त शब्द सार्थक तो होते हैं पर उनसे बोधित वस्तु, भाव या विचार का अर्थ से कोई सहजात या ईश्वरीय सम्बन्ध नहीं होता। यह सम्बन्ध यादृच्छिक या माना हुआ होता है। शब्द और अर्थ में कोई तर्क संगत सम्बन्ध नहीं है। पर यह सही है कि शब्द और अर्थ का सम्बन्ध तर्क और विवेक पर आधारित न होने पर भी प्रयोग, व्यवहार एवं दीर्घकालीन प्रचलन के कारण इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि वह सहजात या स्वाभाविक लगने लगता है। वस्तुत: भाषा के प्रतीक या ध्वनि संकेत रूढ़ अर्थ विशेष में प्रसिद्ध होते हैं। यदि ये प्रतीक (शब्द) किसी विशिष्ट अर्थ के लिए माने हुए अथवा यादृच्छिक नहीं होते तो संसार की सभी भाषाएँ प्राय: एक-सी होती।

5. **भाषा समाज सापेक्ष है**–भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज में ही उसका उद्‌भव, पल्लवन और विकास होता है। व्यक्ति समाज से ही भाषा सीखता है और भाषा द्वारा ही वह समाज से सम्बन्ध स्थापित करता है। अत: सामाजिक सहयोग का आधार भाषा ही है।

❐

3 भाषा-संरचना के तत्वों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–भाषा कहने से साधारणत: चार तत्वों का बोध होता है–ध्वनि, शब्द (पद), वाक्य और अर्थ। पहले ध्वनि का उच्चारण होता है; फिर अनेक ध्वनियों से एक पद का निर्माण होता है; अनेक पदों से वाक्य बनता होता है और उससे अर्थ की प्रतिति होती है। ध्वनि से अर्थ तक का क्रम अनवरत चलता रहता है। इसमें प्रत्येक की सीमा इतनी विस्तृत और व्यापक हो गई है कि इनके विवेचन के लिए स्वतंत्र शास्त्र विकसित हो गए हैं जिन्हें क्रमश: ध्वनिविज्ञान, पदविज्ञान, वाक्यविज्ञान, एवं अर्थविज्ञान कहते हैं।

1. **ध्वनि**–भाषा का आरम्भ ध्वनि से होता है। ध्वनि के अभाव में भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती है वक्ता के मुख से निकली ध्वनि श्रोता के कान तक पहुँचती है। ध्वनि के उत्पादन के लिए वक्ता जितना आवश्यक है, उतना ही उसके ग्रहण के लिए श्रोता आवश्यक है, किंतु वक्ता और श्रोता के बीच यदि ध्वनि के संवहन का कोई माध्यम न हो तो उत्पन्न ध्वनि भी निरर्थक हो जाएगी। यह कार्य वायु-तरंगों के द्वारा सिद्ध होता है। हमारे मुख से निकलने वाली प्रत्येक स्वतंत्र आवाज ध्वनि होती है और ये ध्वनियां हमेशा मौखिक भाषा में प्रयोग की जाती है।
2. **वर्ण**–उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द। ध्वनि सार्थक हो ही, यह आवश्यक नहीं है; जैसे–अ, क, च, ट, त, प, आदि ध्वनियाँ तो हैं, मगर सार्थक

नहीं। अब, कब, चल आदि शब्द हैं, क्योंकि इनमें सार्थकता है, अर्थात् अर्थ देने की क्षमता है। बोलते समय हम जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं वही ध्वनियाँ वर्ण या अक्षर कहलाती हैं। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वर्ण उस ध्वनि को कहते हैं जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते। जैसे–अ, क् च् ट् त् प् आदि। इन ध्वनियों तथा वर्णों के और टुकड़े नहीं किए जा सकते। अतः भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई 'ध्वनि' तथा इसके लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं, जैसे–क् न् ज् ल् स् आदि। दूसरे शब्दों में 'मौखिक ध्वनियों' को व्यक्त करने वाले चिह्न 'वर्ण' कहलाते हैं।

3. **शब्द या पद**–वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं, जैसे–क्+अ+म्+अ+ल्+अ = कमल, क्+अ+ल्+अ+म्+अ = कलम। पदविज्ञान में पदों के रूप और निर्माण का विवेचन होता है। सार्थक हो जाने से ही शब्द में प्रयोग-योग्यता नहीं आ जाती। कोश में हजारों-हजार शब्द रहते हैं, पर उसी रूप में उनका प्रयोग भाषा में नहीं होता। उनमें कुछ परिवर्तन करना होता है। उदाहरणार्थ शब्दकोश में 'पढ़ना' शब्द मिलता है और वह सार्थक भी है, किंतु प्रयोग के लिए 'पढ़ना' रूप ही पर्याप्त नहीं है, साथ ही उसका अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता। 'पढ़ना' के अनेक अर्थ हो सकते है; जैसे 'पढ़ता है', 'पढ़ रहा है', 'पढ़ रहा होगा'। 'पढ़ना' के ये अनेक रूप जिस प्रक्रिया से सिद्ध होते हैं, उसी का अध्ययन पदविज्ञान का विषय है। संस्कृत के वैयाकरणों ने शब्द के दो भेद किए हैं–शब्द और पद। शब्द से उनका तात्पर्य विभक्तिहीन शब्द से है जिसे प्रतिपादित भी कहते हैं। 'पद' शब्द का प्रयोग वैसे शब्द के लिए किया जाता है जिसमें विभक्ति लगी हो। जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो उसी शब्द को 'पद' कहते हैं। जैसे–कमल कलम से लिखता है। अब इस वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'कमल' और 'कलम' शब्द 'पद' कहलाएंगे।

4. **वाक्य**–सार्थक शब्दों का वह क्रमबद्ध समूह जिसका कोई अर्थ निकलता है, उसे वाक्य कहते हैं, जैसे–'राम विद्यालय जा रहा है।' यदि हम इस वाक्य को 'विद्यालय है रहा राम जा' लिख दें, तो इस वाक्य का कोई अर्थ नहीं निकलता है तथा शब्द वहीं होकर भी क्रमबद्ध समूह में नहीं हैं, ऐसी परिस्थिति में इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता है।

वाक्यविज्ञान भाषाविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें पदों के पारस्परिक सम्बन्ध का विचार किया जाता है। ध्वनि का संबंध भाषा के उच्चारण से है, जो मुख्यतः शारीरिक व्यापार है। ध्वनि-समूह में जब सार्थकता का समावेश हो जाता है तो उसे पद कहते हैं। पद ध्वनि और वाक्य के बीच की संयोजक कड़ी है क्योंकि उसमें उच्चारण और सार्थकता दोनों का योग रहता है, किंतु न तो ध्वनि की तरह वह उच्चारण है और न वाक्य की तरह पूर्णतः सार्थक।

पदविज्ञान में पदों की रचना का विचार होता है, अर्थात संज्ञा, क्रिया, विशेषण, कारक, लिंग, वचन, पुरुष, काल, आदि के वाचक शब्द कैसे बनते हैं, किंतु उन पदों का कहाँ और कैसे प्रयोग होता है, यह वाक्यविज्ञान का विषय हैं। शब्दों के सार्थक और क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं। किंतु उसके लिए तीन चीजें अपेक्षित हैं–1. आकांक्षा, 2. योग्यता, 3. आसक्ति।

5. **अर्थ**–अर्थविज्ञान के विवेच्य विषय हैं–अर्थ क्या है?, अर्थ का ज्ञान कैसे होता है?, शब्द और अर्थ में क्या सम्बन्ध है?, अनेकार्थी शब्द के अर्थ का निर्णय कैसे किया जाता है?, अर्थ में परिवर्तन क्यों कैसे होता है? आदि।

4 **भाषायी समझ बनने से आप क्या समझते हैं तथा इसमें भाषा की क्या भूमिका है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर–भाषा प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था है। इसके जरिए हम संसार को समझने के लिए वाचिक प्रतीक गढ़ते हैं। इन प्रतीकों से मनुष्य को वह सहारा मिलता है जिसके माध्यम से वह ठोस चीजों से स्वतंत्र होकर उन पर विचार तथा बात कर सकते हैं।

इस प्रकार सम्प्रेषण के माध्यम से पहले प्रतीक गढ़ने का माध्यम भाषा है। इन प्रतीकों के जरिए विचार करते हुए हमारी समझ बनती है। भाषा सम्प्रेषण का माध्यम होने से पहले समझ का माध्यम है।

समझ बनने का अर्थ क्या है तथा इसमें भाषा क्या भूमिका निभाती है? इस सवाल को चार स्तरों पर समझा जा सकता है–मूर्त अनुभव, ठोस अनुभूतियाँ, अमूर्त संकल्पनाएँ (गणित, आत्मा, ईश्वर, आदि), तथा सामान्यीकृत संकल्पनाएँ (वर्गीकरण)।

1. **मूर्त अनुभव**–मान लीजिए आप किसी फूल को देख रहे हैं। यह आपका फूल के साथ ठोस अनुभव है। आप उसके बारे में समझ बनाना चाहते हैं। अब सवाल यह है कि उस फूल के बारे में समझ बनाने का क्या अर्थ है? फूल के बारे में समझ बनाने के घटक वाचिक प्रतीक, उसके रंग, खुशबू, आकार, पंखुडियों का प्रकार, सुंदरता, आदि हो सकते हैं। जब इन प्रतीकों को रचा जाएगा और रचे जा चुके प्रतीकों का उपयोग किया जाएगा, तभी कहा जा सकता है कि आपकी उस फूल के बारे में समझ बन रही है। उस फूल के रंग, आकार आदि के बारे में आपकी समझ जितनी स्पष्ट होगी उसके बारे में आपके द्वारा किया जाने वाला सम्प्रेषण भी उतना ही सटीक हो सकता है।
2. **ठोस अनुभूतियाँ**–मान लीजिए आपने देखा कि किसी सफर में आपके सामने वाली सीट पर एक व्यक्ति बैठा है। उसके व्यवहार से आपके मन में कुछ भाव जगते हैं। ये भाव उस व्यक्ति के संदर्भ में आपकी अनुभूतियाँ होंगी। यदि आप यह समझ पा रहे हैं कि ये कैसी अनुभूतियाँ हैं? यदि आप इन अनुभूतियों को कोई सही नाम दे पाने में सफल होते हैं? यदि आप उन अनुभूतियों की तीव्रता को समझ कर उस तीव्रता को कोई नाम दे पा रहे हैं तो मानना चाहिए कि आप उन अनुभूतियों के संदर्भ में अपनी समझ बना रहे हैं। इस प्रकार से बनी समझ आपके सम्प्रेषण का आधार बनेगी।
3. **अमूर्त संकल्पनाएँ**–अमूर्त संकल्पनाओं पर विचार करने के लिए गणितीय संकल्पनाएँ मददगार होगीं। आइए, इसके लिए गणित विषय से रेखा की अवधारणा पर विचार करते हैं। गणित में रेखा को एक ऐसे बिन्दु-पथ के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसकी लंबाई तो होती है लेकिन चौड़ाई नहीं होती। इसी प्रकार बिन्दु (point) को विमाओं युक्त किन्तु स्थान न घेरने वाली संकल्पना के रूप में परिभाषित किया जाता है। रेखा तथा बिंदु उदाहरण अमूर्त संकल्पनाओं के हैं जो न तो मूर्त अनुभव और न ही ठोस अनुभूतियों के दायरे में आती हैं? ये मानसिक प्रक्रियाओं के तहत गणित के ज्ञान को सटीक बनाने के लिए अमूर्तता के स्तर पर सृजित की जाती हैं। जैसे-जैसे आप गणितीय ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ेंगे, आपको ऐसी संकल्पनाओं के बारे में समझ बनाने की जरूरत महसूस होगी। तभी आप इनसे जुड़े गणितीय ज्ञान के बारे में उपयुक्त बातें कह पाएंगे।
4. **सामान्यीकृत संकल्पनाएँ**–मान लीजिए आप अपने दोस्त से कहते हैं कि वह आपके घर आते हुए फल लेता आए। मान लीजिए वह आम लेकर आया। आप कहें कि अरे मैंने फल मंगवाए थे, तुम तो आम ले आए। फल कहाँ हैं? आपका दोस्त कहेगा कि आम भी फल होता है। आप कहें कि मुझे तो फल चाहिए।

इस प्रसंग में भाषा की दृष्टि से कौन सी बात महत्वपूर्ण है। वास्तव में फल तो कुछ होता नहीं। फल के प्रकार होते हैं–आम, संतरा, केला, अमरूद, जामुन आदि। फल ठोस रूपों का सामान्यीकृत नाम है। फल ऐसी अवधारणा है जो स्वयं ठोस रूप में नहीं मिलती लेकिन उसके विशिष्टीकृत रूप मिलते हैं। विशिष्ट फलों से फल नाम की कोटि का निर्माण करने से हमें फलों को उनके गुणों के आधार पर अन्य अवधारणाओं जैसे सब्जियों से अलग करने में मदद मिलती है। अलग से सामान्यीकृत कोटि की रचना करने से हमारी अलग-अलग फलों के संदर्भ में कुछ ऐसी समझ बनती है जिसे सभी फलों पर लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष–उपर्युक्त विवेचन से भाषा को समझ तथा सम्प्रेषण के माध्यम से समझने में मदद मिलती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भाषायी समझ से सम्प्रेषण की प्रक्रिया एकतरफा है। बल्कि सम्प्रेषण से हमारी समझ भी बेहतर बन सकती है क्योंकि सम्प्रेषण एक ही चीज के बारे में एक से अधिक प्रकार की समझ पर संवाद करने का अवसर उपलब्ध करवाता है।

❐

5 भाषा संरचना की नियमबद्ध व्यवस्था को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–क्या आपके आस-पास बोली जानी वाली सभी भाषाएँ नियमबद्ध हैं या उनमें से कुछ ही भाषाएँ नियमबद्ध हैं? क्या भारत या दुनिया में अलग-अलग समूहों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा बिना नियमों के चलती है? आखिर हम कितनी आसानी से कह देते हैं कि अमुक समूह द्वारा बोली जाने वाली भाषा, भाषा न होकर बोली है क्योंकि उसका व्याकरण नहीं है। अपने आस-पास बोली जाने वाली भाषाओं का ध्वनि, शब्द, तथा वाक्य के स्तर पर विश्लेषण करके पता लगाइए कि क्या उनमें नियम हैं या वे भाषाएँ मनमाने तरीके से उपयोग में लाई जाती हैं। यहाँ पर भाषा के नियमों के बारे में बात करने का मकसद किसी भाषा-विशेष के नियमों को सीखना नहीं है। बल्कि कुछ भाषाओं के कुछ नियमों से वह आधार तैयार करना है जिससे विभिन्न भाषाओं के नियमों का विश्लेषण किया जा सके।

1. ध्वनि संरचना–भाषा मूल रूप में वाचिक अर्थात् बोली जाने वाली होती है। प्रत्येक भाषा में ध्वनियों का वर्गीकरण मिलता है। हिन्दी में स्वर और व्यंजन दो वर्ग हैं। अंगेजी में Vowel तथा Consonant नाम से ध्वनियों के दो वर्ग मिलते हैं।

शब्द में पाई जाने वाली ध्वनियाँ किन्ही नियमों का पालन करती हैं। अलग-अलग भाषाओं में स्वरों तथा व्यजंनों की संख्या भिन्न होती है लेकिन संसार की हर भाषा में स्वर तथा व्यंजन होते हैं।

शब्द में हर सार्थक ध्वनि का महत्व होता है। जिन ध्वनियों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं वे सार्थक ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक भाषा के शब्दों में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों की व्यवस्था नियमबद्ध है। कभी दो व्यंजन ध्वनियों के बीच एक स्वर ध्वनि आती है, जैसे–क्+अ+म्+अ+ल्+अ = कमल। तो कभी किन्हीं शब्दों में एक साथ दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं। जैसे: मिट्टी (म्+इ+ट्+ट्+ई) में एक साथ दो व्यंजन (ट्) ध्वनियाँ आ रही हैं। हर भाषा में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम होती है जिनमें तीन या उससे अधिक व्यंजन एक साथ आते हों।

2. शब्द संरचना–शब्द की संरचना के अन्तर्गत 'शब्दों के भेद तथा उनके प्रयोग, रूपान्तर और व्युत्पति' को समझा जाता है। हर भाषा में शब्दों के भेद होते हैं। उनमें शब्दों को रूपान्तरित किया जा सकता है तथा हर भाषा में नए शब्द-निर्माण की खास प्रक्रिया होती है। जैसे शब्दों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंध बोधक, लिंग, वचन, काल, कारक, विभक्ति आदि कोटियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे–किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, या भाव का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा की कोटि में रखा जाता है। अगर हम किसी

पाठ का एक अनुच्छेद लें और उसमें ऐसे शब्दों की पहचान करें जो संज्ञा की कोटि में शामिल होने लायक हैं तो हम पाएंगे कि छूट गए शब्दों को किन्हीं और कोटियों में रखा जा सकता है। इस प्रकार अंग्रेजी में शब्दों को noun, pronoun, adjective, verb, gender आदि की कोटि में रखा जा सकता है। ऐसी कोटियाँ संसार की सभी भाषाओं में बनती हैं। इस आधार पर समस्त भाषाओं में एकरूपता पाई जाती है।

संसार की सभी भाषाओं में शब्दों का रूपान्तरण होता है। उदाहरण के लिए संज्ञा शब्दों का विशेषण में रूपान्तारण सभी भाषाओं में पाया जाता है। प्रत्येक भाषा के रूपान्तरण के अपने नियम हैं। उन नियमों को पहचाना जा सकता है। जैसे-

भाषा	**संज्ञा**	**विशेषण**
अंग्रेजी	Rain	Rainy
	Sun	Suny
हिन्दी	रंग	रंगीला
	खर्च	खर्चीला

खर्च तथा रंग में ईला प्रत्यय जोड़ देने से उनमें रूपांतरण हो जाता है और वे विशेषण बन जाते हैं। इसी प्रकार Rain तथा Sun में ई (Y) जोड़ देने से वे Rainy तथा Suny में रूपांतरित होकर विशेषण बन जाते हैं।

3. **वाक्य संरचना**–किसी भी भाषा के वाक्य में मौजूद बुनियादी घटक जैसे कर्ता, कर्म, और क्रिया की व्यवस्था से किसी वाक्य की संरचना बनती है। चाहे हिन्दी भाषा हो या कोई अन्य भाषा। प्रत्येक भाषा में वाक्य के घटक किसी निश्चित क्रम में होने पर ही वाक्य की रचना करते हैं। जैसे–

'अखिल आम खाता है।' इस वाक्य में चार पद हैं। इन पदों का एक निश्चित क्रम है। अतः सार्थक शब्दों के क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं। हिन्दी की वाक्य संरचना कर्ता-कर्म-क्रिया की होती है। उपर्युक्त उदाहरण में अखिल (कर्ता), आम (कर्म) तथा खाता है (क्रिया) है। जब कर्ता-कर्म-क्रिया एक सुनिश्चित क्रम में व्यवस्थित होंगे तभी उन्हें हिन्दी का वाक्य माना जा सकता है। हिन्दी में क्रिया भी कर्ता के लिंग, वचन व पुरुष के अनुसार बदलती है। अंग्रेजी के वाक्यों में लिंग, वचन तथा पुरुष के हिसाब से क्रिया के दो रूप मिलते हैं। अंग्रेजी में कर्ता तथा क्रिया में जो संबंध मिलता है वह हिन्दी में कर्ता तथा क्रिया के बीच मिलने वाले संबंध से भिन्न है। लेकिन जैसा भी संबंध वह है नियमबद्ध।

❐

6 भाषा संरचना की सर्जनात्मकता और भाषिक प्रकार्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भाषा एक व्यवस्था होती है, इस व्यवस्था का निश्चित ढाँचा है। जिसे भाषा की संरचना कहते हैं। भाषाविदों ने यह जानने का प्रयास किया कि भाषा के निर्माणक तत्व कौन-कौन से हैं तथा निर्माणक बातों का भाषा के स्वरूप निर्माण में क्या योगदान है? इस दृष्टि से फ्रांसिसी भाषाविज्ञानी सस्यूर ने काम किया। इन्होंने भाषा को एक संरचना के रूप में स्वीकारते हुए यह निरूपित किया कि भाषाविद् का उद्देश्य संरचना निर्माण की प्रक्रिया को जानना और उनका वर्णन करता है।

1. **भाषा स्वनों की व्यवस्था है। स्वनों की अनुभूति कान, ज्ञानेंद्रियों से होती है।** इससे जो अभिव्यक्त होता है वह श्रोता को बौद्धिक तथा मानसिक प्रक्रिया से अनुभूत होता है। ऐसा करते समय हम स्वनों से शब्द बनाते हैं और शब्द से पद बनता है। पदों का समूह वाक्य बनता है। इस तरह स्वन, शब्द, पद और वाक्य का अपना निश्चित प्रकार्य है, जैसे–हम हिन्दी की संरचना जानें तो उसका एक स्वन रूप 'क' है। इसका अलगपन का एहसास अन्य स्वन यथा 'ख' से तुलना करने पर होता है। अन्य

स्वनों को मिलाकर एक शब्द बनेगा, जैसे–कप या कमल, चमक, लपक। इस तरह [illegible] शब्दों का निर्माण होता है। जिनका अपना अलग अर्थ होता है। ये शब्द संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि का द्योतन कराते हैं। इनमें संबंधतत्व जुड़ जाता है अर्थात् पद बनने पर लिंग, वचन, काल को सूचित करते हैं।

2. **भाषिक संरचना सुनिश्चित और व्यवस्थापरक होती है।** शब्दों का निर्माण शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय आदि का क्रम सुनिश्चित होता है। जैसे-लड़क्-लड़का-लड़की लड़के-लड़कियाँ-ये प्रत्यय लिंग और वचन को क्रमशः सूचित करते हैं। इसी व्यवस्था के चलते भाषा की संरचना पूर्वानुमेय होती है। वक्ता इसी संरचना का अर्जन करता है। यह बात मातृभाषा में अधिक होती है। इसी कारण शोरगुल के वातावरण में भी वक्ता के आशय को समझ लेता है।

3. **भाषा संरचना का व्यवस्थित क्रम होता है।** जैसे–राम घर जाता है। इस वाक्य में राम के स्थान पर लड़का, मोहन, घोड़ा जैसी अनेक पुल्लिंग संज्ञाओं का प्रयोग किया सकता है। स्त्रीलिंग का प्रयोग नहीं हो सकता। यही विशेषता ध्वनि, व्याकरण स्तर पर भी प्राप्त होती है। जैसे–मैं से प्रारम्भ होने वाले वाक्य में 'होना' क्रिया का वर्तमानकालिक रूप 'हूँ' आएगा, अन्य नहीं।

4. **भाषिक संरचना सृजनात्मक और उत्पादक होती है।** एक बार भाषा का पूर्ण रूपेण अर्जन हो जाने पर मनुष्य ऐसे असंख्य वाक्यों के अवबोधन प्रयोग में समर्थ हो जाता है जो पहले कभी न सुने हो या न बोले हों। यह अर्जनशीलता उसकी सृजनात्मक शक्ति को प्रेरणा देती है।

5. **भाषा की संरचना कठोर, स्थिर न होकर गत्यात्मक होती है।** जो उसे बहुआयामिता प्रदान करती है। भाषा एकान्तिक संरचना न होकर बहुआयामी संरचना होती है, जैसे 'घर' शब्द हम लें तो इसके आयाम बनेंगे–स्वनिक संरचना, व्याकरणिक संरचना, अर्थगत लक्षण, अन्य भाषिक इकाइयों से संबंध और स्वन प्रक्रिया–घर में, घर को, घरेलु, घर पर, घर आदि।

6. **भाषा व्यवस्था संस्थागत है।** कारण वह सामाजिक है। भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है। जो किसी भी तरह से वक्ता की अपनी इच्छा या प्रतीकों के अपने माध्यम, उच्चारण और लेखन से नियंत्रित नहीं होती। इसलिए भाषा व्यक्ति से जुड़ी रहकर भी व्यक्ति की सीमा से मुक्त है। प्रत्येक भाषा का अपना एक मानक रूप होता है। जो व्यवस्था की देन है। उसका एक मूल्य होता है। इसी तरह भाषा व्यवस्था की प्रवृत्ति को भी समझा जा सकता है। किसी भाषा की कोई ध्वनि अथवा उसके नाम की सार्थकता भौतिक उपादानों मे न होकर मूल्य में होती है। जिसे भाषा की व्यवस्था उसे प्रदान करती है। इसलिए हिन्दी में नीला, संस्कृत में नील, अंग्रेजी में 'ब्ल्यू' ये विधान हैं जो मूल्य को दर्शाते हैं।

भाषा संरचना के स्तर–भाषा अध्येता विश्लेषण, वर्णन, अध्ययन कर भाषा संरचना को कुछ स्तरों में विभाजित करता है। भाषिक कथन के दो पक्ष होते हैं–(क) रूप और (ख) अर्थ। सस्यूर ने प्रजनक व्याकरण में भाषा के तीन प्रमुख संघटक बनाएँ हैं। (क) वाक्य, (ख) अर्थ और (ग) स्वन प्रक्रिया। संपूर्ण भाषा संरचना को इस प्रकार बताया जा सकता है।

- **भाषा के दो पक्ष हैं**–अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष।
- **अभिव्यक्ति पक्ष के भी दो रूप हैं**–स्वनात्मक संरचना और व्याकरणात्मक संरचना।
- **स्वनात्मक संरचना के चार पक्ष हैं**–स्वन संरचना, स्वनिमिक संरचना, रूपात्मक संरचना, रूप स्वनिमिक संरचना।
- **व्याकरणात्मक संरचना के दो पक्ष हैं**–शब्दावली और वाक्यात्मक संरचना।

स्वनिमिक और वाक्यात्मक संरचना को आधुनिक भाषाविज्ञान में महत्व दिया गया है। अर्थ को गौणता मिली है। कारण इन दोनों का अध्ययन ज्ञान-विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी होता है। स्वन भौतिक विज्ञान का विषय है। स्वन का उत्पादन मानवमुख हर बार नवीन ढंग से करता है। इस सूक्ष्म अंतर का अध्ययन भौतिकी में ही संभव है।

अर्थबोध में मानवमन, उसका परिवेश, संस्कृति, सभ्यता एक साथ सक्रिय होते है। इसलिए अर्थ का अध्ययन मनोविज्ञान या दर्शन शास्त्र के विषय हैं। यह अध्ययन इतना गहन और सूक्ष्म है कि बाहरी रूप में अध्ययन करना संभव नहीं। इसलिए इन्हें संरचना में गौण माना गया है।

❐

7 बालक में भाषायी समझ के विकास के विभिन्न सिद्धान्तों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बाल्यावस्था में भाषा सीखने के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–यह सोचने वाली बात है कि 3-4 साल के बच्चे भाषा-प्रयोग के मामले में एक वयस्क की तरह होते हैं। वे जीवन की विभिन्न स्थितियों में अनेक प्रकार की संरचनाओं से युक्त भाषा का सहजता के साथ प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा व्याकरण सम्मत होती है यानी उनकी भाषा में एक नियमबद्ध व्यवस्था नजर आती है। चाहे वह हिंदी हो या कोई अन्य भाषा। ऐसा कौन-सा औजार है जिसके सहारे वे भाषा का सही-सही प्रयोग कर लेते हैं। उन्हें भाषा की संरचना सीखनी नहीं पड़ती और न ही उन्हें कोई भाषा सिखाता है, न ही सिखा सकता है। फिर यह कैसे संभव है कि बच्चे अपनी बात कहने और दूसरों की बातें सुनने-समझने की क्षमता रखते हैं। दरअसल भाषा अर्जित करने के संदर्भ में अनेक विचार हैं जो अपने-अपने नजरिए से बच्चों द्वारा भाषा अर्जित करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। सामान्यतः सीखने के संदर्भ में तीन बिंदुओं को समझना बेहद जरूरी है। हमारे सीखने में प्रकृति, समाज और व्यक्ति की महती भूमिका होती है। हम अपने आस-पास की चीजों को देखते-समझते हैं और उनकी छवि अथवा संकल्पना का निर्माण करते हैं। गाय, पेड़, सूरज, चाँद, आसमान, नदी आदि की संकल्पनाओं के निर्माण के लिए प्रकृति के संपर्क में आना जरूरी है। समाज के संपर्क में आने पर माँ, चाचा, दादी, नाना, रोटी, बस्ता, किताब आदि की अवधारणाओं का निर्माण होता है। समाज चीजों को एक खास ध्वनि अथवा नाम देने का काम करता है। यही कारण है कि कुत्ता के लिए किसी भाषा समुदाय में 'कुकुर' या 'श्वान' शब्द प्रचलित हैं तो किसी अन्य भाषा समाज में उसी के लिए 'डॉग' शब्द प्रचलित हैं। इसका एक निहितार्थ यह भी है कि भाषा सीखने में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक और मत के अनुसार भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता ही वह आधार है जिसके सहारे बच्चा विविध भाषा प्रयोग करता है। इसके विपरीत एक विचारधारा अनुकरण को भाषा सीखने का एकमात्र आधार स्वीकार करती है।

1. भाषा सीखना-बी.एफ. स्किनर–पैवलॉव, स्किनर आदि व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य से जुड़े हैं। व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में उद्दीपन-प्रतिक्रिया-पुनर्बलन का विशेष महत्व होता है। किसी भी चीज को सीखने के लिए अथवा प्रतिक्रिया करने के लिए उद्दीपन की उपस्थिति अनिवार्य है और जब बच्चे को उस प्रतिक्रिया पर किसी प्रकार का पुनर्बलन प्राप्त होता है तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है। इसका सीधा सा तात्पर्य यह है कि सीखने की प्रक्रिया का मूल वातावरण में कहीं निहित है। इस व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार बच्चे परिवेश में उपलब्ध भाषा का अनुकरण करते हुए भाषा सीखते हैं। मान लीजिए बच्चे ने शब्द सुने–पापा, चाचा, दादा, मामा, पानी, रोटी, गाय आदि। बच्चा इन शब्दों को सुनकर उनका अनुकरण करेगा और इन्हीं शब्दों को दोहरा देगा। जब बच्चे को इन शब्दों के दोहराने पर सकारात्मक पुनर्बलन प्राप्त होगा तो उनकी भाषा पुष्ट होती चली जाएगी।

2. भाषा सीखना-नोम चॉम्स्की–चॉम्स्की बच्चों की भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास रखते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि बच्चे इसी क्षमता के सहारे अपने परिवेश से भाषा को ग्रहण करते हैं और विभिन्न भाषिक संरचनाओं को आत्मसात करते हुए नए-नए वाक्य बनाते हैं। पियाजे, चॉम्स्की और वाइगोत्स्की इसी विचारधारा का समर्थन करते हैं। लेकिन फिर भी उनके मतों में थोड़ा-बहुत अंतर देखने को मिलता है। भाषा केवल

अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखी जा सकती। सीमित वाक्य सुनकर असीमित वाक्यों को बोलना भाषिक अर्जन क्षमता द्वारा संभव है। प्रत्येक बच्चा भाषा सीखने की क्षमता लेकर पैदा होता है। या यूँ कहें कि भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है। इसी क्षमता के सहारे बच्चा रोज नए-नए भाषिक प्रयोग करता है।

बच्चा अपने परिवेश में जो भाषा और जिस तरह की भाषा सुनता है उसे अपनी भाषिक क्षमता के सहारे विश्लेषित करता है। समाज से प्राप्त भाषिक आँकड़ों के आधार पर अपने कुछ नियम बनाता है। जिसे चॉम्स्की 'लघु व्याकरण' कहते हैं। इस लघु व्याकरण में बच्चे के अपने नियम होते हैं जिसे वह सामान्यीकरण की प्रक्रिया के द्वारा बनाता है। इन्हीं नियमों के आधार पर वह भाषा का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए बच्चा निम्नलिखित वाक्य सुनता है-

• निखिल केला खाता है। • स्वाति केला खाती है।

इन वाक्यों के आधार पर वह सामान्यीकरण करते हुए नियम बनाता है कि लड़कों (पुल्लिंग) के लिए 'आ' से समाप्त होने वाला शब्द (क्रिया) आएगा जबकि लड़कियों (स्त्रीलिंग) के लिए 'ई' से समाप्त होने वाले शब्दों (क्रिया) का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह वह अपनी भाषा में लिंग भेद करना प्रारंभ कर देता है।

3. भाषा सीखना-जीन पियाजे–जीन पियाजे एक जीव वैज्ञानिक की तरह भाषा सीखने को व्याख्यायित करते हैं। उनका मानना है कि मानसिक विकास में जन्मजात कारकों की भूमिका नहीं होती। विकास का कारण है जीव और वातावरण के बीच अन्त:क्रिया। इसका एक निहितार्थ यह है कि जिस प्रकार बच्चा वातावरण के संपर्क में आता है और उसका विकास क्रमश: होता है, उसी प्रकार उसकी भाषा का भी विकास होता जाता है। जैसे-जैसे बच्चा वातावरण के संपर्क में आता है अथवा वातावरण से अंत:क्रिया करता है, वैसे-वैसे उसकी मानसिक संरचनाओं में गुणात्मक बदलाव आता है। पियाजे के अनुसार सीखने के संदर्भ में आत्मसातीकरण और समायोजन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। एक उदाहरण के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं। एक बच्चा अपनी माँ के साथ बाजार जाता है। वहाँ वह एक गाय देखता है और उसकी माँ उस गाय की ओर संकेत कर कहती है–देखो गाय आ गई। बच्चा गाय की 'छवि' को उसके नाम से (ध्वनि) संयोजित कर लेता है। यानी बच्चे की बौद्धिक संरचना में 'गाय' की छवि और ध्वनि अपना स्थान ले लेती है। पियाजे के अनुसार यह छवि 'स्कीमा' कहलाती है। बच्चा अपनी बौद्धिक संरचना के आधार पर उसे आत्मसात करता है। अब बच्चा कुत्ता, बैल, बिल्ली आदि देखता है और उसे 'गाय' कहकर संबोधित करता है। यह सामान्यीकरण की प्रवृत्ति है। बच्चे ने गाय और शेष जानवरों में संभवत: पैरों के आधार पर सामान्यीकरण किया। लेकिन जब अलग-अलग समय पर बच्चे के समक्ष उन जानवरों को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है तो बच्चा पूर्व में बनाई गई छवि में परिवर्तन करता है। इस परिवर्तन के आधार पर वह गाय, कुत्ता, बैल, बिल्ली आदि जानवरों में भेद करना सीखता है और उनके साथ क्रमश: उनके नामों (ध्वनियों) को जोड़ता है। इतना ही नहीं वह धीरे-धीरे समय के बढ़ते क्रम में अलग-अलग तरह की गायों (सफेद, काली, भूरी, चितकबरी आदि) में भी अंतर करने लगता है और उसी के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करता है। यह समायोजन की स्थिति है।

4. भाषा सीखना-वाइगोत्स्की–भाषा सीखने की प्रक्रिया में समाज की महती भूमिका पर बल देते हुए वाइगोत्स्की का मानना है कि बच्चे अपने-अपने समुदाय के संपर्क में आकर भाषा सीखते हैं। इसका अर्थ यह है कि भाषा की ध्वनियों की सार्थकता तभी है जब वह किसी वस्तु विशेष की ओर संकेत करती है। उदाहरण के लिए 'जाल' शब्द का अर्थ बच्चा अपने समाज से ग्रहण करता है। किसी भाषा समुदाय में यह 'मकड़ी का जाल' है तो किसी अन्य समुदाय में यह 'मछली पकड़ने वाला जाल' है। इनके अतिरिक्त 'जाल' का एक अन्य अर्थ वह जाल है जो अकसर पुराने घरों में पहले या दूसरे तल पर बनाया जाता था और जो लोहे का होता था। 'जाल' रेगिस्तानी इलाके में पाए जाने वाले एक पेड़ का भी नाम है। एक ध्वनि समूह 'जाल' को अलग-अलग अर्थ देने वाले अलग-अलग भाषा-समुदाय हैं। यही कारण है कि एक ही चीज अलग-अलग भाषा समुदायों में अलग-अलग

जाति समूहों के माध्यम से अभिव्यक्त की जाती है। इतना ही नहीं अनेक बार इन्हीं शब्दों का प्रयोग भी समाज द्वारा नियंत्रित होती है यानी समाज भाषा-प्रयोग को नियंत्रित करता है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि प्रत्येक समाज की अपनी भिन्न संस्कृति होती है और भाषा किसी भी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा होती है। भाषा को समाज से काटकर न तो देखा जा सकता है और न ही उसे समझा जा सकता है। एक संस्कृति में 'Dear father" स्वीकार्य है तो वहीं दूसरी ओर 'आदरणीय पिताजी/बाबूजी' ही स्वीकार्य है। बच्चा अपने-अपने समाज में इन विविध भाषा-प्रयोगों को सुनता-समझता है और यह तय करता है कि उसे किस स्थिति में किस तरह की भाषा का प्रयोग करना होगा।

व्योगोत्स्की के अनुसार, बच्चे की भाषा समाज के साथ संपर्क का ही परिणाम है, साथ ही बच्चा अपनी भाषा के विकास के दौरान दो तरह की बोली बोलता है-पहली आत्मकेंद्रित और दूसरी सामाजिक। आत्मोन्मुख भाषा के माध्यम से वह खुद से संवाद करता है, जबकि सामाजिक भाषा के माध्यम से वह शेष सारी दुनिया से संवाद स्थापित करता है।

निष्कर्ष-पैवलोव और स्किनर जैसे व्यवहारवादियों के अनुसार अभ्यास, नकल व रटने से भाषा की क्षमता प्राप्त होती है। चॉम्स्की ने तर्क देते हुए कहा कि भाषिक क्षमता जन्मजात ही होती है, वरना भाषिक व्यवस्था को सीखने की प्रक्रिया संभव ही नहीं हो सकती। मगर पियाजे, इनहेल्डर और और वाइगोत्स्की जैसे मनोवैज्ञानिकों ने इन दोनों ही अतिवादी दृष्टिकोणों के बीच का रास्ता चुना। जहाँ व्यवहारवादियों के लिए मस्तिष्क एक 'कोरी स्लेट' जैसा था, वहाँ संज्ञानात्मक रूख रखने वालों (चॉम्स्की आदि) के लिए भाषा मानव मस्तिष्क में पहले से ही विद्यमान थी, सार्वभौम व्याकरण के रूप में बुनी हुई। पियाजे के अनुसार भाषा अन्य संज्ञानात्मक तंत्रों की भाँति परिवेश के साथ अंत: क्रिया के माध्यम से ही विकसित होती है। दूसरी ओर वाइगोत्स्की के अनुसार, बच्चे की भाषा समाज के साथ संपर्क का ही परिणाम है। इन सारी चर्चाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चे भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता की सहायता से समाज से अंत: क्रिया करते हुए भाषा सीखते हैं। जैसे-जैसे समाज के सदस्यों और परिस्थितियों के साथ बच्चे का संपर्क बढ़ता है, वैसे-वैसे बच्चे की भाषा समृद्ध होती जाती है।

भाषा व्यवहार (भाषिक प्रयोग और शैली)

8 **भाषायी दक्षता, भाषिक संरचना एवं भाषा-व्यवहार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

अथवा

सस्यूर ने भाषा-अध्ययन के कितने आयामों की चर्चा की है? भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-भाषा-व्यवस्था संरचना के निश्चित नियमों का निर्माण करती है। वह प्रकृति में निश्चित, निर्धारित एवं समरूपी होती है तथा भाषा-व्यवहार व्यक्ति के द्वारा होता है। इसमें व्यक्ति स्वयं शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रयोग वाचन शैली आदि का उपयोग करता है। भाषा के ये दो रूप मानने का श्रेय मूलत: सस्यूर को है, उन्होंने संक्षेप में इन पर विचार किया। बाद में त्रुबेत्स्कॉय, येल्मस्लव तथा चॉम्स्की आदि ने इनके अन्तर कई दृष्टियों से स्पष्ट किए। प्रजनक व्याकरण के जनक नोऑम चॉम्स्की द्वारा किसी व्यक्ति के भाषा ज्ञान और उसके द्वारा किए जाने वाले भाषा व्यवहार के संदर्भ में दो अवधारणाएँ दी गई हैं-भाषा क्षमता एवं भाषा व्यवहार। इन्हें संक्षेप में इस प्रकार समझ सकते हैं-

भाषा दक्षता-भाषा दक्षता किसी भाषा प्रयोक्ता की वह मानसिक क्षमता है, जिसके आधार पर वह वाक्यों को सुनता, समझता एवं अभिव्यक्त करता है या कर सकता है। भाषा व्यवहार के लिए संबंधित भाषा का कोश और

नियम भाषाभाषी के मस्तिष्क में अमूर्त रूप से स्थापित रहते हैं। नियमों की इस व्यवस्था में स्वनिमिक, रूपिमिक, वाक्यीय एवं आर्थी सभी प्रकार की उपव्यवस्थाएँ सम्मिलित होती हैं। इन सभी का संपूर्ण ज्ञान ही व्यक्ति की भाषा क्षमता है।

भाषा दक्षता के अंतर्गत व्यक्ति की ऐसे वाक्य बनाने या समझने की वह कुशलता भी आ जाती है, जिसका उसने कभी प्रयोग न किया हो। अपनी भाषा क्षमता के आधार पर भाषाभाषी यह बताने के सक्षम होता है कि उसके सम्मुख प्रस्तुत कोई वाक्य उसकी भाषा का नहीं है। उदाहरण के लिए हिंदी के संदर्भ में निम्नलिखित दो वाक्यों को देखें-

- मैं भारतीय हूँ।
- वतशिवा इंदोजिन देसु।

ये दोनों वाक्य देवनागरी में लिखे गए हैं, किंतु कोई भी हिंदी भाषी इन्हें देखकर बता देगा कि दूसरा वाक्य हिंदी भाषा का नहीं है।

इसी प्रकार भाषायी दक्षता के अंतर्गत संदिग्धार्थक वाक्यों का अर्थ समझना, व्याकरणिक या आर्थी दृष्टि से अशुद्ध वाक्यों को पहचान लेना आदि भी आते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी के संदर्भ में निम्नलिखित दो वाक्यों को देखें-

- मैं भारतीय हूँ।
- मैं भारतीय है।

कोई भी हिंदी भाषी बता देगा कि दूसरा वाक्य अशुद्ध (व्याकरण की दृष्टि से) है।

भाषा व्यवहार–किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में किया जाने वाला भाषा का वास्तविक व्यवहार भाषा व्यवहार है। इसमें व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रयोग, वाचन, शैली आदि सभी आ जाते हैं। उदाहरण के लिए एक हिंदी भाषी निम्नलिखित तीन में से किसी भी वाक्य का प्रयोग पुस्तक माँगने के लिए कर सकता है-

- मुझे पुस्तक दीजिए।
- मुझे किताब दीजिए।
- मुझे बुक दीजिए।

इनमें एक ही वस्तु के लिए तीन शब्दों का ज्ञान होना व्यक्ति की 'भाषायी दक्षता' है, किंतु वह इनमें से किसी एक ही प्रकार के वाक्य या शब्द का प्रयोग करते हुए व्यवहार करता है। यह उसका भाषा व्यवहार है।

भाषा व्यवहार में व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले विशेष प्रयोग, त्रुटियाँ, अभिरुचि और संदर्भ आदि सभी भाषायी और मनोवैज्ञानिक तथ्य आ जाते हैं। भाषा व्यवहार व्यक्ति के द्वारा होता है। इसमें व्यक्ति स्वयं शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रयोग, वाचन, शैली आदि का उपयोग करता हैं।

भाषा व्यवस्था और भाषा-व्यवहार–आधुनिक भाषा-विज्ञान के जनक सस्यूर ने भाषा-अध्ययन के दो आयामों की चर्चा की–भाषा व्यवस्था और भाषा-व्यवहार। चॉम्स्की ने भाषा-व्यवस्था के समानांतर जो संकल्पना प्रस्तुत की उसे आज 'भाषिक क्षमता' के नाम से जाना जाता है।

1. सस्यूर की 'भाषा-व्यवस्था'–सस्यूर का मानना है कि भाषा सामाजिक वस्तु है। सामाजिक होने के कारण उसका एक पक्ष संस्थागत है, जिसे उन्होंने 'भाषा-व्यवस्था' की संकल्पना द्वारा अभिव्यक्त किया। भाषा-व्यवस्था सामाजिक संस्थान की तरह एक सामाजिक व्यवस्था है। भाषा व्यक्ति की निजी इच्छा या प्रतीकों के अपने माध्यम (उच्चारण या लेखन) से नियंत्रित नहीं होती। वह व्यक्ति से जुड़ी रहकर भी व्यक्ति की अपनी सीमा से मुक्त होती है, इसी कारण भाषा अपनी प्रकृति में समरूपी होती है। भाषा व्यवस्था अमूर्त और रूपपरक है।

सस्यूर ने भाषा-व्यवस्था को मूल्यपरक माना और इसी कारण उसे शुद्ध 'रूप' के संदर्भ में देखा। उनका कहना है कि भाषा के शुद्ध रूप में केवल 'मूल्य' होते हैं। इस तथ्य को उन्होंने शतरंज के खेल द्वारा समझाया। शतरंज में प्रत्येक मोहरे का एक 'मूल्य' होता है, जैसे 'प्यादा' एक घर चलता है और दूसरे मोहरे को तिरछा मारता है। 'घोड़ा' ढाई घर चलते समय किसी दूसरे मोहरे को फांद भी सकता है, आदि। मोहरे आकार में छोटे-बड़े हो सकते हैं, उनका निर्माण लकड़ी, प्लास्टिक, धातु आदि से किया जा सकता है। रंग-रूप, आकार या मोहरे के निर्माण के लिए उपयोग की गई सामग्री के आधार पर एक मोहरे को दूसरे मोहरे से अलग नहीं किया जाता। एक मोहरा दूसरे मोहरे से 'मूल्य' के आधार पर अलग है। यदि एक मोहरा खो जाए तो उसके स्थान पर अलग दिखाई देने वाली किसी अन्य वस्तु को उस मोहरे का 'मूल्य' देकर काम चला लेते हैं। जिस प्रकार शतरंज का खेल एक व्यवस्था है, उसी प्रकार भाषा की किसी ध्वनि की सार्थकता उसके मूल्य में होती है, जिसे भाषा की अपनी व्यवस्था उसे प्रदान करती है।

इसी तरह भाषा व्यवस्था की प्रवृत्ति को भी समझा जा सकता है। किसी भाषा की कोई ध्वनि अथवा उसके नाम की सार्थकता भौतिक उपादानों मे न होकर मूल्य में होती है। जिसे भाषा की व्यवस्था उसे प्रदान करती है। इसलिए हिन्दी में नीला, संस्कृत में नील, अंग्रेजी में 'ब्ल्यू' ये विधान है जो मूल्य को दर्शाते हैं।

2. सस्यूर का 'भाषा-व्यवहार'–सस्यूर का यह कहना भी है कि भाषा अपनी प्रकृति में सतत् परिवर्तनशील है। भाषा की परिवर्तनशीलता को उन्होंने 'भाषा-व्यवहार' की संकल्पना द्वारा परिभाषित किया। जिस प्रकार मानव-संबंधों के अनेक रूप होते हैं और मानव की व्यक्तिगत आवश्यकताओं में विविधता होती है, उसी प्रकार भाषा-व्यवहार 'विषमरूपी' होता है। वैयक्तिक संबंधों से जुड़े होने के कारण वह भाषा का व्यष्टि-रूप हैं। जो हम बोलते या सुनते हैं वह 'भाषा व्यवहार' है। 'भाषा-व्यवहार' 'भाषा-व्यवस्था' का अभिव्यक्त रूप है। अलग-अलग संदर्भों और भूमिकाओं में व्यक्ति की भाषा में परिवर्तन आता रहता है। उदाहरण के रूप में अगर हमारे सामने ऐसा व्यक्ति है जो हमारे लिए सम्माननीय है या जिसका सामाजिक स्तर हमसे ऊँचा है तो उसे बैठने के लिए हम कहेंगे-'आइए बैठिए'। अगर उसका सामाजिक स्तर हमसे नीचा है तो हम कहेंगे–'तू बैठ'। वक्ता या श्रोता की भूमिका और देश-काल की परिस्थितियों के दबाव के कारण भी भाषा में परिवर्तन होता है। इसी कारण भाषा व्यवहार अपनी प्रकृति में नवप्रवर्त्तनकारी (Innovative) होता है।

चॉम्स्की ने 'भाषा-व्यवहार' (Parole) के समानांतर जो संकल्पना प्रस्तुत की, उसे आज 'भाषिक क्षमता' या 'भाषायी सम्पादन' कहा जाता है। भाषिक व्यवहार, भाषिक ज्ञान का किसी निश्चित स्थान और समय पर निश्चित प्रयोग है। चॉमस्की के अनुसार भाषिक व्यवहार भाषा के शुद्ध रूप का दूषित एवं विकृत प्रतिफलन होता है।

'भाषा-व्यवहार' का एक ढाँचा होता है, जिसके कम-से-कम दो भाग होते हैं। एक प्रेषण (वक्ता) का ढाँचा, दूसरा (श्रोता) ग्रहण का ढाँचा। 'भाषा-व्यवस्था' की आवृत्ति नहीं होती है। अगर एक वाक्य असंख्य बार बोला जाए तो 'भाषा-व्यवस्था' की दृष्टि से वह एक वाक्य होता है, जबकि 'भाषा-व्यवहार' की दृष्टि से असख्य वाक्य होते हैं लेकिन ढाँचा बनाते समय हम उसका सामान्यीकरण कर लेते हैं। 'भाषा-व्यवस्था' में ऐसा साधु वाक्य संभव है जिसका अन्त न हो लेकिन 'भाषा व्यवहार' में ऐसा संभव नहीं हैं। कई मिनट में समाप्त होने वाला वाक्य 'भाषा व्यवस्था' में सम्भव है, पर उसे बोलना या समझना कठिन होता है। प्रेषण और ग्रहण की दृष्टि से वक्ता का वाग्यंत्र और श्रोता का श्रवण-यंत्र 'भाषा व्यवहार' को प्रभावित करने वाला तत्व है। वाग्यंत्र के कारण ही व्यक्ति-विशेष की पहचान होती है। 'श्रवण-यंत्र' में खराबी होने से 'भाषा-व्यवहार' प्रभावित होता है। स्मरण शक्ति की सीमा भी 'भाषा-व्यवहार' को प्रभावित करती है। लिखित व पठित रूप में इस शक्ति की सीमा कुछ बढ़ जाती है जबकि बोलते या सुनते समय इसकी सीमा कुछ कम हो जाती है। परिवेश का प्रभाव भी 'भाषा-व्यवहार' पर पड़ता है। शोर के समय हम ठीक तरह से नहीं सुन पाते।

3. चॉम्स्की की 'भाषिक क्षमता'–अमरीकी भाषा वैज्ञानिक चॉम्स्की ने भाषा-व्यवस्था के समानांतर जो संकल्पना प्रस्तुत की उसे आज 'भाषिक क्षमता' के नाम से जाना जाता है। 'भाषिक क्षमता' व्यक्ति के चेतन एवं अवचेतन में स्थित वह भाषा-ज्ञान है, जिसके सहारे वह भाषा बोलता और समझता है। किसी भाषा की ध्वनिक आकृति तथा अर्थ को निर्धारित करने वाली व्यवस्था को आत्मसात करना ही 'भाषायी क्षमता' है।

निष्कर्ष–सस्यूर के अनुसार 'भाषा-व्यवस्था' और 'भाषा-व्यवहार' की परिभाषा एक दूसरे का संदर्भ ले कर ही की जा सकती है। भाषा तभी जीवंत मानी जा सकती है जब भाषा के ये दोनों पक्ष द्वन्द्वात्मक प्रकृति की स्थिति में हों। 'भाषा-व्यवस्था' और 'भाषा-व्यवहार' युग्म की सार्थकता स्वीकार करने के बाद भी सस्यूर ने भाषा-विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र के लिए समरूपी 'भाषा-व्यवस्था' को ही स्वीकार किया। 'भाषा-व्यवस्था' का अध्ययन करने के लिए सामग्री 'भाषा-व्यवहार' से ही प्राप्त होती है।

भाषा व्यवहार, भाषा व्यवस्था का व्यक्त रूप होता है। भाषा व्यवस्था का प्रयोग करने वाला वक्ता अपनी अनुभूतियों, भावों, मतों को व्यक्त करने के लिए करता है। इससे व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यह भाषा का व्यक्तिगत रूप है। इस रूप में वक्ता अपने संदर्भ, देश-काल, परिस्थिति के अनुरूप भाषा व्यवस्था में परिवर्तन करता है। यह रूप अभिव्यक्ति परक, मूर्त और वैयक्तिक, यथार्थ युक्त होता है। भाषा की जीवंतता का लक्षण है कि भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार द्वंद्वात्मक प्रकृति में हो। भाषा व्यवहार के कारण ही भाषा में जीवंतता और परिवर्तन तथा विकास संभव है।

❐

9 **भाषा-व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? भाषा-व्यवस्था में व्याकरणिक कोटियों की उपयोगिता/भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।**

उत्तर–भाषा और समाज दोनों अभिन्न हैं। भाषा मनुष्य की सर्वोत्तम उपलब्धि है। भाषा के ही माध्यम से मनुष्य सामाजिक बना है। मनुष्य ने भावों के आदान-प्रदान को व्यवस्थित करने के लिए भाषा को व्यवस्थित किया है। इस प्रकार मनुष्य एक ओर भाषा को व्यवस्था प्रदान करता है, तो दूसरी ओर भाषा का औचित्यपूर्ण प्रयोग करता है। भाषा-व्यवस्था यदि व्याकरण पर आधारित होती हैं तो भाषा-व्यवहार लोक-सम्मति पर गतिशील होता है। भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं।

भाषा व्यवस्था–भाषा को व्यवस्थित करनेवाला शास्त्र 'व्याकरण' है। विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के आधार पर भाषा को व्यवस्थित रूप मिलता है। इसमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक व काल आदि प्रमुख व्याकरणिक कोटियाँ हैं। स्पष्ट भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा की व्यवस्थित और अनुकूल रचना आवश्यक है। इस प्रारूप के लिए विभिन्न व्याकरणिक कोटियों का ध्यान रखना अनिवार्य है।

विभिन्न पदों में व्याकरणिक कोटियों की योजना–वाक्य भाषा की पूर्ण सार्थक इकाई है। जब वाक्य में योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति गुण सम्पन्नता होती है, तभी वाक्य का व्यवस्थित रूप सामने आता है। इन्हीं संदर्भों में व्याकरणिक कोटियों की उपयोगी भूमिका होती है।

(1) लिंग व्यवस्था–वाक्य रचना के लिए पद में विभिन्न लिंगों की भाषायी योजना की जाती है। जब वाक्य की रचना की जाती है, तो एक पद के अनुरूप दूसरे पद में लिंग की योजना की जाती है; यथा–'छात्र' एक शब्द है। यह पद सृजन में पुल्लिंग हो सकता है या स्त्रीलिंग रूप में 'छात्रा' हो सकता है। जब छात्र/छात्रा संज्ञा शब्द को उद्देश्य के रूप में प्रयोग करते हैं, तो इसी के अनुरूप क्रिया की व्यवस्था करनी होती है, जैसे-

- अखिल घर जा रहा है। अखिल घर जा रहा था। अखिल घर जा रहा होगा।
- स्वाति घर जा रही है। स्वाति घर जा रही थी। स्वाति घर जा रही होगी।

प्रथम तीन वाक्यों में 'अखिल', उद्देश्य और कर्त्ता पद के अनुसार क्रिया 'जा रहा है', 'जा रहा था' और 'जा रहा होगा' में पुल्लिंग व्याकरणिक कोटे की व्यवस्था की गई है, तो अन्य तीन वाक्यों में 'स्वाति' पद के अनुसार 'जा रही है', 'जा रही थी' और 'जा रही होगी' स्त्रीलिंग क्रिया पद की व्यवस्था की गई है।

(2) वचन व्यवस्था–वाक्य में एक पद के अनुसार अन्य पदों की व्यवस्था की जाती है। इसे अन्विति की संज्ञा दी जाती है। वाक्य में वचन अन्विति अनिवार्य होती है। हिन्दी में वचन-व्यवस्था संस्कृत से कहीं सरल है क्योंकि संस्कृत में एकवचन और बहुवचन के साथ द्विवचन की भी व्यवस्था है। इस व्यवस्था के अनुरूप वाक्य के पदों की योजना अपेक्षित होती है, जैसे-

- बच्चा बहुत देर से हँस रहा है। बच्चा बहुत देर से हँस रहा था। बच्चा बहुत देर से हँस रहा होगा।
- बच्चे बहुत देर से हँस रहे हैं। बच्चे बहुत देर से हँस रहे थे। बच्चे बहुत देर से हँस रहे होंगे।

यहाँ प्रारम्भिक तीन वाक्यों में बच्चा एकवचन कर्त्ता पद के अनुरार 'हँसना' क्रिया से एकवचन पदों–'हँस रहा है; हँस रहा था, हँस रहा होगा' की रचना की गई है। उत्तरांश के तीन वाक्यों में कर्त्ता पद 'बच्चे' बहुवचन के अनुसार बहुवचन क्रिया पदों–'हँस रहे हैं', 'हँस रहे थे' और 'हँस रहे होंगे' की योजना की गई है। इस **व्यवस्था** के विपरीत पदों का प्रयोग वाक्य रचना के लिए अनिवार्य है।

(3) पुरुष व्यवस्था–संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में तीन पुरुषों की व्यवस्था है। दोनों भाषाओं की पुरुष-व्यवस्था में चिन्तन और नामकरण की भिन्नता अवश्य है। संस्कृत में प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष नाम था। इस व्यवस्था में प्रथम पुरुष में विधाता (वह) को भी रखने में सर्वोपरि महत्व था। मध्यम पुरुष सामने स्थित व्यक्ति के लिए और उत्तम पुरुष अपने लिए था। हिन्दी में आधुनिकता का प्रभाव है, अतः उत्तम पुरुष (मैं, हम) को सर्वोपरि (उत्तम) स्थान दिया गया। मध्यम पुरुष को पूर्ववत् मध्यम स्थिति में रखा गया है। हिन्दी में प्रथम पुरुष को दूरी बनाते हुए अन्य पुरुष कह दिया गया है।

संस्कृत व्यवस्था	**हिन्दी व्यवस्था**
प्रथम पुरुष (सा, ते, ता:)	उत्तम पुरुष (मैं, हम)
मध्यम पुरुष (त्वं, युवाम्, यूयम्)	मध्यम पुरुष (तू, तुम, आप)
उत्तम पुरुष (अहं, आवाम्, वयम्)	अन्य पुरुष (वह, वे)

वाक्य-रचना में पुरुष व्याकरणिक कोटि की अनिवार्यता है। इसके अभाव में वाक्य-रचना सम्भव नहीं होगी। पुरुष-अन्विति के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

(क) उत्तम पुरुष–*मैं* निखिल के साथ बात कर रहा था। ***मेरा*** जिला भिवानी है। ***हम*** खाना खा चुके हैं।

(ख) मध्यम पुरुष–*तू* कहाँ जा रहा है? ***तुम*** क्या कर रहे हो? ***आप*** क्या कर रहे हैं?

(ग) अन्य पुरुष–*वह* क्या पढ़ रहा है? ***वे*** घर जा रहे हैं। ***यह*** खेल रहा है।

इन वाक्यों में उत्तम पुरुष (मैं, मेरा, हम), मध्यम पुरुष (तू, तुम, आप) और अन्य पुरुष (वह, वे, यह) के अनुरूप अन्य पदों की व्यवस्था की गई है।

यहाँ ध्यातव्य है कि वाक्य में एक पद के अनुरूप विभिन्न व्याकरणिक कोटियों की समन्वित योजना होती है; यथा–'प्रदीप घर जा रहा है' वाक्य में प्रदीप पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष व्याकरणिक योग्यता-सम्पन्न कर्त्ता (संज्ञा) पद है। इसके ही अनुरूप 'जा रहा है' एकवचन, अन्य पुरुष और वर्तमान कालिक क्रिया पद है।

❐

10 भाषा-व्यवहार के अन्तर्गत भाषिक प्रयोग एवं शैली की समीक्षा कीजिए।

अथवा

भाषा-प्रयोग की विविध दिशाओं और शैलियों को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—भाषा-व्यवहार का सम्बन्ध भाषा-प्रयोग से होता है। इस विषय में हम यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि व्याकरण-समस्त वाक्य की लोक-स्वीकृति है या नहीं? वाक्य के व्याकरण सम्मत होने के साथ उसका लोक-स्वीकृत होना अनिवार्य है। वास्तव में भाषा-व्यवस्था का सीधा-सम्बन्ध भाषा की संरचना से है, तो भाषा-व्यवहार का सम्बन्ध भाषा के संरचनात्मक स्वरूप के औचित्य से है।

भाषा-व्यवस्था में स्पष्ट उल्लेख है कि विशेष्य के अनुरूप उसके साथ विश्लेषण प्रयुक्त होता है। 'गोरा लड़का', 'गोरी लड़की', 'साँवला लड़का', 'साँवली लड़की' भाषा-व्यवस्था के अनुसार लिंग और वचन व्याकरणिक कोटियों के अनुरूप है और भाषा-व्यवहार में औचित्यपूर्ण है। 'बैंगनी लड़की' 'नीला लड़का' में व्याकरणिक कोटियों की अन्विति है, किन्तु लोक-स्वीकृति सम्भव नहीं है। इस प्रकार भाषा की तीन स्थितियाँ सम्भावित हैं-

1. भाषा व्यवस्थानुरूप किन्तु लोक-सम्मत (भाषा-प्रयोग) नहीं
2. भाषा व्यवस्थानुरूप नहीं, किन्तु लोक-सम्मत (भाषा-प्रयोग)
3. भाषा व्यवस्थानुरूप और लोक-सम्मत (भाषा-प्रयोग)

इस संदर्भ से हम अध्ययन करते हैं कि कोई वाक्य संरचनात्मक (भाषा-व्यवस्था) की दृष्टि से कितना अनुकूल है। लोक-व्यवहार (लोक-सम्मत) किस सीमा तक मान्य और ग्राह्य है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि वाक्य संरचना वैज्ञानिक मान्यताओं और लोक-व्यवहार की दृष्टि से अतिक्रमण तो नहीं हो रहा है।

भाषा प्रयोग और शैली—भाषा-प्रयोग को कुछ प्रमुख दृष्टियों में इस प्रकार विश्लेषित कर सकते हैं-

1. भावात्मकता—विशेष भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा-व्यवस्था में नया रूप अपनाया जाता है। 'खाना' और 'भोजन' दोनों पर्यायी शब्द है। भोजन को महत्व देने के कारण इसका प्रयोग आदरार्थक संदर्भ में किया जाता है। जब कि 'खाना' प्रयोग सामान्य रूप में किया जाता है। इतना ही नहीं 'खाना' और 'भोजन' के साथ प्रयुक्त क्रियाओं में भिन्नता द्रष्टव्य है-

- खाना खाओ (स्वीकार्य-लोक-सम्मत)
- खाना कीजिए (अस्वीकार्य-लोक-सम्मत)
- भोजन खाओ (अस्वीकार्य-लोक-सम्मत)
- भोजन कीजिए (स्वीकार्य-लोक-सम्मत)

इसी प्रकार 'गंगा' और 'नाला' दो शब्द हैं। इनके साथ प्रयुक्त अन्य पदों की व्यवस्था और व्यवहार (लोक-सम्मत) देख सकते हैं-

- यह गंगा जल (गंगा का जल) है (स्वीकार्य)
- यह नाले का जल है। (अस्वीकार्य)
- यह नाले का पानी है। (स्वीकार्य)
- यह गंगा पानी है। (अस्वीकार्य)

विशेष भावाभिव्यक्ति के संदर्भ में साहित्यकार के वाक्यों को देखें, तो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध लगते हैं। किन्तु नए संदर्भ, गंभीर भावाभिव्यक्ति में वाक्यों का स्वरूप अनुकूल सिद्ध होता है; यथा-

- कलियों ने आँखें खोली।
- फूलों की हँसी उपवन में बिखरी।
- वह विरह से अपना जीवन तपा रही है।

इस प्रकार विशेष भावाभिव्यक्ति में भाषा-व्यवहार का रूप सामने आता है।

2. **सामाजिक सम्बन्ध**–भाषा के व्याकरण से समाज-भाषा विज्ञान की व्यवस्था बहुत कुछ भिन्न होता है। किसी शब्द का प्रयोग समाज के किसी संदर्भ में (किससे, कौन, किस समय, किस स्थान पर) किया जा रहा है, इसका विशेष महत्व होता है। व्याकरण के अनुसार, मध्यम पुरुष एक वचन के लिए 'तू, तुम, आप' शब्दों के प्रयोग होते हैं। 'तू' छोटे के लिए अथवा प्रेम, क्रोध और भक्तिभाव में किया जाता है। 'तुम' समानता में और 'आप' उम्र, बुद्धि योग्यता आदि संदर्भों में बड़े के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे–तू आ जा। आप आ जाइए या आप आइए।

ये दोनों वाक्य भाषा-व्यवस्था के अनुसार शुद्ध है, किन्तु सामाजिक सम्बन्धों को ध्यान में रखकर प्रयोग करना अनिवार्य है। वाक्यों की स्वीकार्य-अस्वीकार्य स्थिति द्रष्टव्य है-

- मालिक ने नौकर से कहा–'तू घर चला जा'। (स्वीकार्य)
- नौकर ने मालिक से कहा 'तू घर चला जा' (अस्वीकार्य)

भाषा-प्रयोग में सामाजिक सम्बन्धों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि कोई कर्मचारी अपने अधिकारी के घर जाने पर अधिकारी के पर्याप्त छोटे बच्चे से पूछे, आप का क्या नाम है? तो वाक्य स्वीकार्य है। जब कि 'आप' शब्द व्याकरण की दृष्टि से बड़े (उम्र, बुद्धि या ज्ञान संदर्भ) के प्रति किया जाता है।

3. **भाषिक भंगिमा**–भाषा प्रयोक्ता की मानसिकता भी भाषा-प्रयोग को दिशा प्रदान करती है। इस संदर्भ में भाषा-प्रयोक्ता परिवेश, विषय, श्रोता आदि के आधार पर विशेष भंगिमा अपनाता है और पदों या वाक्य को नया रूप मिलता है; **यथा**-

आ	जा।
आओ	जाओ।
आइए	जाइए।
आ जाइए	चले जाइए।
पधारिए भाग जाइए।	

अन्य उदाहरण-

आप मेरे घर आएँ।	आप मेरे घर आइए।
आप मेरे घर आइए ना।	आप मेरे घर आएंगे ना।
आप मेरी कुटिया पर पधारें।	आप मेरे गरीबखाने तशरीफ फरमाइए।
आप मेरी कुटिया को पवित्र कीजिएगा।	

इस प्रकार भाषा प्रयोक्ता भाव-भंगिमा के आधार पर वाक्यों की विशेष रचना करता है।

4. **व्यंजना आधार**–जब शब्द विशेष के अर्थ की विशेष महत्ता न होकर प्रयोग के आधार पर विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है, तो व्यंजनात्मक रूप सामने आता है। भाषायी प्रयोग की परिपक्वता पर ऐसी व्यंजनात्मक सामने आती है। यह भाषा व्यवहार विशेष प्रभावोत्पादक होता है।

घर-

(क) यह घर पत्थर का बना है। (मकान-स्थूल रूप)

(ख) आप का घर कहाँ है? (निवास स्थान)

(ग) दंगे में उसका घर उजड़ गया। (परिवार)

खाना-

(क) खाना खाना ही पड़ेगा।

(ख) कसम खानी ही पड़ेगी।

(ग) गम खाना ही पड़ेगा।

(घ) ठोकर खानी ही पड़ेगी।

इस प्रकार शब्दों को विशेष व्यंजना हेतु भिन्न-भिन्न पदों के साथ प्रयुक्त किया जाता है इससे गंभीर और प्रभावी अभिव्यक्ति होती है।

5. मुहावरेदार प्रयोग–मुहावरे के प्रयोग से भाषा को नया और चामत्कारिक रूप मिल जाता है, साथ ही अभिव्यक्ति भी अधिक प्रभावशाली हो जाती है। मुहावरे के मूल स्वरूप को बदलना भी सम्भव नहीं होता, क्योंकि इनको लोक-सम्मति मिली होती है; यथा–'आँख लगना' के स्थान पर 'नेत्र लगना' 'चक्षु लगना' या 'नयन लगना' नहीं कह सकते हैं। मुहावरे के प्रयोग में भी विशेष भाव-भांगिमाएँ भी अभिव्यंजित होती है; यथा–

आँख लगना–

(**क**) आँख लगना (किसी की) उसकी पत्थर की आँख लग गई।

(**ख**) आँख लगना (नींद में) बैठे-बैठे उसकी आँख लग गई।

(**ग**) आँख लगना (किसी से) उसकी और पल्लवी की आँख लग गई।

(**घ**) आँख लगना (किसी ओर) उसकी आँखें लक्ष्य की ओर लगी हैं।

इस प्रकार मुहावरे के आधार पर भाषा में चामत्कारिक स्वरूप सामने आता है।

6. शैली–भाषा-व्यवहार में शैली की विशेष भूमिका होती है। हिन्दी की सामान्य शैली के साथ उर्दू, हिन्दुस्तानी और संस्कृतनिष्ठ शैलियों के रूप देख सकते हैं।

- **उर्दू शैली** में अरबी-फारसी बहुल शब्दावली को नागरी लिपि में लिखते हैं या बोलते हैं, जैसे–"फ़रमाइए ज़नाब, पान पेश है।"
- **हिन्दुस्तानी शैली** में हिन्दी के तद्भव शब्दों को विशेष महत्व देते हुए अरबी-फारसी शब्दों का भी उपयुक्त प्रयोग किया जाता है। इसमें क्रिया का प्रयोग प्रायः तद्भव शब्दावली पर आधारित होता है, जैसे–"कर्ज़ लौटाकर फ़र्ज पूरा किया"।
- **संस्कृतनिष्ठ शैली** में तत्सम् शब्दों के साथ तद्भव शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग होता है। सामासिक शब्दों की बहुलता होती है, जैसे–

  "वार्षिकोत्सव में अभ्यागत का स्वागत कीजिए।"

  "अतिथि देवो भव का विचार हृदयंगम योग्य है।"

  "उदयाचल से उदित भगवान भास्कर की रक्तिम मधु किरणें कितनी मोहक हैं।"

इस प्रकार शैली आधार पर भाषा के व्यावहारिक रूप की विशेषता सामने आती है।

7. भाषा संस्कार–वर्तमान समय में भाषा को जनसामान्य या आँचलिक जीवन और आयातित अर्थात् पाश्चात्य आँधी से प्रभावित देख सकते हैं। जहाँ पर जनसामान्य का सहज जीवन दर्शाना होता है। वहाँ भोजपुरी, अवधी और हरियाणवी आदि लोक-भाषाओं के पुट का उपयोग किया जाता है; यथा–

- नौकर विवश होकर बोला "मैं अपने घर जा रहा हूँ बाबू जी"। (मानक हिन्दी)।
- नौकर विवश होकर बोला "हम अपने घर जात अही बाबू।" (अवधी)
- नौकर बोला, "वो घरां गया।" (हरियाणवी)
- नौकर बोला, "वह घर गया।" (मानक हिन्दी)

यह निर्विवाद तथ्य है कि लोक-भाषा में जो सहजता, भाव-प्रवणता और सटीक अभिव्यक्ति है, वह मानव-भाषा में सम्भव नहीं होती है। इस प्रकार इससे भाषा को विशेष संस्कारित रूप मिलता है।

वर्तमान समय में पाश्चात्य आँधी में भाषा का विशेष रूप उभर रहा है। जिसमें व्याकरण के सिद्धान्त ही नहीं, भाषा-व्यवहार भी अस्त-व्यस्त हो रहे हैं। यथा–अभिवादन में प्रणाम, चरण-स्पर्श, नमस्कार, नमस्ते, राम-राम, राधे-राधे आदि के प्रयोग होते रहे हैं। अब गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग, टाटा, बॉय-बॉय आदि सब सिमट कर 'हाय! हाय!' में समाहित हो गए हैं।

मीडिया से पसरती भाषा-संस्कृति के स्वरूप से सभी परिचित हो चुके हैं–सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों में योजक शब्दों का अंग्रेजी रूप विशेषरूप से उल्लेखनीय है-

- "मैं वहाँ गई थी बट जल्दी लौट आई।"
- "मैं कह रहा हूँ, एण्ड चलूँगा भी।" आदि।

इस प्रकार प्रत्येक भाषा की अपनी व्यवस्था होती है और भाषा-प्रयोग की विविध दिशाएँ होती हैं जिसके आधार पर विभिन्न भावों के अनुकूल अभिव्यक्ति होती है।

❐

भाषा की क्षमता को प्रभावित करने वाले तत्व (आयु, लिंग, शिक्षा और वर्ग)

11 भाषा की क्षमता को प्रभावित करने में आयु, लिंग, शिक्षा और वर्ग की क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्रत्येक प्राणी के जीवन में जैव-सामाजिक व्यवहार देखने को मिलते हैं लेकिन मानव के जीवन में सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार देखने को मिलता है जो उसे अन्य प्राणियों से विशिष्ट बनाता है। यह अंतर प्रमुख रूप से भाषा के द्वारा निर्मित होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को समाज के परिवेश में समझा जा सकता है। प्रतीकों का आदान-प्रदान या सम्प्रेषण मानव समाज का विशेष गुण है। प्रत्येक भाषा केवल मानव की निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं होती अपितु वह परिवार, समाज, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीय अस्मिता, उसके गौरव और उसके भावी विकास की पथ-प्रदर्शक भी होती है। भाषा, समाज और व्यक्ति के मध्य आकर उसे जोड़ने का काम करती है। वह सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है और व्यक्ति के समाजीकरण का मूल माध्यम होती है। कोई भी व्यक्ति भाषा के माध्यम से ही अपनी पहचान बनाता है।

यही कारण है कि आयु, लिंग, वर्ग, शिक्षा, धर्म, संप्रदाय, जातीयता, प्रदेश, राज्य और राष्ट्र इत्यादि की तरह ही भाषा भी व्यक्ति और समाज की अस्मिता का प्रमुख आधार होती है। व्यक्तित्व के उन प्रभावित करने वाले तत्वों को देख सकते हैं जो भाषायी अस्मिता से जुड़े हुए हैं-

1. आयु–आयु का प्रभाव व्यक्ति की भाषा पर अवश्य पड़ता है। छोटे बड़ों की नक़ल करते हुए भाषा व्यवहार सीखते हैं और बड़े भाषा को नए प्रयोगों से बदलते रहते हैं। बच्चों में जहाँ लिंग और बाद में शाब्दिक-सन्दर्भ विकसित होता जाता है वहीं बड़ो में भाषा का व्यवहार जीवनयापन, शक्ति, अनुभव और बौद्धिकता से जुड़ा होता है। बड़ों की भाषा में सामाजिक कर्त्तव्यों की बहुलता होती है तो युवाओं में करियर, मनोरंजन और शिक्षा का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। भाषा व्यवहार के ही आधार पर समाज किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को अंतर्मुखी तो किसी को बहुर्मुखी घोषित करता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुणों को उसके साथ बातचीत कर जाना जा सकता है।

2. लिंग–भाषा में लिंग केवल व्याकरण का विषय नहीं है बल्कि समाज में अपनी अस्मिता का भी प्रश्न है। आधुनिक चिन्तक इसे सेक्स और जेंडर के दोहरे रूप में देखते हैं। एक प्राकृतिक है दूसरा सांस्कृतिक। एक तीसरा वर्ग भी है जिसे लगातार इन दो वर्गों के बीच अपनी जगह तलाशनी पड़ती है क्योंकि वे न पूर्ण स्त्री है न पुरुष, तो उनके सामने भाषायी दिक्कतें आती हैं। इसी कारण वे व्यक्तित्व से लेकर सामाजिक अस्मिता तक प्रभावित होते हैं।

स्त्री और पुरुष वर्ग की भाषा का भी भाषायी पहचान की दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है। प्रसिद्ध भाषाविद् लेकऑफ का यह मानना है कि स्त्रियों का शब्द चयन पुरुषों से भिन्न होता है। उनके अनुसार, आकर्षक, मोहक, दैवीय, प्यारा, मधुर जैसे विशेषण साधारणतः केवल स्त्रियों द्वारा प्रयाग में लाए जाते हैं। पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की

भाषा अधिक विनम्र एवं मानक होती है तथा वे वर्जित एवं अश्लील शब्दों का भी कम प्रयोग करती है। इसलिए पुरुषों की भाषा कठोर और निर्णयात्मक तथा स्त्री की भाषा शिष्ट और विकल्पमूलक दिखाई पड़ती है। लिंग की असमानता सामाजिक है और यह नातेदारी में आ कर और भी जटिल हो जाती है। अपभाषा (गालियाँ), आदेश और संबोधन की शब्दावली के अध्ययन इस ओर स्पष्ट इशारा करते हैं। पुरुषप्रधान समाज में अपभाषा और गालियों के प्रयोग में स्त्री संबंधों और अंगों का अधिक प्रयोग होता है जो लैंगिक अस्मिता की टकराहट और वर्चस्व दिखाता है।

3. वर्ग–एक विशेष प्रकार की सामान लक्षणों वाली वस्तुओं का समूह वर्ग कहलाता है। यहाँ वर्ग का संबंध व्यक्ति के सामाजिक पक्ष से है। एक ही व्यक्ति अपने लक्षणों के आधार पर एक साथ एक ही समय में विभिन्न वर्गों में हो सकता है। वर्ग का मूल आधार भिन्नता है। जैसे उच्च-मध्य-निम्न वर्ग, शिक्षित और अशिक्षित वर्ग, पुरुष और स्त्री वर्ग, युवा और बुजुर्ग वर्ग, शहरी और ग्रामीण वर्ग, शासक और शासित वर्ग, बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्ग आदि। हर वर्ग की भाषा में कोई न कोई भाषायी भिन्नता देखने को मिलेगी।

दो अलग-अलग समाज के मध्य हम भाषा के आधार पर भी अंतर देख सकते हैं। विभिन्न वर्ग अपनी विशिष्ट भाषिक क्षमता, शब्दावली एवं भाषा-शैली के माध्यम से स्वयं की अस्मिता को उजागर कर देते हैं। उदाहरणस्वरूप समाज में निम्न एवं उच्च वर्ग की भाषा, शिक्षित एवं अशिक्षित वर्ग की भाषा, शहरी एंव ग्रामीण वर्ग की भाषा, अधिकारी एंव अधीनस्थ वर्ग की भाषा आदि को हम देख सकते हैं। इसी प्रकार आर्थिक रूप से निम्न वर्ग, मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की भाषाओं में अंतर देखने को मिलता है।

धर्म एवं जातीयता के आधार पर बनी अस्मिता भी महत्वपूर्ण होती है तथा इसका भाषा से गहरा जुड़ाव होता है। भारत में रहने वाले हिंदू-मुस्लिम एवं ईसाइयों की भाषा का अध्ययन करने पर हम देख सकते हैं कि हिंदी बोलते हुए हिंदुओं का झुकाव संस्कृत के प्रति, मुसलमानों का अरबी-फारसी के प्रति तथा ईसाइयों का अंग्रेज़ी के प्रति होता है। धर्म एवं जातिगत पहचान बनाए रखने के लिए ही अमेरिका में रहने वाला हिंदू परिवार विवाह के समय संस्कृत में मंत्रों का उच्चारण करवाता है। भाषा को किसी धर्म विशेष से जोड़कर हमेशा नहीं देखा जा सकता। बंग्लादेश में इस्लाम को मानने वाले बहुसंख्यक लोगों ने अरबी-फारसी अथवा उर्दू के स्थान पर बांग्ला भाषा को स्वीकार कर भाषा और धर्म के गहरे संबंध के मिथ को भी एक प्रकार से तोड़ा है।

4. शिक्षा–शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय परवेश के लिए अनुशासित करती है और उसे उसकी भूमिका को पहचान देने में मदद करती है। पियाज़े जैसे चिंतकों ने भाषा विकास को बौद्धिक विकास का ही तत्व माना क्योंकि जैसे-जैसे व्यक्ति का बौद्धिक विकास होता है भाषा का भी विकास होता जाता है। किसी व्यक्ति के भाषिक प्रयोग से पता लगाया जा सकता है कि वह शिक्षित है या अशिक्षित। एक शिक्षित व्यक्ति की भाषा जहाँ मानक भाषा पर आधारित होकर उसके कार्यक्षेत्र से जुडी होगी और प्रवृत्ति निर्णायक, केन्द्रीयकृत और बौद्धिक होगी। वहीं एक अशिक्षित की भाषा अपनी बोली की ओर झुकी होगी, उसकी भाषा में संभावना, विकल्प और धार्मिक प्रतीक अधिक होंगे। शिक्षा का कार्य ज्ञान और कौशल को व्यक्तित्व में शामिल कर देना है इसलिए इसे अनुशासन में देखा जाता है।

❒

12 बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में भाषा विकास की अवधारणा को मूल्यांकित कीजिए।

उत्तर–एक बालक की बौद्धिक क्षमता का आंकलन प्राय: उसके भाषा विकास से किया जाता है। भाषा को बौद्धिक विकास की सर्वाधिक उत्तम कसौटी माना गया है। बच्चे को सर्वप्रथम भाषा का ज्ञान परिवार से होता है। बालक परिवार के अन्य सदस्यों की वाणी को सुनकर उसका अनुसरण कर बोलने का प्रयास करता है। भाषा ज्ञान एक अर्जित कौशल है न कि जन्मजात। एक बच्चा ओठों, दांतों और तालु आदि वाक्यंत्रों से समीकरण (उचित

संयोजन) से बोलने का प्रयास शुरू करता है एवं अंततः बोलना सीख जाता है। बालक के बोलने की प्रक्रिया में अनुकरण, प्रयास एवं भूल, प्रेरणा, संबंधता आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारंभ में शिशु माता-पिता परिवारजन द्वारा बोले गए शब्दों का अनुसरण करता है फिर धीरे-धीरे उसे भाषा प्रयोग में आनंद आने लगता है। शिशु पहली बार में नाना, बाबा, पापा, दादा, काका जैसे शब्द बोलना प्रारंभ करता है। शिशु सर्वप्रथम स्वरों का एवं बाद में व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण करने में समर्थ होता है।

बाल्यावस्था एवं भाषा विकास–भाषा विकास के सन्दर्भ में हम यह देखते है कि भाषा विकास मानव जीवन के प्रारम्भ की एक प्रक्रिया है। एक शिशु 10 माह की अवस्था से बोलना प्रारम्भ करता है। बच्चों में ध्वनियों में विविधता पाई जाती है और वे बलबलाने में लगे रहते हैं। प्रारम्भ में बालक की क्रियाएँ रोना, अंग-हिलाना, बलबलाना आदि तक सीमित रहती हैं। शनैः शनैः बालक के शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता के साथ उसके बोलने की प्रक्रिया में वृद्धि हो जाती है। यह बात स्मरणीय है कि बोलने की जिस प्रक्रिया से बालक की आवश्यकताओं जैसे–प्यास हेतु 'पानी' भूख हेतु 'रोटी', उत्सर्जन हेतु 'पोट्टी' आदि की पूर्ति होती है जो कि प्रारंभ में वह अपने से बड़ों से सीखता है।

ई वी. हरलाक का मत है कि बालक के बोलने की प्रकिया पर माता-पिता की प्रसंशा एवं प्रेरणा का प्रभाव पड़ता है। बालक घर की अपेक्षा अपने समवस्यकों, बच्चों के सम्पर्क में आकर ज्यादा भाषा को सीखता है। इसका कारण यह है कि परस्पर व्यवहार हेतु उन्हें ज्यादा से ज्यादा बोलने की आवश्यकता होती है।

बालक में भाषा विकास की शुरुआत देखें तो जन्म लेने के तुरंत बाद उसका क्रन्दन (रोना) ही उसकी पहली भाषा होती है। 25 सप्ताह (लगभग 6 माह) के शिशु की भाषा में स्वरों की संख्या ज्यादा होती है। लगभग 10 महीने की अवस्था में बालक कुछेक पूर्ण शब्द बोलना सीखता है और बार-बार उन्हीं की पुनरावृत्ति करता है। एक शिशु की भाषा पर उसके परिवार की संस्कृति व शब्द सिखाने के ढंग का प्रभाव ज्यादा देखा जाता है।

- **भाषा पर आयु का प्रभाव**–शिशु के जन्म से लेकर 8 माह के अवस्था तक उसके पास शब्दों की संख्या शून्य होती है किन्तु 6 वर्ष की अवस्था तक उसके पास शब्दों की संख्या 2500 हो जाती है। सिस्यूर नामक विद्वान ने अपने अध्ययन के अनुसार अलग-अलग आयु स्तर में शब्दों की संख्या का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
- **भाषा पर वर्ग या समुदाय का प्रभाव**–एक बालक की भाषा के विकास पर परिवार, समुदाय, विद्यालय, सामाजिक परिस्थितियों एवं स्वयं शासक की बौद्धिक क्षमता का प्रभाव पड़ता है। वस्तुओं को देखकर उसका प्रत्यय ज्ञान स्थूल से सूक्ष्म की ओर तथा मूर्त अमूर्त की ओर होता है।
- **भाषा पर लिंग का प्रभाव**–एनास्टसी नामक विद्वान मानते हैं कि शैशव काल में लड़कियों का लड़कों की अपेक्षा ज्यादा भाषा विकास होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ बालकों के सीखने की गति में वृद्धि होती है। बाल्यकाल में बालक शब्द से लेकर वाक्य विन्यास तक की क्रियाएं सीख लेते हैं।

किशोरावस्था एवं भाषा विकास–किशोरावस्था में बालक में भाषा ज्ञान काफी विस्तृत हो जाता है। इस अवस्था में अनेक शारीरिक परिवर्तनों से जो संवेग उत्पन्न होते हैं। भाषा विकास भी उनसे प्रभावित होता है। किशोरों में साहित्य पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो जाती है। उनमें कल्पना शक्ति का विकास होने से वे कवि कहानीकार चित्रकार बनने लगते हैं। किशोर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु कविता, कहानी की रचना करने लगते हैं या चित्रों के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करते हैं। किशोरावस्था में लिखे प्रेम-पत्रों की भाषा में भावुकता मिश्रण होने उनमें प्रस्फुटन होने लगता है।

किशोर का शब्दकोश भी विस्तृत हो जाता है। वे कई प्रकार की गुप्त बातों का संप्रेषित करने हेतु कूट शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। भाषा के माध्यम से किशोर की संकल्पनाओं का विकास होता है। ये संकल्पनाएं उसके जीवन की तैयारी की प्रतीक होती हैं। भाषा के विकास का चिन्तन भी प्रभाव पर पड़ता है किशोरावस्था तक व्यक्ति जीवन में भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाए कैसे किया जाए आदि रहस्यों को जान जाता है।

❒

13 भाषा के विकास को प्रभावित करने वाले तत्व कौन-कौन से हैं? उनकी विवेचना कीजिए।

उत्तर–भाषा मानव संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है और इसका प्रभाव हमारे जीवन के हर पहलू में दिखता है। भाषा की क्षमता विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें आयु, लिंग, शिक्षा, और सामाजिक वर्ग प्रमुख हैं। इन कारकों का प्रभाव न केवल भाषा सीखने की क्षमता पर पड़ता है, बल्कि भाषा के उपयोग और उसकी दक्षता पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। एक बालक के भाषा विकास पर प्रभाव डालने वाले निम्न लिखित कारक हैं।

(1) माता पिता एवं पारिवारिक सदस्य–एक बालक के भाषा विकास पर प्रभाव डालने हेतु उसके माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। शैशवावस्था में बच्चों से वस्तुओं की जानकारी के लिए शुद्ध शब्दों का उच्चारण करना बहुत आवश्यक होता है। प्राय: यह देखा जाता है कि परिवार में शिशु को पानी के लिए 'मम' या 'मानी' जैसे शब्द सिखाते हैं जो गलत है। इसी तरह से परिवार के सदस्य ज्यादा से ज्यादा बालक को समय देकर उसके साथ उचित वार्तालाप करते रहते हैं तो ऐसे घरों के बालकों भाषायी विकास उत्तम ढंग से होता है।

(2) बालक का स्वास्थ्य–निश्चित ही बालक लम्बी बीमारी से या अक्सर स्वास्थ्य खराब रहने की वज़ह भाषा विकास में पिछड़ जाते हैं। लम्बी बीमारी की वज़ह से सम्पर्कजन्यता कम हो जाती है अर्थात बालक लोगों से कम मिलते-जुलते हैं जिससे भाषायी आदान प्रदान कम होने से वे भाषा विकास में पिछड़ जाते हैं। इसी के साथ कम सुनने की दशा में या वाणी दोष की अवस्था में भी भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है। बीमारियों की बजह से बालकों में शब्द भण्डार की कमी हो जाती है क्योंकि भाषा अनुकरण के माध्यम से सीखी जाती है और बालक को अनुकरण के अवसर बहुत कम प्राप्त होते हैं।

(3) बुद्धि लब्धि–बुद्धि तथा भाषा का बहुत गहरा संबंध है। भाषा-ज्ञान से ही या भाषा के स्तर से भाषा का पता लग जाता है। भाषा विकास तथा बुद्धि लब्धि का घनिष्ठ सम्बंध होता है जिस बालक की बुद्धि लब्धि अधिक होगी उसे बालक का भाषा विकास उत्तम कोटि का होगा। इसके विपरित कम बुद्धि लब्धि या मूर्ख बुद्धि वाले बालकों का भाषा विकास भी बहुत निम्न स्तर का होता है। यद्यपि बालक की आरंभिक अवस्था में भाषा का विकास उसकी बुद्धि का द्योतक है किंतु बाद के बालकों में बुद्धि का आंकलन मात्र भाषा विकास से नहीं किया जा सकता। प्रारंभिक अवस्था में माता-पिता या घर के सदस्यों का यह दायित्व है कि बालक के भाषा विकास में अपना सहयोग प्रदान करें।

(4) वाणी दोष (हकलाना)–एक बालक के वाणी दोष जैसे हकलाना, उच्च-निम्न स्तर हो जाना, वर्णों की सही ध्वनि न निकल पाना अर्थात् तुतलाना, पुरुषों की स्त्रियों के समान आवाज निकलना एवं स्त्रियों की पुरुषों के समान मोटी (भारी) आवाज निकलना, नाक से स्वर निकलना अर्थात नाक बिठाकर बोलना उसके भाषा विकास में बाधक बनते हैं। हकलाना एक वाणी दोष है और यह मानसिक अवस्था के कारण होता है। बालक जब स्वाभाविक रूप से शब्दोच्चारण पर जोर नहीं देता, तब उच्चारण संबंधी तन्त्र को अधिक शक्ति लगानी पड़ती है। फेफड़ों में हवा नहीं रहती, ऐसी स्थिति में उच्चारण दोष उत्पन्न होता है। खासकर जिन बालकों में किसी भी तरह का वाणी दोष पाया जाता है। तो वे समूह में या वार्तालाप के दौरान कम से कम बोलने का प्रयास करते हैं ताकि वह हँसी के पात्र न बनें। ऐसी स्थिति में जब वह भाषा का कम प्रयोग करते हैं तो उनका भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है।

(5) सामाजिक एवं आर्थिक स्तर–भाषा विज्ञानियों द्वारा व्यापारी वर्ग, श्रमिक वर्ग तथा बुद्धिजीवी वर्ग के बच्चों की भाषा का अध्ययन करके यह परिणाम निकाला गया है कि भिन्न-भिन्न बालकों की शब्दावली, वाक्य-विन्यास आदि में भिन्नता पाई जाती है। उच्च वर्ग के बालकों के आपसी सम्बंध भी उसी प्रकार के लोगों से रहते हैं और सुसंस्कृत शब्दावली युक्त लोक-व्यवहार की भाषा बोलते हैं। जहाँ पर परिवारों का सामाजिक स्तर

नीचा होता है वहाँ पर बालकों की भाषा का विकास द्रुत गति से नहीं होता है। प्रायः यह भी देखा जाता है कि बालक जिस वर्ग से सम्बंध रखता है वह उसी क्षेत्र विशेष की शब्दावली का ज्यादा प्रयोग करता है और दक्ष हो जाता है। इसके विपरित अन्य क्षेत्र से सम्बंधित बालक उस शब्दावली का प्रयोग नहीं करते व पिछड़े रहते हैं। उदाहरण के तौर पर खेल के क्षेत्र से सम्बंध रखने वाले लोगों के बच्चे खेल शब्दावली जैसे–क्रिकेट, विकेट, नो बॉल, कोपर, गोल, टीम, एम्पायर आदि से परिचित रहता है, जबकि इसके अन्य क्षेत्र के बालक ऐसी शब्दावली से अनभिज्ञ रहता है।

(6) **लिंग भेद**–लिंग का प्रभाव भी भाषा विकास पर पड़ता है। लड़कियाँ, लड़कों की अपेक्षा शीघ्र ध्वनि संकेत ग्रहण करती हैं। लड़कियों का सम्बंध तथा समाजीकरण माता से अधिक रहता है। अतः उसी संपर्क से लड़कियों की भाषा में अन्तर आने लगता है। एक बात और देखने मिलती है वाणी दोष जैसे–हकलाना लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में अधिक देखने को मिलता है। इसका कारण लड़कों में संवेगात्मक सुरक्षा बताया जाता है। इसके अतिरिक्त बालक-बालिकाओं के स्वभावतः उनकी भाषिक शब्दावली में अन्तर पाया जाता है। चूंकि बालिकाएँ, बालकों की अपेक्षा शीघ्र विकास को दर्शाती हैं। इसलिए उनका भाषा-विकास तीव्र गति से होता है।

(7) **मानसिक रुग्णता**–यदि एक बालक मानसिक रूप से रोगी अवस्था में होता है तो उसका भाषा विकास नहीं हो पाता। वह केवल कुछेक शब्द ही सीख पाता है। जो बालक जन्म से ही मानसिक रूप से कमजोर या रोगी पैदा होते हैं। उनकी भाषिक योग्यता न्यून होती है। जो बीच की अवस्थाओं में रुग्णता की स्थिति में आते हैं उनका आगामी भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है। ऐसे व्यक्ति पूर्व में सीखे भाषायी ज्ञान का प्रयोग गलत दिशा में करने लगते हैं एवं निरर्थक रूप से अपनी बातों को व्यक्त करते हैं। किसी भी दशा में मानसिक रूग्णता भाषा-विकास में अवरोध का सर्वप्रमुख कारण होता है।

(8) **पारिवारिक सम्बंध**–प्रायः यह देखने में आया है कि अनाथालयों, छात्रावासों या अन्य परिवारों में पले-बढ़े बच्चों को भाषायी कौशल में अन्तर पाया जाता है। इन संस्थाओं में रह रहे बालकों का भाषा विकास उतना नहीं होता जितना कि एक सफल परिवार के बच्चे का भाषा विकास होता है। संस्थाओं के बच्चों को भावनात्मक संवेदना, प्रेम इत्यादि नहीं मिल पाते और वे परिवार के संवेगात्मक सम्पर्क से दूर रहते हैं। इसलिए भाषा के प्रयोग को शीघ्रता से नहीं सीख पाते। उन्हें भाषा सीखने में देरी लगती है। परिवार में बालकों को प्रेरणा, प्रोत्साहन इत्यादि मिलता रहता है। इसके अतिरिक्त उन्हें कहानी, कविताएँ, यात्रा वृत्तांत इत्यादि अक्सर ही सुनाए जाते हैं जिससे उनका भाषा-विकास निरन्तर होता रहता है जबकि अनाथाश्रम के बच्चों को ये सब सुविधाएँ नहीं मिलती जिससे उनका भाषायी विकास धीरे से होता है।

(9) **एकाधिक भाषा**–जब कभी बालकों को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा सीखनी होती है तो वह सरलता से नहीं सीख पाता। विभाषा सीखने के समय उसका सामान्य भाषा-विकास निलम्बित हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन करने वाले बालकों की भाषा में अस्पष्टता, चिन्तन में अवरोध या प्रत्ययों में असमानता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त अन्य भाषा को सीखने के लिए पर्याप्त माहौल एवं भाषा कौशल से युक्त व्यक्ति का सम्पर्क अनिवार्य होता है। जैसे कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में अंग्रेजी नहीं बोली जाती या कन्नड़ भाषी क्षेत्र में हिन्दी नहीं बोली जाती तब ऐसे माहौल में बालक भाषायी विकास पिछड़ सकता है। इसी के साथ यदि किसी भाषा से अवधारणों की समझ पर पकड़ नहीं बनती तब ज्ञान प्राप्ति में भी व्यवधान पैदा होता है। इस तरह एक से अधिक भाषाएँ भी बालक के भाषा विकास पर प्रभाव डालती है।

(10) **संकोची प्रवृति**–जिन बालकों में संकोची प्रवृत्ति पाई जाती है उनका भाषा विकास प्रभावित होता है क्योंकि संकोच या हीन भावना की वजह से वे कहीं भी कुछ भी बोलने में हिचकिचाते हैं। एवं भाषा के विविधिक प्रयोग से वंचित रह जाते है जिससे उनका भाषा-विकास पिछड़ जाता है।

❐

14 भाषा की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–भाषा संचार का मूलभूत माध्यम है और यह समाज के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, और सामाजिक वर्ग, एक व्यक्ति की भाषा सीखने की क्षमता, उसके उपयोग, और उसके संचार कौशल पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इन कारकों की विस्तृत समझ हमें भाषा शिक्षण और विकास के लिए बेहतर रणनीतियाँ अपनाने में मदद कर सकती है।

1. **आयु**–आयु भाषा सीखने और उसकी दक्षता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

- **बाल्यावस्था**–बाल्यावस्था में बच्चों का मस्तिष्क अत्यधिक लचीला होता है, जो उन्हें नई भाषाओं को तेजी से और सहज रूप से सीखने में सक्षम बनाता है। इस अवधि में, बच्चों का मस्तिष्क नई ध्वनियों, शब्दों, और व्याकरणिक संरचनाओं को आसानी से अवशोषित करता है। इसके साथ ही, वे बिना किसी विशेष प्रयास के उच्चारण और भाषायी नियमों को आत्मसात कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, छोटे बच्चे अक्सर दो या तीन भाषाएँ एक साथ सीख सकते हैं, और उनमें से किसी भी भाषा में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती।
- **वयस्कता**–वयस्कों के लिए नई भाषा सीखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि मस्तिष्क की लचीलापन उम्र के साथ कम हो जाता है। हालांकि, वयस्क अपने जीवन के अनुभवों, ज्ञान, और अधिक सुविकसित तर्कशील क्षमताओं का उपयोग करके नई भाषा सीख सकते हैं। वयस्कों के पास अध्ययन के लिए अधिक अनुशासन और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता होती है, जो उन्हें जटिल व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दावली में महारत हासिल करने में मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए, एक वयस्क व्यक्ति भाषा कक्षाओं, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, या भाषा अदला-बदली कार्यक्रमों के माध्यम से नई भाषा सीख सकता है।
- **बुढ़ापा**–वृद्धावस्था में भाषा सीखने की क्षमता और भी कम हो सकती है, परंतु यह जरूरी नहीं कि उनकी भाषायी दक्षता भी घटे। वृद्ध लोग अपने जीवन के दौरान सीखी गई भाषाओं में अच्छे बने रह सकते हैं और इन भाषाओं का उपयोग प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। वृद्धावस्था में भाषा सीखने की चुनौती अक्सर स्मृति हानि और संज्ञानात्मक क्षमताओं में कमी के कारण होती है, लेकिन नियमित अभ्यास और मानसिक गतिविधियाँ इस गिरावट को कम करने में मदद कर सकती हैं।

2. **लिंग**–लिंग का भी भाषा की क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है।

- **महिलाएँ**–शोध से पता चलता है कि महिलाएँ आमतौर पर भाषायी कार्यों में पुरुषों से अधिक दक्ष होती हैं, खासकर मौखिक संचार में। महिलाओं में भाषा के प्रति अधिक संवेदनशीलता और बेहतर संप्रेषण कौशल देखा गया है। जैविक दृष्टिकोण से, मस्तिष्क की संरचना और हार्मोनल अंतर इस अंतर का कारण हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं का दिमाग भाषा के प्रोसेसिंग में अधिक एकीकृत और कुशल होता है।
- **पुरुष**–पुरुषों में अक्सर विश्लेषणात्मक और तार्किक सोच की क्षमता अधिक होती है, जो भाषा के तकनीकी पहलुओं को समझने में सहायक हो सकती है। समाज में लिंग भेदभाव भी भाषा की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। कई संस्कृतियों में, महिलाओं को शिक्षा के कम अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी भाषा की दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

3. **शिक्षा**–शिक्षा का स्तर और गुणवत्ता भाषा की क्षमता पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

- **शिक्षा का स्तर**–उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अधिक व्यापक शब्दावली और बेहतर व्याकरण का उपयोग करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए, एक विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला छात्र जटिल वाक्य

संरचनाओं और विशिष्ट शब्दावली का उपयोग कर सकता है, जो उसे अधिक प्रभावी और स्पष्ट रूप से संप्रेषण करने में सक्षम बनाती है।

- **शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता**–जहां अच्छी शिक्षण विधियाँ और संसाधन उपलब्ध होते हैं, वहां भाषा सीखने की प्रक्रिया आसान और प्रभावी होती है। शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम, और शिक्षक की योग्यता भाषा सीखने की सफलता को निर्धारित करते हैं। एक अच्छी शिक्षा प्रणाली में छात्रों को भाषा के सभी पहलुओं–पढ़ने, लिखने, सुनने, और बोलने–पर समान ध्यान दिया जाता है।

4. **सामाजिक वर्ग**–सामाजिक वर्ग भी भाषा की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

- **उच्च सामाजिक वर्ग**–उच्च सामाजिक वर्ग के लोगों को बेहतर शिक्षा, संसाधन और अवसर मिलते हैं, जिससे वे भाषायी दक्षता में अग्रणी हो सकते हैं। उनके पास भाषा सीखने के लिए आवश्यक सामग्री, शिक्षक और समय होता है। उदाहरण के लिए, एक उच्च वर्ग के परिवार के बच्चे को निजी स्कूल में दाखिला मिल सकता है, जहां उसे उच्च गुणवत्ता की भाषा शिक्षा प्राप्त होती है।
- **निम्न सामाजिक वर्ग**–निम्न सामाजिक वर्ग के लोगों को संसाधनों और अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी भाषायी क्षमता सीमित हो सकती है। आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ भाषा की शिक्षा और उपयोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं। निम्न वर्ग के बच्चे अक्सर शिक्षा के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे, किताबों, और तकनीकी उपकरणों की कमी का सामना करते हैं, जिससे उनकी भाषा सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष–आयु, लिंग, शिक्षा, और सामाजिक वर्ग भाषा की क्षमता को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करते हैं। इन कारकों का संयुक्त प्रभाव व्यक्ति की भाषा सीखने और उसे प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता को निर्धारित करता है। भाषा की क्षमता का विकास और उसका उपयोग समाज में व्यक्ति की स्थिति, उपलब्ध अवसरों और संसाधनों पर निर्भर करता है। इसलिए, भाषा शिक्षा और उसके उपयोग में सुधार लाने के लिए समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना आवश्यक है। एक समावेशी और समान शिक्षा प्रणाली विकसित करके हम सभी को भाषायी दक्षता और संचार कौशल में प्रवीण बना सकते हैं, जिससे समाज के समग्र विकास और प्रगति में योगदान हो सके।

3 भाषायी दक्षता के प्रायोगिक पक्ष

निबंधात्मक प्रश्न

भाषायी दक्षता की रणनीति : आकलन, लक्ष्य-निर्धारण, नियोजन के स्तर पर

1 अपने भाषा-कौशल का मूल्यांकन करने की रणनीति का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करना एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जो आपको अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानने, यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी भाषा क्षमताओं को बेहतर बनाने की योजना बनाने में मदद कर सकती है। चाहे आप कोई नई भाषा सीख रहे हों या किसी ऐसी भाषा में अपनी दक्षता सुधारने की कोशिश कर रहे हों जिसे आप पहले से जानते हों, आपके भाषा कौशल का मूल्यांकन करने के कई तरीके हैं-

1. **स्व-मूल्यांकन**–अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का पहला कदम स्वयं का मूल्यांकन करना है। इसमें भाषा सीखने के चार प्रमुख क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का ईमानदारी से मूल्यांकन करना शामिल है–पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना। अपने पढ़ने के कौशल का आकलन करने के लिए, आप लक्ष्य भाषा में कोई पुस्तक या लेख पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं और नोट कर सकते हैं कि आप कितना समझते हैं। लेखन के लिए, आप लक्ष्य भाषा में किसी विषय पर एक छोटा पैराग्राफ या निबंध लिखने का प्रयास कर सकते हैं। अपने बोलने और सुनने के कौशल का मूल्यांकन करने के लिए, आप लक्ष्य भाषा में बोलते हुए खुद को रिकॉर्ड कर सकते हैं या भाषा में कोई वार्तालाप या पॉडकास्ट सुन सकते हैं।

2. **भाषा प्रवीणता परीक्षण**–अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का एक और तरीका भाषा प्रवीणता का परीक्षण लेना है। ये परीक्षण किसी विशिष्ट भाषा में आपकी प्रवीणता के स्तर का आकलन करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं और नियोक्ताओं, विश्वविद्यालयों और भाषा स्कूलों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। कुछ सबसे लोकप्रिय भाषा प्रवीणता परीक्षणों में टेस्ट ऑफ़ इंग्लिश ऐज़ ए फ़ॉरेन लैंग्वेज (TOEFL), इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम (IELTS) और कॉमन यूरोपियन फ्रेमवर्क ऑफ़ रेफरेंस फ़ॉर लैंग्वेजेज (CEFR) टेस्ट शामिल हैं।

3. **भाषा विनिमय**–भाषा विनिमय कार्यक्रम में भाग लेना आपके भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का एक और प्रभावी तरीका है। भाषा विनिमय में, आप लक्ष्य भाषा के एक मूल वक्ता को पा सकते हैं जो आपकी भाषा सीखने में रुचि रखता है। फिर आप एक-दूसरे के साथ दोनों भाषाओं में बोलने और सुनने का अभ्यास कर सकते हैं। मूल वक्ता के साथ बातचीत करके, आप अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन कर सकते हैं और उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहाँ आपको सुधार करने की आवश्यकता है।

4. भाषा पाठ्यक्रम–भाषा पाठ्यक्रम लेना आपके भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का एक और प्रभावी तरीका है। भाषा पाठ्यक्रम आपको पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने में अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। भाषा पाठ्यक्रम में, आपको एक शिक्षक तक पहुँच प्राप्त होगी जो आपको आपकी क्षमताओं पर प्रतिक्रिया दे सकता है और आपको उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद कर सकता है जहाँ आपको सुधार करने की आवश्यकता है।

5. भाषा में डूब जाना–अंत में, लक्ष्य भाषा में खुद को डूबा लेना आपके भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का एक प्रभावी तरीका है। इसमें खुद को उस भाषा से घेरना शामिल है, चाहे वह उस देश में रहने के माध्यम से हो जहाँ वह भाषा बोली जाती है या उस भाषा में फ़िल्में या टीवी शो देखने के माध्यम से। भाषा में खुद को डुबोकर, आप अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन कर सकते हैं और उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहाँ आपको सुधार करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष–अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो आपको अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानने और अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए योजना बनाने में मदद कर सकती है। चाहे आप स्व-मूल्यांकन करना चाहें, भाषा प्रवीणता परीक्षा देना चाहें, भाषा विनिमय कार्यक्रम में भाग लेना चाहें, भाषा पाठ्यक्रम लेना चाहें या लक्ष्य भाषा में खुद को डुबोना चाहें, आपके भाषा कौशल का मूल्यांकन करने के कई प्रभावी तरीके हैं। अपनी क्षमताओं और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करके, आप यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम कर सकते हैं।

❒

2 विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता/कौशलों का आकलन व मूल्यांकन किस प्रकार करना चाहिए? तार्किक उत्तर दीजिए।

उत्तर–आकलन एवं मूल्यांकन दो अलग-अलग पद हैं एवं इन दोनों के अर्थ में भिनता है। आकलन को जहाँ एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया माना जाता है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा नहीं। वहीं मूल्यांकन को योगात्मक प्रक्रिया माना जाता है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात की जाती है।

आकलन का उद्देश्य निदानात्मक होता है। अर्थात् शिक्षण अधिगम कार्यक्रम में सुधार करना, छात्रों व अध्यापकों को पृष्ठपोषण प्रदान करना तथा छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों को ज्ञात करना आदि। मूल्यांकन का उद्देश्य मूल्य निर्धारण करना होता है। निर्धारित पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों की उपलब्धि को ग्रेड अथवा अंक के माध्यम से प्रदर्शित करना है। इस प्रकार, आकलन एवं मूल्यांकन दोनों भिन्न-भिन्न उद्देश्य से भिन्न-भिन्न समय पर विद्यार्थियों की उपलब्धि का अनुमान लगाने की प्रक्रिया है।

भाषा शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन–भाषा शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन का आशय उन प्रक्रियाओं से हैं जिनकी सहायता से एक शिक्षक विद्यार्थियों के भाषा संबंधी समस्त कौशलों के संबंध में शिक्षण अवधि के दौरान एवं पाठ्यक्रम की समाप्ति पर निर्णय करता है कि विद्यार्थी कितना पढ़ पाता है? कैसे पढ़ पाता है? रुक-रुक कर पढ़ता है या धारा-प्रवाह पढ़ता है? ठीक से नहीं पढ़ पा रहा है तो उसका क्या कारण है? जैसे यदि एक डॉक्टर बिना मरीज के रोग को जानने का प्रयास करेगा तो वह उस रोग का इलाज कैसे करेगा? क्या वह अक्षरों को पहचान नहीं पा रहा है या शब्दों को एक इकाई के रूप में पढ़ने का अभ्यस्त नहीं है? भाषा को सुनकर कितना समझ पाता है? कितने आत्मविश्वास से वह स्वयं को अभिव्यक्त कर पाता है?

सबसे पहले जब हम प्राथमिक स्तर की बात करते हैं जब विद्यार्थी भाषा सीखने की शुरुआत करता है तो उस स्तर पर हम सबसे पहले विद्यार्थी की प्रवाहिता की जांच करते हैं। फिर हम प्राथमिक स्तर पर शुद्धता की बात करते हैं कि विद्यार्थी कितना शुद्ध बोल रहा है? कितना शुद्ध लिख रहा है? कितना किसी की बातों को सुनकर शुद्ध समझ रहा है?

अतः सबसे पहले हमें प्रवाहिता पर बल देना चाहिए इसके बाद ही हमें उसके बोलने की शुद्धता पर बल देना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि विद्यार्थी की प्रवाहिता तथा शुद्धता दोनों का तालमेल बना रहे। इसके बाद ही भाषायी कौशलों का आकलन होता है।

भाषायी कौशलों का आकलन के अंतर्गत चार प्रमुख कौशल हैं, जो निम्नलिखित हैं–1. श्रवण कौशल, 2. वाचन कौशल, 3. पठन कौशल तथा 4. लेखन कौशल। मूल्यांकन की प्रक्रिया निरंतर चलती है परंतु किन तरीकों से चलती है यह जानना बहुत जरूरी है।

भाषायी दक्षता के आकलन की विधियाँ–विद्यालय में एक शिक्षक के द्वारा भाषा में आकलन एवं मूल्यांकन करने के लिए सामान्यतः दो तरीकों का प्रयोग किया जाता है–1. लिखित परीक्षा एवं 2. मौखिक परीक्षा।

इसके लिए बनाए गए प्रश्न पत्र पाठ्य पुस्तकों पर आधारित होते हैं जो भाषायी ज्ञान का आकलन कम एवं विद्यार्थी के स्मरण शक्ति का आकलन अधिक करते हैं। लिखित परीक्षा में विद्यार्थी को प्रश्न पत्र दे दिया जाता है जो उसके पाठ्य पुस्तकों पर आधारित होते हैं। अगर विद्यार्थी उन प्रश्न पत्रों का संतुष्टि तक उत्तर दे दिया तो वह उत्तीर्ण हो जाता है अन्यथा उसे अनुत्तीर्ण कर दिया जाता है। लिखित परीक्षा से हम विद्यार्थी का केवल स्मरण शक्ति का ही मूल्यांकन कर सकते हैं। जो हमारे लिए उद्देश्यहीन मूल्यांकन है। भाषा में आकलन एवं मूल्यांकन की निम्नलिखित विधियों को अपनाया जाना चाहिए-

1. मौखिक परीक्षण–यह औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों हो सकता है। यहाँ अनौपचारिक का अर्थ है–कक्षा में पढ़ाते-पढ़ाते विद्यार्थियों से कोई प्रश्न या किसी शब्द का अर्थ पूछ लिया। इसके लिए हमें निम्नलिखित युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए-

(क) प्रश्न-उत्तर का सत्र चलाया जाए।

(ख) कहानी कथन का सत्र चलवाया जाए।

(ग) विद्यार्थी को बोल-बोलकर पढ़ाया जाए। ऐसा करवाने से विद्यार्थी द्वारा किया गया शुद्ध या अशुद्ध उच्चारण शिक्षक के साथ-साथ सभी विद्यार्थियों तक पहुँचता है तथा एक दूसरे को अपनी त्रुटियों से अवगत कराते हैं।

(घ) विद्यार्थी द्वारा देखी या सुनी बात का वर्णन करवाया जाए। जैसे कि विद्यार्थी से पूछा जाए कि जब आप स्कूल आ रहे थे तो आपने रास्ते में क्या देखा, क्या सुना? कृपया बताइए।

यहाँ हम उसकी स्मरण क्षमता, उसकी अभिव्यक्ति और उसके विचारों का मूल्यांकन करते हैं कि वह कैसे अपनी बातों को व्यक्त करता है?

2. लिखित परीक्षा–लिखित परीक्षा में सिर्फ प्रश्नों का उत्तर ले लेना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए हमें निम्नलिखित युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए-

(क) श्रुतलेख–इसमें एक व्यक्ति बोलता है तो दूसरा व्यक्ति सुनकर लिखता है। ऐसा करने से हम विद्यार्थी के श्रवण तथा लेखन क्षमता का आकलन कर लेते हैं।

(ख) आपूर्ति परीक्षण–जिसे हम अंग्रेजी में क्लोज टेस्ट कहते हैं इसमें हम किसी कहानी या निबंध से कोई अनुच्छेद ले लेते हैं फिर उन अनुच्छेदों में से कुछ-कुछ शब्द निकालकर विद्यार्थियों के सामने रखते है फिर विद्यार्थियों को भरने के लिए कहा जाता है कि उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। ऐसा करने से हम विद्यार्थी की व्याकरण क्षमता, शब्द भंडार, पढ़कर समझने की क्षमता का आकलन कर लेते हैं।

(ग) **कहानी का अपनी मातृभाषा में पुनर्लेखन**–इसमें विद्यार्थी द्वारा पहले से पढ़े गए पाठ को उनकी मातृभाषा में पुनर्लेखन को कहते हैं। यहाँ हम उनकी लेखन क्षमता की जांच कर लेते हैं। साथ ही साथ हम एक भाषा से दूसरी भाषा में उनके द्वारा अनुवाद करने का क्षमता का भी आकलन कर लेते हैं।

(घ) **कहानी का शीर्षक लिखना**–इसमें विद्यार्थी को किसी निबंध, लघुकथा तथा अनुच्छेद का शीर्षक लिखने को कह कर हम उनके पठन की समझ क्षमता का आकलन कर लेते हैं।

(ङ) **कहानी से प्रश्न बनाना**–ऐसा करने से हम विद्यार्थी के प्रश्न बनाने की क्षमता का आकलन कर लेते हैं।

(च) **नाटक का मंचन एवं संवाद लेखन**–ऐसा करने से हम पाते हैं कि विद्यार्थी को कहाँ तक समझ आया कि वह किस अभिनयकर्ता को किस समय पर क्या प्रस्तुत करना है नाटक का मंच कैसा हो? आदि के बारे में आकलन कर लेते हैं।

(छ) **कविता की व्याख्या या उसका भावार्थ लेखन** आदि।

निष्कर्ष–अतः भाषा दक्षता का आकलन करते समय परीक्षण विद्यार्थी की भाषा ज्ञान एवं क्षमता का आकलन एवं मूल्यांकन करने वाला होना चाहिए ना कि उनकी स्मरण शक्ति का। दूसरी बात आकलन करते समय हमें विद्यार्थी के मात्र कमजोर पक्षों को ही नहीं देखना चाहिए बल्कि उनके कारण को भी ढूँढ़ना चाहिए जिनके कारण विद्यार्थी की अपेक्षित पहलू कमजोर हैं।

❒

3 भाषा दक्षता के लिए लक्ष्यों का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है? विवेचना कीजिए।

उत्तर–भाषा दक्षता किसी व्यक्ति की किसी भाषा को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता को दर्शाती है। यह न केवल एक महत्वपूर्ण कौशल है, बल्कि एक ऐसा साधन भी है जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा दक्षता के लिए लक्ष्य निर्धारण एक सुनियोजित प्रक्रिया है जो विभिन्न चरणों और रणनीतियों पर आधारित होती है–

1. **उद्देश्य और प्राथमिकता निर्धारित करना**–सबसे पहले, यह जानना महत्वपूर्ण है कि भाषा दक्षता क्यों हासिल की जा रही है। क्या यह नौकरी के लिए है, विदेश यात्रा के लिए, उच्च शिक्षा के लिए, या सांस्कृतिक ज्ञान बढ़ाने के लिए? उद्देश्य के आधार पर, लक्ष्य भी भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी छात्र के लिए परीक्षा पास करना प्राथमिकता हो सकती है, जबकि एक व्यवसायी के लिए व्यावसायिक संवाद में निपुण होना महत्वपूर्ण हो सकता है।
2. **वर्तमान स्तर का मूल्यांकन**–लक्ष्य निर्धारित करने से पहले, अपने वर्तमान भाषा दक्षता स्तर का मूल्यांकन करना आवश्यक है। इससे यह पता चलेगा कि किस स्तर पर काम करना शुरू करना है और कौन-से क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह मूल्यांकन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जैसे कि भाषा परीक्षण, स्वयं मूल्यांकन, या शिक्षकों और विशेषज्ञों की मदद से।
3. **विशिष्ट, मापनीय, प्राप्त करने योग्य, प्रासंगिक, और समयबद्ध (SMART) लक्ष्य बनाना**–लक्ष्य निर्धारण के लिए SMART दृष्टिकोण का पालन करना एक अच्छा तरीका है। SMART का अर्थ है–
   - Specific (विशिष्ट) लक्ष्य स्पष्ट और विशिष्ट होना चाहिए।
   - Measurable (मापनीय)–लक्ष्य की प्रगति मापी जा सकने योग्य होनी चाहिए।
   - Achievable (प्राप्त करने योग्य)–लक्ष्य वास्तविक और प्राप्त करने योग्य होना चाहिए।
   - Relevant (प्रासंगिक)–लक्ष्य महत्वपूर्ण और उपयोगी होना चाहिए।
   - Time-bound (समय-बद्ध)–लक्ष्य को पूरा करने के लिए समय सीमा निर्धारित होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, एक SMART लक्ष्य हो सकता है–"मैं अगले छह महीनों में अपनी अंग्रेजी बोलने की क्षमता में सुधार करना चाहता हूँ, ताकि मैं नौकरी के इंटरव्यू में आत्मविश्वास से संवाद कर सकूँ। इसके लिए, मैं हर दिन 30 मिनट अंग्रेजी में बातचीत करने का अभ्यास करूँगा और हर सप्ताह एक नई पुस्तक पढ़ूँगा।"

4. **संसाधन और उपकरण का चयन**–भाषा दक्षता में सुधार के लिए सही संसाधनों और उपकरणों का चयन करना महत्वपूर्ण है। ये संसाधन पुस्तकें, ऑनलाइन कोर्स, मोबाइल ऐप, भाषा साथी, ट्यूटर, या भाषा क्लब हो सकते हैं। संसाधनों का चयन अपने लक्ष्य और प्राथमिकताओं के आधार पर करें।
5. **नियमित अभ्यास और पुनरवलोकन**–भाषा सीखने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू नियमित अभ्यास है। नियमितता से अभ्यास करने से भाषा दक्षता में सुधार होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके अलावा, समय-समय पर अपने लक्ष्य और प्रगति का पुनरवलोकन करना आवश्यक है। इससे यह पता चलता है कि आप सही दिशा में जा रहे हैं या नहीं, और यदि आवश्यक हो तो आप अपने लक्ष्यों और रणनीतियों को संशोधित कर सकते हैं।
6. **स्वयं को प्रेरित रखना**–भाषा दक्षता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वयं को प्रेरित रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए, अपने छोटे-छोटे उपलब्धियों का जश्न मनाएँ, अपने प्रगति को ट्रैक करें और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखें। एक भाषा साथी या अध्ययन समूह के साथ मिलकर काम करना भी प्रेरणा बनाए रखने में मदद कर सकता है।

निष्कर्ष–भाषा दक्षता के लिए लक्ष्य निर्धारण एक सुनियोजित और नियमित प्रक्रिया है जो ध्यान, समर्पण और निरंतर प्रयास की मांग करती है। सही उद्देश्य, वर्तमान स्तर का मूल्यांकन, SMART लक्ष्य निर्धारण, सही संसाधनों का चयन, नियमित अभ्यास, और स्वयं को प्रेरित रखना इस प्रक्रिया के महत्वपूर्ण घटक हैं। इन रणनीतियों का पालन करके, कोई भी व्यक्ति भाषा दक्षता में सुधार कर सकता है और अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

❐

4 नियोजन का अर्थ स्पष्ट करते हुए नियोजन के स्तर पर भाषा दक्षता की रणनीति पर विचार कीजिए।

उत्तर–नियोजन का अर्थ पहले से यह निश्चिय करना है कि भविष्य में क्या करना है तथा कैसे करना है? यह प्रबंध के आधारभूत कार्यों में से एक है। कुछ भी करने से पहले प्रबंधक एक विचार मन में लाता है कि अमुक कार्य को कैसे किया जाए। अत: नियोजन, सृजनात्मकता तथा नवप्रवर्तन अति निकट से जुड़ा हुआ है। लेकिन प्रबंधक को सर्वप्रथम उद्देश्यों को निर्धारित करना पड़ता है। उसके उपरांत ही प्रबंधक यह जान पाता है कि उसे क्या करना है। इस तरह नियोजन, हम कहाँ खड़े हैं तथा हमें कहाँ पहुँचना है? इन दोनों के बीच में सेतु का काम करता है। अत: नियोजन से तात्पर्य उद्देश्यों का निर्धारण तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समुचित कार्यविधि को विकसित करने से है।

नियोजन के स्तर पर भाषा दक्षता की रणनीति–भाषा दक्षता की प्राप्ति एक जटिल और बहु-स्तरीय प्रक्रिया है जो सुविचारित नियोजन और रणनीतियों की मांग करती है। यह प्रक्रिया केवल भाषा के ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके व्यावहारिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करती है।

1. **आवश्यकताओं का विश्लेषण**–नियोजन प्रक्रिया का पहला चरण आवश्यकताओं का विश्लेषण करना है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि भाषा दक्षता क्यों आवश्यक है और इसके विभिन्न उपयोगिता के क्षेत्र क्या हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी को किसी विशेष नौकरी के लिए भाषा सीखनी है, तो उसे तकनीकी शब्दावली और व्यावसायिक संवाद पर अधिक ध्यान देना होगा। इसी तरह, विदेश यात्रा के लिए भाषा सीखने वाले व्यक्ति को दैनिक संवाद और सांस्कृतिक संदर्भों पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

2. **लक्ष्य निर्धारण**–सटीक और मापनीय लक्ष्यों का निर्धारण करना भाषा दक्षता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह लक्ष्य SMART (Specific, Measurable, Achievable, Relevant, Time-bound) होने चाहिए। उदाहरण के लिए, "अगले छह महीनों में मैं इतनी दक्षता प्राप्त करना चाहता हूँ कि मैं दैनिक संवाद में आत्मविश्वास महसूस कर सकूँ।"
3. **संसाधनों की पहचान और चयन**–भाषा दक्षता के लिए उपयुक्त संसाधनों का चयन एक महत्वपूर्ण रणनीति है। ये संसाधन किताबें, ऑनलाइन कोर्स, मोबाइल ऐप, भाषा साथी, ट्यूटर, और भाषा क्लब हो सकते हैं। संसाधनों का चयन करते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे आपके लक्ष्यों और आवश्यकताओं के अनुरूप हों।
4. **अध्ययन योजना बनाना**–अध्ययन योजना बनाना एक महत्वपूर्ण कदम है। यह योजना विस्तृत और व्यवस्थित होनी चाहिए, जिसमें नियमित अभ्यास, रिवीजन, और प्रगति की निगरानी शामिल हो। योजना बनाते समय इसे छोटे-छोटे लक्ष्यों में विभाजित करना चाहिए ताकि उसे आसानी से प्रबंधित किया जा सके। उदाहरण के लिए, एक दिन में नए शब्दावली सीखना, सप्ताह में एक बार लिखने का अभ्यास करना, और हर महीने भाषा का एक परीक्षण लेना।
5. **इंटरैक्टिव और व्यावहारिक अनुभव**–भाषा सीखने के लिए इंटरैक्टिव और व्यावहारिक अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भाषा का वास्तविक जीवन में प्रयोग करना, जैसे कि भाषा बोलने वाले लोगों के साथ संवाद, भाषा फिल्मों और टीवी शो देखना, और भाषा में पुस्तकें पढ़ना, आपकी दक्षता को बढ़ाने में मदद करते हैं।
6. **नियमित पुनरवलोकन और सुधार**–नियोजन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा नियमित पुनरवलोकन और सुधार है। अपने अध्ययन की प्रगति का समय-समय पर मूल्यांकन करना और आवश्यकतानुसार अपनी रणनीतियों में संशोधन करना महत्वपूर्ण है। इससे आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे हैं।
7. **स्वयं को प्रेरित रखना**–भाषा दक्षता की प्रक्रिया लंबी और चुनौतीपूर्ण हो सकती है, इसलिए स्वयं को प्रेरित रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। छोटे-छोटे उपलब्धियों का जश्न मनाना, सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना, और अध्ययन के दौरान विविधता बनाए रखना आपके उत्साह को बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष–नियोजन के स्तर पर भाषा दक्षता की रणनीति एक व्यापक और सुविचारित प्रक्रिया है, जिसमें आवश्यकताओं का विश्लेषण, लक्ष्य निर्धारण, संसाधनों की पहचान, अध्ययन योजना, इंटरैक्टिव अनुभव, नियमित पुनरवलोकन, और आत्म-प्रेरणा शामिल हैं। इन सभी तत्वों का समन्वय करते हुए, कोई भी व्यक्ति भाषा दक्षता में सुधार कर सकता है और अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। यह एक सतत प्रक्रिया है, जो धैर्य, समर्पण, और नियमित अभ्यास की मांग करती है।

❒

शब्द-सामर्थ्य –सामान्य एवं तकनीकी शब्द

5 **शब्द-सामर्थ्य से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा के शब्द-सामर्थ्य को उद्घाटित कीजिए।**

उत्तर–शब्द-सामर्थ्य या शब्दशक्ति अर्थात शब्दों की क्षमता या शक्ति। हिन्दी व्याकरण में किसी वाक्य के भाव को समझने के लिए प्रयुक्त अर्थ को शब्द-शक्ति कहा जाता है। कुछ वाक्य ऐसे होते हैं जिनके अर्थ सभी

लोगों के लिए समान होते हैं लेकिन कुछ वाक्य ऐसे होते हैं जिनका अर्थ प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के अनुसार लेता है। इसी आधार पर उस वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के प्रकार, शक्ति और व्यापकता के आधार पर उसे विभिन्न प्रकार से विभक्त किया जाता है।

परिभाषा–शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति कहलाती है। यह शब्द, शब्द और शक्ति के समन्वय से बना है अर्थात शब्दशक्ति का समास विग्रह करने पर इसका तात्पर्य शब्द की शक्ति बताने से होता है।

हिन्दी का शब्द सामर्थ्य–किस भाषा को विकसित-विकासशील माना जाए और किसको नहीं, इसके लिए प्रो. फर्गुसन ने बड़ी गहराई से विचार किया है। लिखित रूप में प्राप्त जिस भाषा में निम्नलिखित विशेषताएँ हों वह भाषा विकसित मानी जाएगी-

(क) आपसी पत्र-व्यवहार होता हो,

(ख) पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हों,

(ग) मौलिक पुस्तकों का लेखन कार्य होता हो,

इस कसौटी पर हिन्दी बिलकुल खरी उतरती है। हाँ, उन्होंने जो आगे की अवस्थाएँ स्वीकार की हैं कि

(1) उसमें वैज्ञानिक साहित्य निरन्तर प्रकाशित होता रहे तथा

(2) अन्य भाषाओं में हुए वैज्ञानिक कार्य का अनुवाद तथा सार संक्षेप प्रकाशित होता रहे।

उस दृष्टि से अभी हिन्दी विकासशील भाषा है और भविष्य में उसमें अनन्त सम्भावनाएँ निहित हैं।

हॉगन ने विकसित भाषा के जो चार तत्व स्वीकार किए हैं उनमें से 'आधुनिकता' पर विशेष बल दिया है। 'भाषा की आधुनिकता' से तात्पर्य है–शब्दावली में वृद्धि तथा नई शैली तथा अभिव्यक्तियों का विकास। इस कसौटी पर भी हिन्दी खरी उतरती है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि तथा विचारक सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन की मान्यता है कि "भाषा कल्पवृक्ष है। जो उससे आस्थापूर्वक माँगा जाता है, भाषा वह देती है। उससे कुछ माँगा ही न जाए क्योंकि वह पेड़ से लटका हुआ नहीं दीख रहा है, तो कल्पवृक्ष भी कुछ नहीं देता।"

बीसवीं शताब्दी के लब्धप्रतिष्ठ भाषाविद् ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार–"भाषा की शक्ति अथवा सम्पत्ति रूपिमों और व्याकरणिमों में (वाक्य प्रतिरूपों, संरचनाओं और स्थानापत्तियों में) है। रूपिमों और व्याकरणिमों की संख्या भाषा-विशेष में हज़ारों में पहुँचती है। यह साधारणत: माना जाता है कि भाषा सम्पत्ति विभिन्न प्रयुक्त शब्दों पर निर्भर है किन्तु यह संख्या अनिश्चित है क्योंकि रूपीय संरचनाओं के सादृश्य पर शब्द मनचाहे ढंग से बनते रहते हैं।"

वस्तुत: भाषा मूलत: अभिव्यक्ति की संरचना तथा शब्दावली का संयुक्त रूप है जो परस्पर संगुम्फित है। शब्दावली आती-जाती, नई बनती रहती है, पुराने शब्दों में नवीन अर्थ भरते जाते हैं, जैसे आज अधिक्रम, अधिवक्ता, अभिलेख, अभ्यर्थी, आख्यापन से सर्वथा नवीन अर्थों की अभिव्यंजना होती है। हिन्दी की आक्षरिक संरचना भी बड़ी सम्पन्न है। आक्षरिक साँचों में पर्याप्त रिक्त स्थान होने के कारण विकास की अभूतपूर्व क्षमता स्पष्ट होती है। 'व्यंजन स्वर-व्यंजन दीर्घ स्वर' साँचे में यदि मात्र 'क्' तथा 'ल्' व्यंजन क्रमश: लिए जाएँ तो 21 सम्भव शब्द बन सकते हैं, जिनमें से 19 स्थान रिक्त पड़े हुए थे। इन रिक्त स्थानों में से चार स्थानों पर क़िला, केलि, कुली, किलो शब्द बड़ी आसानी से खप गए।

भाषाविदों की दृष्टि में हिन्दी की शब्द क्षमता–अब तक के प्रमुख भाषाविद् उपयुक्त सभी दृष्टियों से हिन्दी की अभूतपूर्व क्षमता तथा सामर्थ्य में विश्वास करते हैं-

- **फ़ैलन के अनुसार**–"हिन्दी इसी मिट्टी की बोली है और अरबी या फ़ारसी से अधिक जनमानस के निकट है।"
- **क्रस्ट के अनुसार**–"भारतीय भाषा में कोई भी मानवीय भावना व्यक्त करने की पूर्ण सामर्थ्य है और वह उच्चतम वैज्ञानिक शिक्षा के लिए उपयुक्त है।"

- **1901 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार**–"हिन्दी के पास ऐसा शब्द कोश और अभिव्यक्ति की ऐसी सामर्थ्य है, जो अंग्रेजी से किसी प्रकार कम नहीं।"
- **जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार**–"यही (हिन्दी) एक भाषा है जिसमें दो विभिन्न प्रान्तों के लोग आपस में बातचीत कर सकते हैं। यह भारत में सर्वत्र समझी जाती है, क्योंकि इसका व्याकरण भारत की अधिकांश भाषाओं के समान है और इसका शब्दकोश सबकी सम्मिलित सम्पत्ति है।"

भारतीय संविधान में (351) हिन्दी के 'शब्द भण्डार के लिए मुख्यत: संस्कृत से तथा गौणत: अन्य भाषाओं से शब्दग्रहण कर समृद्ध' करने की व्यवस्था है।

❒

6 प्रयोग की दृष्टि से शब्द कितने प्रकार के होते हैं? तकनीकी/पारिभाषिक शब्दों के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भाषा की सबसे छोटी, सार्थक एवं स्वतंत्र इकाई 'शब्द' है। प्रयोग की दृष्टि से शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है। (क) सामान्य शब्द (ख) अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द (ग) तकनीकी/पारिभाषिक शब्द।

(1) **सामान्य शब्द**–जिन शब्दों की सीमा नहीं बाँधी जाती और जिनका इस्तेमाल हम दिन-प्रतिदिन के सामान्य व्यवहार में करते हैं, उनको सामान्य शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है जैसे वस्तुओं, स्थानों और संबंधों आदि के वाचक शब्द। इन शब्दों का संबंध मूलत: मूर्त वस्तुओं, स्थितियों अथवा अवस्थाओं से होता है। किताब, घर, कलम, विद्यालय, बचपन, बुढ़ापा आदि सामान्य शब्द हैं।

(2) **अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द**–जो शब्द सामान्य और पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं, उन शब्दों में को अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द कहते हैं। अर्थात् जिन शब्दों का इस्तेमाल सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने के अलावा किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में भी होता है उन्हें अर्द्ध-पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है। जैसे–आदेश, दावा, रस आदि अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द हैं।

(3) **तकनीकी/पारिभाषिक शब्द**–जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है और जो शब्द व्याकरणिक दृष्टि से सामान्य शब्दों की निर्माण प्रक्रिया के नियमों से ही परिचालित होते है, किंतु अर्द्ध-संरचना के धरातल पर दोनों में स्पष्ट अंतर होता हैं; उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। पारिभाषिक शब्दों रसायन, दर्शन, भौतिक, राजनीति एवं विज्ञान आदि शास्त्रों में इस्तेमाल होकर अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ के लिए सुनिश्चित रूप से रूढ़ से हो जाते हैं। इन शब्दों की निश्चित परिभाषा दी जा सकती ह इसलिए इन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। जैसे–'आयकर'। इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा संस्था की आय पर सरकार द्वारा वसूल किए जाने वाले 'कर' के अर्थ में किया जाएगा। सरकार के अलावा अन्य संस्था द्वारा वसूल की जाने वाली राशि आयकर नहीं कहलाएगी। इस तरह शब्दावली के साथ पारिभाषिक विश्लेषण के अधिक चलन के कारण 'पारिभाषिक शब्द' ही हिंदी में ज्यादा प्रचलित हैं। 'तकनीकी' और 'पारिभाषिक' दोनों शब्द अंग्रेजी के 'Technical' शब्द के हिंदी पर्याय है। 'तकनीकी' जहाँ ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्मित पर्याय है, वही 'पारिभाषिक' उससे जुड़े अर्थ के आधार पर बनाया गया पर्याय है। इस तरह जो शब्द किसी क्षेत्र विशेष में निश्चित और परिसीमित अर्थ के द्योतक हों जिनके पीछे कोई संकल्पना, प्रतिपादित विचार या घटना जुड़ी हुई हो और जिसकी परिभाषा या व्याख्या करने पर उस भाषा के प्रयोक्ताओं को वह उसी अर्थ में स्वीकार हो उसे तकनीकी/पारिभाषिक शब्द कहते हैं।

पारिभाषिक शब्द का स्वरूप–पारिभाषिक शब्द शास्त्रबद्ध शब्द होते हैं। सामान्य शब्द लोक व्यवहार द्वारा निर्धारित होते हैं, वहीं पारिभाषिक शब्द रसायन, भौतिक, राजनीति, विज्ञान आदि शास्त्रों में प्रयुक्त होते हैं, इसलिए पारिभाषिक शब्दों का सीधा संबंध उस भाषा-भाषी समाज के सांस्कृतिक और वैचारिक विकास से भी जुड़ा होता है। जैसे–जन-समुदाय का जीवन विकास की ओर बढ़ता गया वैसे-वैसे भाषा में नई संकल्पनाओं के साथ पारिभाषिक शब्दावली भी विकसित होती गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में चिंतन और ज्ञान की अभिव्यक्ति उस क्षेत्र विशेष की पारिभाषिक शब्दावली द्वारा होती है। समाज ने जिन-जिन क्षेत्रों में विकास किया, उन-उन क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली भी उस समाज की भाषाओं में विकसित हुई। इस तरह किसी समाज का सांस्कृतिक वैज्ञानिक विकास और भाषा-विकास इसी दृष्टि से एक दूसरे से अभिन्न होते हैं। उदाहरण–'ओवर ड्राफ्ट', 'मियादी जमा', 'चालू खाता' आदि शब्दों के गर्भ में छिपे अभीष्ट अर्थ को बैंकिंग व्यवहार क्षेत्र के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

पारिभाषिक शब्द अपने क्षेत्र-विशेष में सूक्ष्म या सुनिश्चित अर्थ का वाचक होता है जो अर्थ के सूक्ष्मीकरण की प्रवृत्ति से युक्त होता है। सूत्र, कूट शब्द, संकेताक्षर, विशिष्ट चिह्न और गणितीय फॉर्मूला इसी अर्थ के सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया के परिणाम हैं। पारिभाषिक शब्द प्रायः अपारदर्शी होते हैं। अर्थात् उनकी बाह्य संरचना से उनके वास्तविक तकनीकी अर्थ का स्पष्ट बोध नहीं होता। उदाहरण–'रेखांकित चेक' अर्थात् जिस चेक के बाई ओर दो समानांतर रेखाएँ खिंची हों और जिसका भुगतान उसी को हो सकता हो जिसके नाम का चेक कटा हो। इस तरह पारिभाषिक शब्द और उनके अर्थ के बीच के संबंध को अर्थारोपण के माध्यम से जोड़ा जाता है।

❐

7 सामान्य और तकनीकी शब्द में अंतर बताइए तथा तकनीकी शब्दों के लक्षण या विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–सामान्य और तकनीकी शब्दों के बीच अंतर हम दो स्तरों पर कर सकते हैं–1. संरचना के स्तर पर और 2. अर्थ के स्तर पर। शब्द की संरचना से तात्पर्य है शब्द के निर्माण की विधि से, यानी शब्द रचना से। इस स्तर पर वस्तुतः सामान्य तथा तकनीकी शब्दों में कोई अंतर नहीं है। शब्द निर्माण की जो विधि सामान्य शब्दों के लिए हम अपनाते हैं वही विधि हम तकनीकी शब्दों के लिए भी अपनाते हैं। सामान्य शब्दों की रचना हम धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों को जोड़कर करते हैं, जैसे–विश्वास, अविश्वास, विश्वसनीय, विश्वसनीयता, अविश्वसनीय आदि। तकनीकी शब्दों की रचना भी हम इसी स्थापित पद्धति के आधार पर धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों का योग करके करते हैं, जैसे आदेश, निर्देश, निदेशक, निदेशालय, उपनिदेशक, सहनिदेशक आदि। ध्यान रहे कि उपसर्ग 'धातु' या शब्द के पहले जुड़ते हैं और प्रत्यय 'धातु' या शब्द के बाद। दूसरे शब्दों में, तकनीकी शब्दों का अपना कोई अलग शब्द-व्याकरण नहीं होता। भाषा के सामान्य व्याकरण और संरचनात्मक नियमों के दायरे के भीतर ही तकनीकी या वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण या विकास होता है।

यह बात अवश्य है कि विज्ञान तथा टेक्नालॉजी की तेजी से विकसित नई संकल्पनाओं और आविष्कारों को व्यक्त करने के लिए नए शब्दों की मांग बढ़ रही है जिसके फलस्वरूप शब्दों की रचना-पद्धति में कुछ नए प्रयोग भी करने पड़ रहे हैं। इसके अलावा धातुओं, उपसर्गों तथा प्रत्ययों को कुछ नए मूल्य और अर्थ प्रदान करने की आवश्यकता पड़ रही है, लेकिन ये सभी प्रयोग भाषा के मान्य व्याकरणिक विधानों के अंतर्गत ही किए जा रहे हैं, जैसे संकर शब्दों की रचना-अपीलकर्ता, शेयरधारक रजिस्ट्रीकृत आदि।

तकनीकी और सामान्य शब्दों के बीच वास्तविक अंतर अर्थ के स्तर पर मिलता है। सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों का प्रयोग हम अपने प्रयोजन और दृष्टिकोण के अनुसार अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना तीनों ही अर्थों में कर सकते हैं। साहित्य में शब्दों का प्रयोग जितना ही अधिक लाक्षणिक होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली भाषा और भाव का संप्रेषण माना जाएगा। सामान्य भाषा में भी हम बीच-बीच में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करते हैं। उदाहरण देखिए–

- मन में भावनाओं की **लहरें** हिलोरें मारने लगीं।
- उनकी बातों में मुझे आशा की एक क्षीण **किरण** दिखाई दी।
- तभी शीला के परिवार पर दुख का **पहाड़** टूट पड़ा।
- उसे वहीं खड़ा देख पिताजी **गरजे**–तुम अभी तक नहीं गए?

इन वाक्यों में 'लहरें', 'किरण', 'पहाड़', और 'गरजना' का प्रयोग अभिधा या शाब्दिक अर्थ में नहीं हुआ है। यहाँ इनका प्रयोग लाक्षणिक है। विज्ञान की भाषा में ये शब्द तकनीकी हैं और इनके अर्थ शाब्दिक हैं। पाठक भी इन्हें अभिधार्थ में ही ग्रहण करता है। अत: जहाँ सामान्य तथा साहित्यिक भाषा में शब्दों के अर्थों को विस्तारित कर उनके मूल अर्थों से उन्हें विचलित कर देते हैं, वहाँ तकनीकी तथा वैज्ञानिक संदर्भों में शब्दों को उनके मूल अर्थ में स्थिर किया जाता है और उनके अर्थों में किसी भी तरह का विचलन नहीं आने दिया जाता। इस प्रकार तकनीकी शब्दों के अर्थों में एक प्रकार की वस्तुनिष्ठता होती है जिसमें लेखक या वक्ता के व्यक्तिगत भावों या दृष्टिकोणों के लिए कोई स्थान नहीं होता।

तकनीकी शब्दों के लक्षण–अर्थ और प्रयोग के स्तर पर तकनीकी शब्दों के कुछ खास गुण-धर्म होते हैं जो इन्हें गैर-तकनीकी शब्दों से अलग करते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों में सामान्य शब्द भी विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने की क्षमता विकसित कर लेता है। वैज्ञानिक संदर्भों में अर्थों और संकल्पनाओं में सूक्ष्मता की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए इन सूक्ष्म अर्थों को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों की ज़रूरत पड़ती है जो किसी भी भाषा के शब्द भंडार में संभव नहीं इसलिए जहाँ नए शब्द बनाने या सृजित करने की संभावना नहीं होती वहाँ प्रचलित शब्दों को ही एक नया अर्थ या अर्थ-छटा प्रदान कर दी जाती है। इस प्रकार तकनीकी शब्दों में नए अर्थों का आरोपण एक सतत प्रक्रिया है। अर्थों का सूक्ष्म और सूक्ष्मतर होते जाना तकनीकी शब्दों की विशेषता है। यहाँ तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षणों की चर्चा की जा रही है–

(1) **अभिधार्थ प्रयोग**–वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्थ में ही समझे जाते हैं। यह संभव है कि सामान्य प्रयोग में या अलग-अलग संदर्भों में किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ प्रचलित हों, लेकिन यदि वह तकनीकी शब्द के रूप में विकसित हो जाता है तो तकनीकी शब्द का एक विषय-क्षेत्र में एक तकनीकी अर्थ होगा। इसीलिए कहा जाता है कि तकनीकी शब्द 'एक शब्द एक अर्थ' के सिद्धांत का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, भौतिकी में 'ऊर्जा' (energy) शब्द का एक ही विशिष्ट अर्थ होगा जो 'शक्ति', 'ताकत', 'स्फूर्ति' आदि शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यदि एक ही विषय या व्यवहार क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द के दो या अधिक अर्थ हों तो वह तकनीकी अर्थ व्यक्त करने के दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाएगा।

(2) **अर्थ की सूक्ष्मता**–सामान्य शब्द की अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ के अलावा कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं। इस प्रकार सामान्य या साहित्यिक शब्दों में अर्थ की संभावनाएँ बहुत अधिक व्यापक होती हैं। तकनीकी शब्द न केवल एक अर्थ को व्यक्त करता है, बल्कि वह उस अर्थ के भी एक सूक्ष्म अंश का अर्थबोध प्रकट करता है। यह विज्ञान की विशेषता है जो भाषा में भी लक्षित होती है जैसे-जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी सोच और संकल्पना में परिमार्जन होता जाता है और नई मौलिक उद्‌भावनाएँ सामने आती जाती हैं, वैसे-वैसे तकनीकी शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता जाता है। अंग्रेजी शब्द 'प्रोग्राम' और 'मेमरी' के जो अर्थ लोक व्यवहार में प्रचलित हैं वे कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में अत्यंत सीमित हो गए हैं। 'संसद' का अर्थ संस्कृत में 'सभा' हुआ करता था लेकिन तकनीकी शब्द बनने के बाद इसकी अर्थ व्याप्ति केवल 'पार्लियामेण्ट' तक सीमित हो गई है।

(3) **अर्थ भेदकता**–तकनीकी शब्दों के अर्थ न केवल सूक्ष्म होते हैं बल्कि निरंतर अनुसंधान के साथ-साथ उनके अर्थों के भेद-उपभेद विकसित होते चले जाते हैं। अर्थों के इन भेदोपभेदों में सूक्ष्म अर्थभेद होता

है। इन अर्थभेदों को सुरक्षित रखने के लिए सबके लिए अलग-अलग तकनीकी शब्दों का विधान करना जरूरी हो जाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह भेद महत्वपूर्ण न हो लेकिन वैज्ञानिक या विशेषज्ञ के लिए यह भेद अत्यंत महत्वपूर्ण है। तकनीकी शब्दों के अर्थों में धीरे-धीरे नए मूल्य विकसित होते रहते हैं और उनमें परस्पर अर्थभेदकता का गुण मुखर होता जाता है। उदाहरण–वेग–Velocity, चाल–Speed, किरण–Ray, महामारी–Epidemic, लघुमारी–Endemic, शक्ति–Power आदि।

(4) **विषय सापेक्षता**–हर तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय क्षेत्र या शास्त्र से संबद्ध होता है। वह शब्द अपने विषय क्षेत्र से ही अपना तकनीकी अर्थ और अपनी परिभाषा प्राप्त करता है। इसलिए किसी भी विषय के तकनीकी शब्द के पूर्ण अर्थ को समझने के लिए उस विषय की जानकारी ज़रूरी है। यही कारण है कि तकनीकी शब्दों को विशेषज्ञों की शब्दावली कहा जाता है जिन्हें अक्सर उस विषय से अनभिज्ञ सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता। कोई भी तकनीकी शब्द अपने विषय क्षेत्र से जो भी अर्थ प्राप्त करता है वह सब उसकी परिभाषा में निहित रहता है। इसलिए परिभाषा के माध्यम से ही तकनीकी शब्द की अर्थ व्याप्ति को समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हर तकनीकी शब्द परिभाषा की अपेक्षा करता है। इसीलिए इसे 'पारिभाषिक शब्द' कहा गया है अर्थात् ऐसा शब्द जो परिभाषा के माध्यम से ही पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। 'कंप्यूटर वायरस' 'प्रोग्रामिंग', 'हार्ड डिस्क' तथा 'फ्लॉपी' जैसे तकनीकी शब्द कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। 'ओवर ड्राफ्ट', 'रेखित चैक' 'धारक चैक' आदि तकनीकी शब्द बैंकिग व्यवहार क्षेत्र के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं।

(5) **अर्थरूढ़िता**–नए विचारों, आविष्कारों या संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए जब हमें नए शब्दों की आवश्यकता होती है तो इसके दो प्रमुख उपाय हैं नए शब्दों का निर्माण या फिर पहले से ही भाषा के शब्द भंडार में मौजूद निकटतम अर्थ देने वाले शब्द का चयन कर उसे नया अर्थ प्रदान करना। जो भी नया तकनीकी अर्थ शब्द में आरोपित किया जाता है वह सतत प्रयोग के कारण उस शब्द के साथ रूढ़ हो जाता है और लोग उसी अर्थ में उस शब्द को ग्रहण करने लग जाते हैं। कभी-कभी यह भी होता है कि उस तकनीकी शब्द से जो सामान्य अर्थ प्रकट होता है वह उसके तकनीकी अर्थ से पूरी तरह मेल नहीं खाता। उदाहरण के लिए कंप्यूटर के पर्दे पर रेखाएँ खींचने के लिए एक चूहे की तरह के एक छोटे से उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है जिसे 'mouse' नाम दिया गया है। इसे मेज पर रखे एक प्लेट पर इधर-उधर घुमाया जाता है और पर्दे पर इच्छित रेखाएं खिंचती चली जाती हैं। अंग्रेजी में mouse का यह मूल अर्थ नहीं। इस शब्द पर आविष्कारकर्ता ने एक नया अर्थ अरोपित कर दिया और एक नया तकनीकी शब्द बन गया। धीरे-धीरे सतत प्रयोग और व्यवहार से तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध रूढ़ हो जाता है। ❐

सुनना और बोलना –प्रभावी श्रवण के आयाम, शुद्ध उच्चारण, भाषण, एकालाप व वार्तालाप

8 **प्रभावी श्रवण के विविध आयामों का विश्लेषण कीजिए।**

अथवा

भाषायी दक्षता में प्रभावी श्रवण किस प्रकार सहायक है? प्रभावी श्रवण की प्रक्रिया, तत्वों और उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–प्रत्येक व्यक्ति बोलने से अधिक सुनता है, लिखने से अधिक पढ़ता है और सन्देश भेजने की अपेक्षाकृत अधिकाधिक सन्देश प्राप्त करने में अधिक समय व्यय करता है। यह सत्य है कि व्यक्ति वास्तव में सुनने में अधिक समय खर्च करता है, परन्तु प्राय: वह श्रवण कुशलता को बढ़ाने के बारे में बहुत कम विचार कर पाता है।

प्रभावी श्रवण से अभिप्राय–श्रवणता को हम उसकी अनुभूति या समझ की यथार्थता के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। वास्तव में, श्रवणता को जैसा सोचा या समझा जाता है, यह क्रिया इतनी सरल नहीं है। अधिकांश व्यक्ति इस बारे में अक्षम होते हैं क्योंकि वे सुनने व सोचने के बारे में सावधानी नहीं रखते। अतः वे जितना सुनते हैं, उससे कुछ कम ही याद रख पाते हैं। अन्य शब्दों में, अधिकाधिक व्यक्ति अधिकतर अप्रभावी तरीके से सुनते हैं। यद्यपि प्रभावी श्रवण सफल सम्प्रेषण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बिना प्रभावी श्रवण के सम्प्रेषण सम्भव नहीं है अर्थात् प्रभावी श्रवणता के बिना प्रभावी सम्प्रेषण असम्भव है।

- **"लॉड जे. जेम्स के अनुसार**–"श्रवण क्षमता की न्यूनता प्रत्येक स्तर पर हमारे कार्य से सम्बन्धित समस्याओं की उत्पत्ति का मुख्य स्रोत है।"
- **फिलिप्स मोरगन और एच. केन्ट बेकर** ने यह प्रमाणित किया कि "औसत व्यक्ति पिछले 10 मिनट से किए गए वार्तालाप का आधा हिस्सा ही याद रख पाने में समर्थ रहते हैं, जबकि आधा हिस्सा वे 48 घण्टे के अन्दर भूल जाते हैं। यहाँ पर यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि अधिकांश व्यक्तियों को उनकी श्रवण क्षमता बेहतर करने की आवश्यकता है।"

श्रवण प्रक्रिया–श्रवण एक प्रक्रिया है। इसमें निम्नलिखित पाँच क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं–1. अनुभूति या बोध, 2. निर्वचन (व्याख्या), 3. मूल्यांकन, 4. स्मरण, 5 अनुक्रिया या प्रतिक्रिया।

1. **अनुभूति (Sensing)**–श्रवण करते समय हमें सन्देश को लिख लेना चाहिए क्योंकि सन्देश की प्राप्ति में शोर, दुर्बल श्रवण शक्ति व असावधानी व उपेक्षा बाधा पहुँचाते हैं। इन अवरोधों को दूर कर हमें सन्देश को ग्रहण करने में ध्यान लगाना चाहिए।
2. **निर्वचन (Interpreting)**–यदि बोलने वाले का सन्दर्भ कुछ अलग है तो हमें उसका विश्लेषण कर यह जानना आवश्यक है कि सोचने वाले की बात का वास्तविक अर्थ क्या है। इसके लिए हमें उसकी अभाषिक गतिविधियों (Non verbal Activities) पर ध्यान देना होगा। यह हमारी अनुभूति की क्षमता को बढ़ाती है। साथ ही साथ ग्राह्यता व अवकूटन में सहायक होती है।
3. **मूल्यांकन (Evaluating)**–इसका अभिप्राय सन्देश के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करने से है। वक्ता द्वारा दिए गए संकेतों को जो आवश्यक है, उस पर विचार करना। जो सुझाव अप्रभावी है, उन्हें पृथक् करना। ये सब गतिविधियाँ मूल्यांकन के अन्तर्गत आती हैं।
4. **स्मरण (Remembering)**–सन्देशों को भविष्य के सन्दर्भ के लिए संकलित कर लिया जाता है। वक्ता द्वारा दिए गए मुख्य बिन्दुओं को अनिवार्य रूप से लिख लेना या उसको अपने मस्तिष्क में उतारना इसके अन्तर्गत आता है।
5. **अनुक्रिया (Responding)**–वक्ता द्वारा दिए गए सन्देश को ग्रहण कर उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना इसमें सम्मिलित है। श्रवणता में भौतिक व मानसिक क्रियाओं की आवश्यकता होती है और यह भौतिक व मानसिक बाधाओं का विषय है।

आदर्श श्रोता के मुख्य तत्व–एक अच्छे श्रोता के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं-

1. **अनुकूल व्यवहार (Positive Attitude)**–प्रत्येक व्यक्ति एक अच्छा श्रोता नहीं होता। एक अच्छी प्रभावी श्रवणता के लिए अनुकूल व्यवहार का होना अति आवश्यक है। यदि श्रवण क्रिया में श्रोता प्रतिकूल व्यवहार दर्शाता है तो श्रवणता का उद्देश्य पूरा नहीं होता।
2. **ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता (Ability to Concentrate)**–एक अच्छे श्रोता में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता होना अनिवार्य है। मस्तिष्क में एक से अधिक दिशाओं में सोचने व समझने की अद्‌भुत क्षमता होती है। एक व्यक्ति में बोलने की क्षमता लगभग 180 से 250 शब्द प्रति मिनट होती है व ग्राह्य क्षमता लगभग 400 से 600 शब्द प्रति मिनट होती है। श्रवण प्रक्रिया में सम्प्रेषक या प्राप्तकर्ता की

ओर से थोड़ा-सा विचलन श्रवणता में विभ्रम पैदा करता है। इस स्थिति को 'Miscommunication' कहा जाता है। यदि श्रोता में अनुशासन व एकाग्रता है तो वह इसके द्वारा सम्प्रेषण में विभ्रम को न्यून कर सकता है।

3. **प्रश्नोत्तर काल में (सहभागिता) प्रवेश (Enter into iQuestion Answer Sessions)**–जब मस्तिष्क व मन की एकाग्रता भंग होने लगती है तो ऐसी स्थिति में प्रश्नोत्तर काल में प्रवेश करना उचित होता है। प्राप्तकर्ता या (सुनने वाला) श्रोता प्रश्न पूछता है। इस स्थिति में सम्प्रेषक या वक्ता प्रश्नकर्त्ता की ओर देखता है और उसका जवाब देता है। सम्प्रेषक के लगातार घूरने से मस्तिष्क को विचलित होने से नहीं रोका जा सकता । यदि सम्प्रेषक द्वारा श्रोता पर बराबर नजर रखी जाती है तो श्रोता के लिए विचलित होना आसान नहीं होता और न ही वह धोखाधड़ी कर पाता है।
4. **सहायक शारीरिक मुद्रा (Conductive Body Posture)**–श्रवणता के समय शारीरिक भाषा सम्प्रेषण प्रक्रिया में सहायक होती है। पीछे होकर बैठना या कुर्सी में धँसकर बैठना इस बात को दर्शाता है कि श्रोता स्वयं को सम्प्रेषक से दूर रखना चाहता है।

प्रभावी श्रवण के उद्देश्य तथा लाभ–यह समझना आवश्यक है कि प्रभावी श्रवण के क्या लाभ व उद्देश्य होते हैं? प्रभावी श्रवणता के निम्न उद्देश्य व लाभ होते हैं–

1. प्रभावी श्रवण सम्पूर्ण श्रवण-क्षमता को बढ़ाता है। यदि (प्राप्तकर्ता) श्रोता अच्छे से श्रवण करता है तो गलतियाँ या भ्रम कम होते हैं, कार्य की पुनरावृत्ति कम होती है, कार्य करने का समय व्यर्थ नहीं जाता, उत्पादकता बढ़ जाती है अर्थात् श्रोता की सम्पूर्ण क्षमता बढ़ जाती है।
2. प्रभावी श्रवण संगठन के प्रति जागरूकता की भावना को बढ़ाता है।
3. प्रभावी श्रवण सम्प्रेषक द्वारा प्रेषित सन्देश के वास्तविक अर्थ को प्राप्त करने में सहायक होता है। यह अच्छे व सफल निर्णय लेने में सहायक होता है, क्योंकि प्राप्त सूचना अच्छी गुणवत्ता की होती है।
4. अच्छी श्रवणता मानवीय समस्याओं को सहजता से दूर कर सकती है। अधोगामी सम्प्रेषण (Downward Communication) के कई उद्देश्यों को प्रभावी श्रवण के द्वारा प्राप्त किया जाता है।
5. एकाग्र श्रवणता संगठन के कर्मचारियों में शान्तिपूर्ण वातावरण निर्मित करने में सहायक है। धीरज व सहानुभूतिपूर्ण श्रवणता क्रोध व उग्रता को कम करने में सहायक है।
6. यदि संगठन के कर्मचारी यह पाते हैं कि उनकी माँगों व शिकायतों, विचारों को उनके अधिकारी एकाग्रता व सहानुभूतिपूर्वक सुन रहे हैं तो वे अधिक सहयोगी व जिम्मेदार हो जाते हैं।
7. श्रवणता संवेदनशील क्षेत्रों, जो विस्फोटक हो सकते हैं, उनको नियन्त्रित करने में सहायक होती है।
8. प्रभावी श्रवण अन्य व्यक्तियों को श्रवण हेतु प्रभावित करता है।
9. श्रवणता संगठन व व्यवसाय की श्रेष्ठ नीति निर्धारण में सहायक होती है। यदि हम अपने अधीनस्थों, सहकर्मियों के विचारों, उपायों को ध्यानपूर्वक सुनें तो हमें इस बात का संकेत प्राप्त होगा कि हमारे संगठन के लिए किस प्रकार की नीति उपयुक्त होगी।

निष्कर्ष–प्रभावी श्रवणता एक असाधारण कला है। इसके लिए चैतन्यता, आवेग या उत्साह, धीरज व अभ्यास को आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण से श्रोता की 25 प्रतिशत से अधिक श्रवणता में वृद्धि हो सकती है। एक व्यक्ति जो लगभग 100 से 200 शब्द प्रति मिनट बोल रहा है और यदि श्रोता इससे अधिक शब्द ग्रहण करने की स्थिति में है तो उसे एक अच्छा श्रोता कहा जाएगा, क्योंकि वह सन्देश को केन्द्रित होकर ग्रहण कर रहा है। एक अच्छा श्रोता सम्प्रेषक के उद्देश्य को समझने में अपने समय का सदुपयोग करता है, उसके सन्देश के बारे में चिन्तन, मनन करता है व अर्थ को समझता है एवं अध्ययन व विश्लेषण करता है।

❒

भाषा दक्षता में शुद्ध उच्चारण का क्या महत्त्व है? भाषा दक्षता के लिए उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- किसी भी भाषा में उच्चारण का बहुत महत्त्व होता है। भाषा सीखने तथा सिखाने में उच्चारण की अशुद्धियाँ बहुत बाधक होती हैं। शुद्ध उच्चारण ही भाषा-विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है। हिन्दी भाषा उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है तथा इसके राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होने के बाद इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। अतएव इसे शुद्ध, समृद्ध, सर्वप्रिय एवं सर्वग्राह्य बनाने हेतु उच्चारण की शुद्धता की तरफ ध्यान देना परमावश्यक है। बहुधा देखा गया है कि शुद्ध उच्चारण न कर सकने के कारण हम उपहास के पात्र बन जाते हैं; उदाहरणार्थ अगर कोई व्यक्ति 'मैं स्टेशन पर शास्त्री जी को छोड़ने जा रहा हूँ' के स्थान पर 'मैं स्टेसन पर सास्त्री जी को सोड़ने जा रहा हूँ' कहे तो यह वाक्य कर्णकटु प्रतीत होता है। इसी तरह अगर कोई 'आपत्तिकाल में स्वजनों ने मेरी मदद की' के स्थान पर 'आपत्तिकाल में शवजनों ने मेरी मदद की' कहे, तो यह अर्थ का अनर्थ होगा।

शुद्ध उच्चारण महत्त्व–हिन्दी भाषा शिक्षण में शुद्ध उच्चारण का अत्यधिक महत्त्व है। अशुद्ध उच्चारण अपूर्ण माना जाता है। शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक भाषा अस्वाभाविक एवं प्रभावहीन हो जाती है। प्रायः हम जैसा उच्चारण करते हैं या बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। अतः लिखित भाषा में भी वे दोष आ जाते हैं। शब्दों की वर्तनी की अशुद्धता के कारण हमारा उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। इस प्रकार शुद्ध उच्चारण का बड़ा महत्त्व है। वही भाषा का स्वरूप निखारता है।

- शुद्ध उच्चारण ही भाषा के ज्ञान का आवश्यक अंग है तथा भाषा में सम्प्रेषण का प्रमुख हिस्सा (भाग) है।
- बालक जैसे ही बोलना सीखता है, अनुकरण से अपनी मातृभाषा सीख जाता है, लेकिन उस पर स्थानीय प्रभाव अवश्य होता है।
- शुद्ध उच्चारण से भाषा सम्प्रेषण की बोधगम्यता आती है।
- शुद्ध उच्चारण से भाषा परिष्कृत तथा परिमार्जित होकर उसमें निखार आता है।
- अशुद्ध उच्चारण सुनने में भी अच्छा नहीं लगता तथा भावार्थ ही बदल जाता है जिससे शुद्ध सम्प्रेषण भी सम्भव नहीं हो पाता है।

उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता–हिन्दी भाषा में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष प्रचलित हैं। उच्चारण में ध्वनियों का विशेष महत्त्व है। ध्वनियों के अभाव में शब्दों का अस्तित्व नहीं है और न ही भाषा का। इसलिए ध्वनियों के उच्चारण पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। उच्चारण की शिक्षा की आवश्यकता के कारण हैं–

1. अशुद्ध उच्चारण से भाषा का स्वरूप बिगड़ता है। अशुद्ध उच्चारण उसका सुसंस्कृत स्वरूप विकृत करता है।
2. बिना उच्चारण ज्ञान के भाषा का ज्ञान नहीं हो सकता है। उच्चारण ध्वनियों के आधार पर किया जाता है। ध्वनियों के अभाव में न भाषा ठीक ढंग से समझी जा सकती है, न ही उसका सम्यक ज्ञान ही हो पाता है।
3. उच्चारण बाल्यावस्था से ही बनता-बिगड़ता है। इस कारण बालकों के उच्चारण पर विशेष बल देना चाहिए। बचपन से ही भ्रष्ट उच्चारण से बचाया जाना चाहिए।
4. हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ-उपबोलियाँ प्रचलित हैं, यथा ब्रज, अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, मालवी, बुन्देली आदि। इन बोलियों का प्रभाव खड़ी बोली पर पड़ा है। इस कारण उसमें ग्रामीण भाषा का पुट मिल गया है। अध्यापक को सावधानीपूर्वक ग्रामीण बोलियों के उच्चारण के प्रभाव से बच्चों को मुक्त करना चाहिए। दुर्भाग्यवश अध्यापक भी इस दुष्प्रभाव से वंचित नहीं हैं। इसलिए अशुद्ध उच्चारण प्रचलित है।

5. अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के बालकों पर प्रांतीय भाषाओं का प्रभाव पड़ता है। वहाँ के बालकों को हिन्दी के उच्चारण में इन प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव से बचाना चाहिए।

इस प्रकार हिन्दी में उच्चारण सम्बन्धी अनेक दोष एवं कठिनाइयाँ हैं। सावधानीपूर्वक इनका निराकरण करना चाहिए। इसके लिए छात्रों को उच्चारण दोष से मुक्त करना आवश्यक है।

□

10 **भाषायी दक्षता प्राप्त करने में अशुद्ध उच्चारण किस प्रकार बाधक बनता है? इस सन्दर्भ में उच्चारण दोष के कारणों और उनके निवारण का विवेचन कीजिए।**

उत्तर–शुद्ध उच्चारण का तात्पर्य मानक उच्चारण से है। हिन्दी एक विशाल क्षेत्र की भाषा है और इस क्षेत्र में अनेक बोलियाँ हैं। इन बोलियों के प्रभाव से हिन्दी बोलने वालों में उच्चारण-भेद पाया जाता है। इस भिन्नता के रहते हुए भी उच्चारण की दृष्टि से सभी हिन्दी ध्वनियों के मानक रूप मान लिए गए हैं। शिक्षार्थियों को इस मानक उच्चारण की शिक्षा प्रदान करनी है, जिससे उच्चारण-भेद अथवा उच्चारण दोष दूर हो सके।

शुद्ध उच्चारण का तात्पर्य केवल वर्णों के उच्चारण से नहीं है, वरन् शब्द और वाक्य स्तर पर भी शुद्ध उच्चारण से है। शब्द और वाक्य स्तर पर उच्चारण में बलाघात, अनुतान और संगम का भी ध्यान रखना पड़ता है। अत: उच्चारण शिक्षण में वर्णों के शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बलाघात, अनुतान और संगम से भी शिक्षार्थियों को अवगत कराना आवश्यक है।

उच्चारण दोष के कारण–उच्चारण सम्बन्धी दोष अनेक कारणों से होते हैं। क्षेत्र विशेष एवं व्यक्ति विशेष के कारण ये दोष उच्चारण के विकृत स्वरूप को जन्म देते हैं। उच्चारण दोष के कारण हैं-

1. **शारीरिक कारण**–उच्चारण यन्त्रों के विकार के कारण उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं। कुछ लोगों के कण्ठ, तालु, होंठ, दाँत, आदि उच्चारण-अंगों में दोष होते हैं। इसलिए वे सम्बद्ध ध्वनियों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं।
2. **वर्णों के उच्चारण का अज्ञान**–हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि उसका जैसा अक्षर-विन्यास है, ठीक वैसे ही उच्चरित भी की जाती है। इसके बावजूद अज्ञानवश वर्णों व शब्दों के सही रूप को कुछ लोग उच्चरित नहीं कर पाते हैं, जैसे–आमदनी को आम्दनी कहना, खींचने को खेंचना कहना, प्रताप को परताप कहना, वृक्ष को व्रक्ष कहना, वीरेन्द्र को बीरेन्दर कहना आदि।
3. **अन्य भाषाओं का प्रयोग**–हिन्दी भाषा पर अन्य भाषाओं का भी प्रभाव पड़ता है, जिससे उसके उच्चारण पर प्रभाव पड़ता है। उर्दू के कारण हिन्दी का क, ख, ग –क़, ख़, ग़ हो गया है। अंग्रेजी के कारण **कॉलेज, प्लेटफॉर्म** आदि अनेक शब्द जुड़ गए हैं। अंग्रेजी के कारण ही 'आ' का उच्चारण 'ऑ' होने लगा है।
4. **मनोवैज्ञानिक कारण**–उच्चारण पर मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव पड़ता है। भय, संकोच, शीघ्रता, बिलम्ब आदि से उच्चारण में दोष आ जाते हैं। इससे तुतलाना, लापरवाही आदि का विकास होता है और उच्चारण प्रभावित होता है।
5. **स्थानीय प्रभाव**–जिस क्षेत्र विशेष में बालक निवास करता है, वहाँ की भाषा बच्चे के उच्चारण को प्रभावित करती है–कहा भी जाता है–"चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी" स्थानीय बोली के प्रभाव से उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।
6. **अध्यापक की अयोग्यता**–उच्चारण सुधार में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान है। अगर अध्यापक उच्चारण में सतर्कता नहीं रखता या शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ है, तो छात्र उसका अनुकरण करके अशुद्ध उच्चारण करना प्रारम्भ कर देते हैं ओर यह दोष सदा के लिए उनमें घर कर जाता है।

7. **प्रयत्नलाघव**–ध्वनियों व शब्दों के उच्चारण में पूर्ण सावधानी न रखने पर दोष का आना स्वाभाविक है। शब्दों एवं ध्वनियों का उच्चारण पूर्णरूप से किया जाना चाहिए। प्रयत्न-लाघव विधि को अपनाने से उच्चारण सम्बन्धी दोष आ जाते हैं, यथा परमेश्वर को 'प्रमेसर', 'मास्टर साहब' को 'मास्साब' आदि।
8. **दोषपूर्ण आदतें**–वैयक्तिक दोषपूर्ण आदतें भी अशुद्ध उच्चारण का कारण बन जाती हैं। अनुस्वरों का अधिक उच्चारण इसका प्रचलित रूप है, जैसे 'कहा' को 'कहाँ' कहना या अनुस्वरों का लोप जैसा 'हैं' को 'है' कहना आदि। रुक-रुक कर बोलना, शीघ्रता में बोलना, किसी की नकल करके बोलना भी उच्चारण दोष लाने के कारण है।
9. **शुद्ध भाषा के वातावरण का अभाव**–भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अगर भाषा के शुद्ध रूप का वातावरण नहीं मिला तो अशुद्ध उच्चारण स्वाभाविक है। अशुद्ध उच्चारण के बीच पलने वाला बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है।
10. **अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान**–जिन छात्रों को अक्षरों एवं मात्राओं का स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया जाता, उनमें उच्चारण-दोष होता है। संयुक्ताक्षरों के संदर्भ में यह भूल अधिक होती है; जैसे स्वर्ग को सरग कहना, कर्म को करम कहना, धर्म को धरम कहना आदि।
11. **नागरी ध्वनियों का अनिश्चित उच्चारण**–नागरी ध्वनियों में 'ड़' 'ढ़'; 'ऋ', 'ष' 'क्ष' 'ज्ञ' आदि का प्रयोग बहुत कम होता है। इस कारण इनका उच्चारण अनिश्चित-सा हो गया है। इस कारण इनके उच्चारण में बहुधा भूल की संभावना रहती है।
12. **अति शीघ्रता, असावधानी** से भी उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।

उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निराकरण–शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था से ही उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए, ताकि बालक अशुद्ध उच्चारण न करें। बाल्यावस्था से से ही इस पहलू पर ध्यान देने से बालक भविष्य में कभी भी उच्चारण के दोषी नहीं होंगे। अशुद्ध उच्चारण के निराकरण के लिए निम्न उपाय किए जाने चाहिए-

1. **उच्चारण अंगों की चिकित्सा**–अगर उच्चारण करने वाले अंगों में कोई दोष हो तो चिकित्सक से चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने में श्वास नलिका, कण्ठ, जीभ, वर्त्स, नाक, ओष्ठ, तालु, मूर्धा, दाँत आदि की सहायता ली जाती है। इन अंगों में दोष आने पर उच्चारण के प्रभावित होने की संभावना रहती है। इसलिए इन अंगों में दोष आने पर तत्काल चिकित्सा करानी चाहिए। उच्चारण करने वाले अंगों का चित्र सामने पृष्ठ पर दिया गया है।
2. **शुद्ध उच्चारण वाले लोगों से सम्पर्क**–बालक में अनुकरण की अपूर्व क्षमता होती है। वह अनुकरण के माध्यम से कठिन से कठिन तथ्य समझ लेता है। अगर उसे शुद्ध उच्चारण करने वाले लोगों, विद्वानों आदि के साथ रखा जाए तो उसमें उच्चारण दोष का भय नहीं रहेगा। उसका उच्चारण रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर आदि के माध्यम से इसी पद्धति पर सुधारा जा सकता है।
3. **नागरी ध्वनितत्व को समझाना**–अध्यापक को ध्वनितत्वों का विशेषज्ञ होना चाहिए। उसे बालकों को वर्णमाला के स्वर, व्यंजन से लेकर कठिन उच्चारणों की शिक्षा विधिवत् देनी चाहिए, ताकि उनका उच्चारण सुधर जाए। उसे अर्द्ध-स्वरों एवं अर्द्ध-व्यंजनों, संयुक्ताक्षरों, संयुक्त ध्वनियों आदि का विशेष ध्यान रखकर उच्चारण सीखना चाहिए।
4. **ध्वनि-यंत्रों का सम्यक ज्ञान कराना**–बालकों को यह बताना अनिवार्य है कि ध्वनियाँ कैसे बनती हैं? ध्वनियों के उच्चारण में जीभ, ओष्ठ, कण्ठ, काकली आदि का क्या योगदान है। अल्पप्राण एवं महाप्राण ध्वनियों में क्या अन्तर है? स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है? इन तथ्यों को उसे उदाहरण देकर शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इस संदर्भ में उसे निम्न ध्वनि-यंत्रों एवं दृश्य-श्रव्य उपकरणों की सहायता लेनी चाहिए।

5. **हिन्दी की कतिपय विशेष ध्वनियों का अभ्यास**–प्राय: हिन्दी भाषा में स, श एवं ष, न एवं ण, व तथा ब, ड तथा ड़, क्ष तथा छ आदि का उच्चारण दोष बालकों में पाया जाता है जैसे विकास का उच्चारण 'विकाश', महान का उच्चारण 'महाण', वन का उच्चारण 'बन' आदि। अध्यापक को इस संदर्भ में विशेष जागरूक रहना चाहिए और इस संदर्भ में भूल होते ही निराकरण कर देना चहिए।
6. **बल, विराम तथा सस्वर पाठ का अभ्यास**–अक्षरों या शब्दों का उच्चारण ही पर्याप्त नहीं है, वरन् पूरे वाक्य को उचित बल, विराम तथा सस्वर वाचन के आधार पर पढ़ने का अभ्यास डालना भी आवश्यक है। शब्दों पर उचित बल देकर पढ़ने से अर्थभेद एवं भावभेद का ज्ञान होता है। विराम के माध्यम से लय, प्रवाह एवं गति का पता लगता है। इसलिए इन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इससे उच्चारण सम्बन्धी दोषों का निवारण भी होता है।
7. **पुस्तकों के शुद्ध वाचन (पाठ) पर बल**–उच्चारण सम्बन्धी दोषों के निवारण के लिए पुस्तकों का शुद्ध वाचन आवश्यक है पहले अध्यापक आदर्श वाचन प्रस्तुत करे, इसके उपरान्त वह छात्रों से शुद्ध वाचन कराए। वाचन में सावधानी रखे तथा अशुद्धियों का सम्यक निवारण कराए।
8. **उच्चारण प्रतियोगिताएँ**–कक्षा शिक्षण में मुख्यत: भाषा के कालांश में उच्चारण की प्रतियोगिताएँ करानी चाहिए। कठिन शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर उनका उच्चारण कराना चाहिए। सर्वथा शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
9. **विश्लेषण विधि का प्रयोग**–कठिन एवं बड़े-बड़े शब्दों व ध्वनियों के उच्चारण में विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाए। इससे अशुद्ध उच्चारण की संभावना कम हो जाती है। पूरे शब्दों को अक्षरों में विभक्त करने से संयुक्ताक्षारों व कठिन शब्दों को सहज एवं सहजग्राह्य बनाया जा सकता है, जैसे सम्मिलित शब्द को स+म्+मि+लि+त, उत्तम शब्द को उ+त्+त+म आदि।
10. **अनुकरण विधि का प्रयोग**–उच्चारण का सुधार अनुकरण विधि से किया जा सकता है। अध्यापक कठिन शब्दों का उच्चारण स्वयं पहले करे तथा पुन: कक्षा के बालकों को उसका अनुकरण करने को कहे। अनुकरणशील छात्रों के हाव-भाव, जिह्वा संचालन, मुखावयव तथा स्वरों के उतार-चढ़ाव का पूर्ण ध्यान रखा जाना आवश्यक है, ताकि उच्चारण में प्रत्याशित सुधार लाया जा सके।
11. **स्वराघात पर बल**–कब किस शब्द पर बल देना है, इसका उच्चारण में बड़ा महत्व है। यह भावभेद एवं अर्थभेद की जानकारी कराता है। इसलिए उच्चारण में स्वराघात पर विशेष ध्यान देना चहिए। स्वराघात का अभ्यास वाचन के समय, संवाद, नाटक, सस्वर वाचन व भावानुकूल वाचन के रूप में कराया जा सकता है। स्वर के उतार-चढ़ाव पर ध्यान देने से स्वराघात का अभ्यास हो जाता है।

❐

---

11 **प्रभावी रूप से बोलना सम्प्रेषण को किस प्रकार प्रभावित करता है? स्पष्ट कीजिए।**

अथवा

'भाषण एक कला है' –कथन पर विचार करते भाषण की भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–जिस प्रकार धनुष से निकला हुआ बाण वापस नहीं आता, उसी प्रकार मुँह से निकली बात भी वापस नहीं आती, इसलिए हमें कुछ भी बोलने से पहले सोच-समझकर बोलना चाहिए। भाषण देना, व्याख्यान देना अपनी बात को कलात्मक और प्रभावशाली ढंग से कहने का तरीका है। इसमें अपने भावों को आत्मविश्वास के साथ नपे-तुले शब्दों में कहने की दक्षता प्राप्त कर व्यक्ति ओजस्वी वक्ता हो सकता है। हाथों को नचाकर, मुखमुद्रा बनाकर ऊँचे स्वर में अपनी बात कहना मात्र भाषण या बातचीत की कला नहीं है। भाषण ऐसा हो, जो श्रोता को

सम्मोहित कर ले और वह पूरा भाषण सुने बिना सभा के बीच से उठे नहीं। इसलिए वहीं तक बोलना जारी रखें, जहाँ तक सत्य का संचित कोष आपके पास है। धीर-गंभीर और मृदु वाक्य बोलना एक कला है, जो संस्कार और अभ्यास से स्वत: ही आती है।

प्रभावशाली बोलने या बातचीत करने के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। प्रभावी ढंग से बोलना एक कला है। वाणी हमारे व्यक्तित्व का आईना है। तभी तो कबीर ने कहा था-

वाणी ऐसी बोलिये जो मन का आपा खोय।
औरन कू शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

तुलसीदास ने भी बोलने के प्रभाव को बहुत गहरा बताया था-

तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण इक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर॥

प्रभावी बोलने की कला सीखी एवं सुधारी जा सकती है। अध्ययन के माध्यम से आप अपनी भाषा, जानकारी, लेखन कला को निखार सकते हैं। विभिन्न उपकरणों द्वारा जैसे टी.वी., रेडियो, इंटरनेट आदि से सुनकर आप सही उच्चारण और बोलने की कला को सीख सकते हैं। बातचीत को प्रभावशाली बनाने में शारीरिक भाषा जैसे विभिन्न भाव भंगिमाएँ, हस्त संचालन, बैठने एवं खड़े होने का ढंग आदि, आप क्या कहना चाह रहे हैं इसका अहसास कराने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनको निखारने के लिए टी.वी. के कुशलवक्ताओं के जीवंत कार्यक्रम बहुत उपयोगी रहते हैं। शीशे के सामने खड़े होकर बोलने का अभ्यास आपको प्रभावशाली भाषण की कला में पारगंत कर सकता है। प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिए बोलने एवं सुनने की कला का विशेष महत्व है। यह भी कहा जाता है कि शान्तिपूर्वक सुनने वाला या श्रोता ही एक अच्छा बोलने वाला या वक्ता हो सकता है।

प्रभावशाली भाषण की विशेषताएँ–बाह्य रूप से हम सब एक जैसे हैं लेकिन हमारे विचार, अवधारणाएँ, भावनाएँ, आवेग आदि हमें एक दूसरे से भिन्न करते हैं और इन सब को एक दूसरों तक पहुँचाने की सबसे आसान विधि बोलना और सुनना होता है। प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिए आवश्यक है कि आप एक कुशल वक्ता बनें जिसके लिए आपके बोलने के कौशल में विकास की हमेशा आवश्यकता रहती है। बोलते समय आपको कुछ बिन्दुओं का ध्यान अवश्य रखना चाहिए जैसे-

1. **शान्त वातावरण**–जब आप बोल रहें हो तो उस स्थान पर ऐसी गतिविधियाँ नहीं हो रही हों जिससे आपका या सुनने वाले का ध्यान बँटे, जैसे–टेलीविज़न का चलना, मोबाइल फोन पर कॉल का आना, रेडियो आदि का बजना। ये ध्यान में व्यवधान के कारण हैं।
2. **भाषण की भाषा और विषय में तालमेल**–प्रभावी भाषण देने या बोलने वाले की भूमिका सबसे अहम होती है। अपनी बातें कहने के लिए किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना है, किस प्रकार एवं किस क्रम में अपने विचारों को रखना है, बोलने की गति, सुर, समय-सीमा, सामयिक प्रसंग, ठहराव आदि सबका ध्यान रखना आवश्यक है। गलत स्थान पर ठहराव से आपकी बात का संदेश बदल सकता है। आपकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो कि सरल एवं स्पष्ट हो और सरलता से आपका संदेश सुनने वाले तक पहुँच जाए। आप क्या बोल रहे हैं और क्या बोलना चाहते हैं–इन दोनों में तालमेल होना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जिनके अर्थ आपको स्पष्ट हों और दूसरों के लिए अप्रिय न हों।
3. **शुद्ध उच्चारण**–शब्दों का सही प्रयोग एवं शुद्ध उच्चारण बोलने वाले के संदेश को आसानी से श्रोता तक पहुँचाता है। यदि आपकी बोलने की गति आवश्यकता से धीमी या तेज है तो यह सुनने वाले के लिए व्यवधान पैदा कर सकती है।

4. **शारीरिक भाषा**–आपके बोलने का संदेश एवं आपकी शारीरिक भाषा में तालमेल होना अत्यन्त आवश्यक है। आपके चेहरे पर आए हाव-भाव, आपके बैठने या खड़े होने की मुद्रा, आपके हाथों का संचालन एवं आपके द्वारा दिए गए संकेत आपके संदेश को श्रोता तक पहुँचाने में उतने ही सक्षम हैं जितनी की आपकी भाषा।

5. **श्रोता की ओर देखना**–बोलते समय बोलने वाले एवं सुनने वाले का एक-दूसरे की ओर देखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बोलते समय श्रोता की ओर अवश्य देखें परन्तु इसका अर्थ घूरना नही है। यह आपको सुनने वाले की रुचि का पता करने में सहायक होता है।

6. **आदर दर्शाना**–जब आप बोल रहे हों तो सुनने वाले के लिए आपके मन में आदर या प्रेम भावना आपके बोलने के ढंग से अवश्य प्रदर्शित होनी चाहिए। आपके बोलने का ढंग अपने विचारों की अभिव्यक्ति का होना चाहिए न कि दूसरों पर हावी होने का।

7. **श्रोताओं की रुचि परखना**–बोलने वाले या वक्ता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह इस बात को अवश्य परखें कि क्या सुनने वाले उसकी बातों को सुन एवं समझ रहे हैं। सुनने वाले की रुचि एवं ध्यान बनाएँ रखने के लिए प्रतिपुष्टि अत्यन्त आवश्यक है। बोलते समय विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण रोचक ढंग से करने से सुनने वाले की रुचि बराबर बनी रहेगी। बीच-बीच में उदाहरण आदि विषय वस्तु को रोचक बना सकते हैं।

8. **वक्ता का मुखर होना**–अपनी बात को आप स्पष्ट एवं स्वतन्त्र रूप से दूसरों के सामने बोलें। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वो भी आपकी बातों से सहमत हों। अत: बोलते समय दूसरों को बोलने का अवसर भी अवश्य दें और उनकी बातों के आशय को अवश्य समझें। ऐसे में दूसरों के दृष्टिकाण को समझते हुए अपनी बातों को पूरा करें।

9. **सारांश प्रस्तुत करना**–अन्त में आप क्या कहना चाहते है, इसको संक्षेप में अवश्य कहें।

भाषण की भाषागत विशेषताएँ–भाषण का मूल रूप (चाहे वह लिखित ही क्यों न हो) मौखिक होता है। अत: मौखिक भाषा की कुछ कसौटियों पर वक्ता को खरा उतरना पड़ता है। मौखिक अभिव्यक्ति प्रभावशाली हो इसके लिए वक्ता का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। शब्दों का स्पष्ट उच्चारण तथा अनुतान, बलाघात, लय और स्वर का सटीक प्रयोग ही भाषणकर्ता को लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाता है। भाषण लिखते समय भी उसकी मौखिक विशेषता को ध्यान में रखना चाहिए। भाषण, आलेख नहीं होता, अत: इसके लेखन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

(1) **व्याकरणिकता**–भाषण लिखते समय वाक्य व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हों तथा प्रोक्ति के रूप में उनका प्रभावशाली संयोजन हो। लिखित भाषण में वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए। इन्हें लिखते समय विराम-चिह्नों का सावधानी के साथ प्रयोग करना चाहिए जिससे कि पढ़ते समय सही स्थान पर रुका या बल दिया जा सके अथवा सही ढंग से भावों को संप्रेषित किया जा सके।

(2) **स्पष्टता**–भाषण में विचारों और भावों की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप में होनी चाहिए। भाषण इस प्रकार लिखा होना चाहिए कि उससे किसी प्रकार की भ्रांत या गलत सूचना न मिल सके।

(3) **औचित्य**–इस दृष्टि से यह देखना चाहिए कि भाषण का शब्द-चयन और शब्द-क्रम ऐसा हो कि भाषण पूरी तरह श्रोता तक संप्रेषित हो सके। संदेश को विषयानुकूल बनाए रखना भी ज़रूरी है जिसमें आँकड़े, द्रष्टांत, नई जानकारियाँ देकर विषय को पुष्ट किया जा सकता है।

(4) **प्रभावशीलता**–भाषण में प्रभाव तभी आ सकता है जब उसमें भाषा का प्रवाह और ताज़गी हो। छोटे-छोटे वाक्यों में विचारों को बाँधकर लिखना, इसका सबसे अच्छा तरीका है। आसान और आम जनता की समझ में आने वाले शब्दों, मुहावरों, कहावतों का प्रयोग भी भाषण को प्रभावशाली बनाता है। भाषण में जीवंतता लाने के लिए किसी कविता की पंक्ति या 'शेर' का प्रयोग करने से भी भाषण का प्रभाव बढ़ता है।

निष्कर्ष–प्रभावशाली भाषण के लिए आवश्यक है कि बोलने से पहले अपने उद्देश्य को अवश्य सुनियोजित कर लें। ऐसी वस्तुएँ या उपकरण जिनसे बोलते समय बाधा आए, उनका प्रयोग न करें। सुनने वाले या श्रोता की ओर देखकर बोलें लेकिन घूरें नहीं। वक्ता का संदेश स्पष्ट होना चाहिए। बोलते समय सरल एवं सही शब्दों का प्रयोग करें। सामान्य एवं अवसर के अनुसार बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें। आपके विचार एवं कही जाने वाली भाषा में तालमेल होना चाहिए। इस ढंग से बोलें कि दूसरा आसानी से आपकी आवाज़ सुन सके। यह जानने के लिए कि आपकी बात श्रोता तक पहुँच रही है, बीच-बीच में प्रतिपुष्टि अवश्य करें। सामान्य गति (न धीमी न तेज़) से बोलें। बोलते समय ध्यान रखें कि आपकी शारीरिक भाषा एवं मौखिक भाषा में तालमेल रहे। बोलते समय एक निश्चित दूरी अवश्य बनाएँ रखें। बोलते समय अगर सुनने वाला कुछ कहना चाहता है तो उसे भी बोलने एवं अपनी बात रखने का मौका अवश्य दें। अपनी बात को इस ढंग से प्रस्तुत करें जिससे कि सुनने वाले की रुचि एवं जिज्ञासा जाग्रत हो। एक सुर एवं गति में न बोलें। बोलते समय आवाज़ में आवश्यक उतार-चढ़ाव एवं ठहराव का विशेष ध्यान रखें। अन्त में सुनने वाले के प्रति आभार अवश्य व्यक्त करें।

❒

12 एकालाप किसे कहते हैं? एकालाप के प्रकार और विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

भाषायी दक्षता में एकालाप का क्या महत्त्व है? एकालाप के भेदों और विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भाषायी दक्षता का अर्थ है–अपने भावों, विचारों और संवेदनाओं को सफलतापूर्वक एक-दूसरे तक पहुँचाने की योग्यता प्राप्त करना। सम्प्रेषण कई माध्यमों से होता है परंतु उसका मूल माध्यम भाषा ही है। भाषा मौखिक, लिखित और संकेतात्मक होती है। बोलकर अपने विचारों और भावों की अभिव्यक्ति भाषा का मौखिक रूप है। भाषा के लिखित रूप में व्यक्ति अपने भावों और विचारों को लंबे समय तक संरक्षित व सुरक्षित रख सकता है। संकेतों अथवा इशारों द्वारा अपनी बात दूसरे तक पहुँचाना भाषा का सांकेतिक प्रकार है। भाषा के इन्हीं प्रकारों से सम्प्रेषण की प्रकिया पूरी होती है। इस सम्प्रेषण प्रक्रिया के भी अनेक माध्यम हैं, जिनमें से एकालाप भी सम्प्रेषण की एक शैली है।

एकालाप–एक व्यक्ति अपने आप से ही आलाप करे यानि वार्तालाप या बातचीत करे, उसे एकालाप कहते हैं। यह बातचीत वह सामान्यत: बोलकर नहीं करता अपितु बड़बड़ा कर या मौन रहकर भी करता है। व्यक्ति चिंतनशील प्राणी है। वह हमेशा कुछ न कुछ मनन करता रहता है। जब वह आँखें बंद करके ध्यान की मुद्रा में बैठता है तब भी वह कुछ न कुछ सोचता रहता है। अपने भूत, वर्तमान और भविष्य की योजनाओं के बारे में अपने आप से सवाल जवाब करता रहता है। ऐसी स्थिति में वह वक्ता और श्रोता, संचारक और प्रापक स्वयं ही होता है। इसकी विशेषताएँ हैं-

1. **सम्प्रेषण का मूल**–यह सम्प्रेषण प्रक्रिया हर एक व्यक्ति में मानसिक रूप से निरंतर गतिमान रहती है। व्यक्ति जब दूसरों से संवाद करता है तो वह सोच विचार कर बोलता है। वह मन ही मन में कुछ बोलने से पहले कई बार उस विषय पर चिंतन मनन करता है फिर दूसरों के सामने अपनी बात रखता है और यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह न ही अच्छा व्यक्ति कहलाता है और न ही अच्छा वक्ता कहलाता है। व्यक्ति के अंतर्मन में होने वाला यह एकल सम्प्रेषण वस्तुत: प्रत्येक प्रकार के सम्प्रेषण का मूल है, केंद्र है तथा ज्ञान-विज्ञान, दर्शन इत्यादि का मूल स्रोत है क्योंकि सम्प्रेषण का प्रथम चरण 'विचार' सर्वप्रथम व्यक्ति के मस्तिष्क में उपजता है। यहीं से सम्प्रेषण की प्रथम प्रक्रिया 'एकालाप' का प्रारम्भ हो जाती है।

2. **सम्प्रेषण का प्राण तत्व**–एकालाप सम्प्रेषण अन्य सभी सम्प्रेषणों का प्राण तत्व है। इसी प्राण तत्व से ऊर्जा लेकर ही अन्य सम्प्रेषण प्रक्रिया संचालित होती हैं। व्यक्ति अपने पूर्वजों अपने प्रियजनों और अपने इष्ट देव से बातचीत करते समय भी एकालाप की सम्प्रेषण प्रक्रिया से ही गुजर रहा होता है। एकालाप, संवाद का ही एक रूप है।
3. **एकल व मौन अभिव्यक्ति**–एकालाप एकल अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। संलाप या वार्तालाप में जहाँ दो या दो से अधिक व्यक्ति होते हैं वहीं एकालाप में एक ही व्यक्ति का अस्तित्व वक्ता और श्रोता के रूप में होता है। साहित्य में एकालाप का प्रयोग नाटकों में सबसे अधिक होता है। नाटकों में एकालाप को स्वगत कथन कहा जाता है। एकालाप संवाद वे हैं जो मंच पर किसी दूसरे पात्र को नहीं सुनाए जाते हैं। उसमें वक्ता और श्रोता एक ही पात्र होता है। वह स्वयं से प्रश्न करता है और स्वयं ही उन प्रश्नों के उत्तर देता है।
4. **भाषायी बन्धनों से मुक्त**–एकालाप में व्यक्ति जैसे चाहे वैसी ही भाषा का प्रयोग करता है। उसके लिए भाषा सम्बन्धी बंधनों का नियम वहाँ नहीं होता है। एकालाप या स्वगत कथन अधिकांशत: व्यक्ति के भावावेश की स्थिति होती है और कभी-कभार किसी घटना विशेष से संबंधित मन की उलझन भी होती है।
5. **स्वगत कथन**–एकालाप को हिन्दी में स्वगत कथन तथा अंग्रेजी में मोनोलॉग कहते हैं। मैथ्यू अर्नाल्ड ने इसे मन के साथ मन का संलाप कहा है।

एकालाप के भेद–साहित्य में एकालाप के दो रूप देखने को मिलते हैं–1. स्थिर एकालाप और 2. गत्यात्मक एकालाप।

(1) स्थिर एकालाप–स्थिर एकालाप में पात्र, वक्ता या संबोधक के विचार किसी एक ही बात स्थिति या घटना पर केंद्रित रहते हैं। व्यक्ति किसी एक उद्देश्य में ही सीमित और स्थिर रहता है। जैसे दयाप्रकाश सिन्हा के नाटक 'कथा एक कंस की' में कंस का कथन स्थिर एकालाप का उदाहरण है–

(मंच पर आगे बढ़ते हुए) *कहाँ से आरंभ होती है यह कथा? एक साधारण मनुष्य की असाधारण महत्वाकांक्षा की कथा। एक साधारण मनुष्य के भगवान बनने की कथा। एक धड़कते हुए हृदय के तपते लहू के ठंडे होकर धीरे-धीरे पत्थर की तरह जमने की कथा। तिल-तिल कर क्षण-क्षण मरने की कथा। जीवित ही मृत्यु वरण की कथा।"*

यहाँ एकालाप में एक ही पात्र कंस है। कंस ही वक्ता है और श्रोता है, संबोधक और संबोधित है। वह अपने से ही बात कर रहा है। प्रति उत्तर देने वाला कोई अन्य पात्र यहाँ उपस्थित नहीं है। इस एकालाप का प्रतिपाद्य है कि अधिक महत्वकाक्षाएँ मनुष्य को अत्याचारी बना देती हैं और एक समय पश्चात वह खुद अपनी नजरों में गिरता चला जाता है। यहाँ कंस के विचार इसी एक भाव पर केंद्रित हैं। इसीलिए इसे स्थिर एकालाप कहा जा सकता है।

(2) गत्यात्मक एकालाप–गत्यात्मक एकालाप में वक्ता या पात्र के विचार स्थिर नहीं रहते हैं अपितु उनमें परिवर्तन होता रहता है। यहाँ पर वक्ता स्वयं से ही प्रश्न पूछता है और स्वयं ही उसके उत्तर देता है। प्रश्नोत्तर का यह क्रम ही संलाप को गति प्रदान करता है। मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का यह अंश जिसमें मल्लिका का कालिदास के प्रति स्वगत कथन गत्यात्मक एकालाप का एक उदाहरण देखिए–

"मैं यद्यपि तुम्हारे जीवन में नहीं रही परंतु तुम मेरे जीवन में सदा बने रहे हो। मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूं, मेरे जीवन की भी कुछ उपलब्धि है। ***(ग्रंथ को घुटनों पर रख लेती है और)*** *आज तुम मेरे जीवन को इस तरह निरर्थक कर दोगे।* ***(ग्रंथ को आसन पर रखकर उद्विग्न दृष्टि से उसकी ओर देखती रहती है)*** *तुम जीवन से तटस्थ हो सकते हो परंतु मैं तो अब तटस्थ नहीं हो सकती। क्या जीवन को तुम मेरी दृष्टि से देख सकते हो। जानते हो मेरे जीवन के यह वर्ष कैसे व्यतीत हुए हैं? मैंने क्या-क्या देखा है? क्या से क्या हुई हूँ?*

(उठकर अंदर का किवाड़ खोल देती है और पालने की ओर संकेत करती है।)

इस जीव को देखते हो? पहचान सकते हो? यह मल्लिका है जो धीरे-धीरे बड़ी हो रही है और माँ के स्थान पर अब मैं उसकी देखभाल करती हूँ। यह मेरे अभाव की संतान है। जो भाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका, परन्तु अभाव के कोष्ठ में किसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं। जानते हो मैंने अपना नाम खोकर एक विशेषण उपार्जित किया है और अब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं, केवल विशेषण हूँ।"

इस एकालाप में मल्लिका स्वयं ही प्रश्न करती है (कालिदास से) और स्वयं ही उत्तर भी प्रस्तुत करती है। वह बार-बार प्रश्नोत्तर क्रिया कर्म से एकालाप को गत्यात्मकता प्रदान करती है। गत्यात्मक एकालाप का ही एक और उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है। यहाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित चंद्रगुप्त नाटक में चाणक्य स्वयं से वार्तालाप कर रहे हैं और प्रश्नोत्तरी शैली का यह उदाहरण अनुपम है-

(मगध का बंदीग्रह)

चाणक्य : समीर की गति भी अवरुद्ध है, शरीर का फिर क्या कहना ! परंतु मन में इतने संकल्प और विकल्प? एक बार निकलने पाता तो दिखा देता कि इन दुर्बल हाथों में साम्राज्य उलटने की शक्ति है और ब्राह्मण के कोमल हृदय में कर्त्तव्य के लिए प्रलय की आंधी चला देने की भी कठोरता है। जकड़ी हुई लौह शृंखले! एक बार तू फूलों की माला बन जा और मैं मदोन्मत्त विलासी के समान तेरी सुंदरता को भंग कर दूँ। क्या रोने लगूँ? इस निष्ठुर यंत्रणा की कठोरता से बिलबिला कर दया की भिक्षा माँगू? माँगू कि मुझे भोजन के लिए एक मुट्ठी चने जो देते हो, ना दो, एक बार स्वतंत्र कर दो। नहीं चाणक्य, ऐसा ना करना। नहीं तो तू भी साधारण-सी ठोकर खाकर चूर-चूर हो जाने वाली एक वाणी रह जाएगा। तब मैं आज से प्रण करता हूँ कि दया किसी से न माँगूगा और अधिकार तथा अवसर मिलने पर किसी पर न करूँगा **(ऊपर देखकर)** क्या कभी नहीं? हाँ हाँ कभी किसी पर नहीं मैं प्रलय के समान अबाध गति और कर्त्तव्य में इंद्र के वज्र के समान भयानक बनूंगा।"

❐

13 वार्तालाप का आशय स्पष्ट कीजिए तथा वार्तालाप को प्रभावी बनाने के उपाय सुझाइए।

उत्तर–वार्तालाप या बातचीत मनुष्य द्वारा समाज में परस्पर संपर्क क़ायम करने का एक बहुपक्षीय और स्वाभाविक माध्यम है। इससे मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता है। वार्तालाप ही समाज में, संस्थान में, कार्यालय में, देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने का सशक्त माध्यम है। आप विनम्रता जैसे तत्वों को अपनाकर वार्तालाप को प्रभावशाली बना सकते हैं। वार्तालाप में सिर्फ बात करना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है अपितु दूसरों की बातो को ध्यान से सुनना और समझना भी जरूरी होता है। बातचीत करने के लिए आत्मविश्वास, शारीरिक भाषा और नेत्र संपर्क जैसे पहलुओं पर ध्यान देकर आप एक सफल इन्सान बन सकते हैं।

वार्तालाप में मुख्यत: दो पक्ष होते हैं–एक वक्ता और दूसरा श्रोता अथवा एक संबोधक और दूसरा संबोधित। वार्तालाप करते समय दोनों की भूमिकाएँ परस्पर बदलती रहती हैं। कभी वक्ता श्रोता और कभी श्रोता वक्ता की भूमिका निभाता है, जैसे –

अमित : (हाथ जोड़कर पैर छूते हुए) चरण स्पर्श माँ

माताजी : सदा सुखी रहो, खुश रहो। आओ मेरे पास बैठो। कब आए? क्या अकेले ही आए हो? बच्चों को साथ क्यों नहीं लाए?

अमित : बस अभी-अभी पहुँचा ही हूँ माँ। निखिल और अखिल की अभी छुट्टियाँ नहीं हुई हैं। छुट्टियों में आपके ही पास आएंगे।

माताजी : तुम्हारी तबीयत अब कैसी है? कुछ दिन यहां ठहरोगे ना?

अमित : बस माँ तबीयत तो ऊपर नीचे होती रहती है। मुझे परसों दिल्ली वापस जाना होगा।

माताजी : अच्छा ठीक है हाथ मुंह धो लो। तब तक मैं तुम्हारे लिए खाना का बनाती हूँ।

यहाँ इस उदाहरण में स्पष्ट है कि कभी अमित वक्ता है तो उसकी माताजी श्रोता की भूमिका में है, तो कभी माताजी वक्ता की भूमिका में है तो अमित श्रोता बन जाता है।

प्रभावी वार्तालाप के उपाय–हमारी बातचीत समयानुकूल और प्रभावशाली हो और उससे कोई उद्देश्य पूरा हो सके, इसके लिए सावधानी की बड़ी भारी आवश्यकता है। जिन लोगों में प्रकृति ने यह गुण स्वाभाविक रूप से दिया है उनको तो कोई बात नहीं, पर अन्य लोगों को अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति और शिक्षाप्रद पुस्तकों से भी इन बातों को सीखना चाहिए और प्रयत्नपूर्वक उनका अभ्यास करना चाहिए। इस संबंध में कुछ नियम नीचे दिए जाते हैं-

(1) जिस तरह से हम अच्छी किताबों को केवल अपने लाभ के लिए चुनते हैं उसी तरह से साथी या समाज भी ऐसा चुनना चाहिए जिससे कि कुछ लाभ हो। सबसे अच्छा मित्र वही है कि जिससे अपना किसी तरह से सुधार हो अथवा आनंद की वृद्धि हो। यदि उन साथियों से हम कुछ लाभ नहीं उठा सकते या उनको स्वयं कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकते तो तुरंत उनका साथ छोड़ देना चाहिए।

(2) अपने साथियों के स्वभाव का पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यदि वे आपसे बड़े हैं तो उनसे कुछ न पूछो और वे जो कहें उसे ध्यानपूर्वक सुनें। यदि छोटे हैं तो उनको कुछ लाभ पहुँचाएँ।

(3) जब परस्पर की बातचीत नीरस हो रही हो तो कोई ऐसा विषय छेड़ देना चाहिए जिस पर सभी कुछ न कुछ बोल सकें और जिससे सभी मनुष्यों के आनंद में वृद्धि हो। परंतु तब तक हम ऐसा करने के अधिकारी नहीं हैं जब तक हमने नया विषय आरंभ करने के पहले कुछ न कुछ नए विषय का ज्ञान प्राप्त न कर लिया हो।

(4) जब कुछ नई महत्वपूर्ण अथवा शिक्षाप्रद बात कही जाए तब उसे अपनी नोटबुक में दर्ज कर लेनी चाहिए। उसका सार अंश रखें और कूड़ा-कचरा फेंक दें।

(5) किसी भी समाज में अथवा साथियों के संग आते-जाते पूरे समय मौनव्रती नहीं बनना चाहिए। दूसरों को खुश करने का और उनको शिक्षा देने का प्रयत्न अवश्य करें। बहुत संभव है कि इसके बदले में कुछ आनंदवर्द्धक अथवा शिक्षाप्रद सामग्री मिल जाए। जब कोई कुछ बोलता हो तो आवश्यकता पड़ने पर भले ही चुप रहा करें, परंतु जब सब लोग चुप हो जाते हैं तब सब की शून्यता को भंग करें। सब हमारे कृतज्ञ होंगे।

(6) किसी बात का निर्णय जल्दी में नहीं करना चाहिए, पहले उसके दोनों पक्षों का मनन करें। किसी भी बात को बार-बार मत कहें।

(7) इस बात को अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि हम दूसरों की त्रुटियों, दोषों को जिस दृष्टि से देखते हैं वे भी उसको उसी दृष्टि से तो नहीं देखते। इसलिए समाज के सम्मुख किसी मनुष्य के दोषों पर स्वतंत्रतापूर्ण आक्षेप, कटाक्ष अथवा टीका-टिप्पणी करने का हमको अधिकार नहीं है।

(8) बातचीत करते समय अपनी बुद्धिमत्ता दिखाने का व्यर्थ प्रयत्न न करें। यदि बुद्धिमान हैं तो हमारी बातों से मालूम हो सकता है। यदि हम प्रयत्न करके हमेशा अपनी बुद्धिमानी प्रकट करना चाहेंगे तो संभवतः हमारी बुद्धिहीनता अधिकाधिक प्रकट होती जाएगी।

(9) किसी की बात यदि हमें अपमानजनक या किसी तरह से गुस्ताखी की मालूम हो तो भी कुछ देर तक चुप रहने का प्रयत्न करें। ऐसा भी हो सकता है कि वह बात हमारे स्वभाव के कारण हमें खराब मालूम हो, परंतु सब लोगों को अच्छी मालूम हो और यदि बात ऐसी ही हुई तो हमें कुछ देर तक चुप रहने के लिए कभी भी पछताना नहीं पड़ेगा बल्कि धैर्य का एक नया पाठ सीखते जाएंगे।

(10) स्वयं स्वतंत्रतापूर्वक तथा सरलतापूर्वक बातचीत करें और दूसरों को भी ऐसा ही करने दें। अमूल्य शिक्षा को अल्प समय में प्राप्त करने का इससे बढ़कर साधन संसार में नहीं है।

❑

पढ़ना और लिखना –स्वाध्याय और उद्देश्य-केन्द्रित पठन, सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन

14 स्वाध्याय और उद्देश्य-केन्द्रित पठन का महत्व और उद्देश्यों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कौशल कहा जाता है जैसे–पुस्तकों को पढ़ना, समाचार पत्रों को पढ़ना आदि। भाषा के संदर्भ में पढ़ने का अर्थ कुछ भिन्न होता है। भाव और विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से पढ़कर समझने को पठन कहा जाता है। लिखने का उद्देश्य ही यही होता है कि हम अपने भाव और विचारों को दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं जिससे दूसरा व्यक्ति जब उन विचारों और भावों को पढ़े तो उसके भावों और विचारों को समझ लें।

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन कहते हैं। परंतु बिना अर्थग्रहण किए पढ़ने को पठन नहीं कहा जा सकता, पठन की क्रिया में अर्थग्रहण करना आवश्यक होता है, अर्थग्रहण किस सीमा तक होता है यह पठनकर्ता के ज्ञान, विवेक एवं कौशल पर निर्भर करता है। पठन कौशल के माध्यम से चिरकालिक ज्ञान राशि प्राप्त की जा सकती है।

पठन का महत्व–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पठन की आवश्यकता होती है। पठन की योजना न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनंद नहीं ले पाता। पठन कौशल के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की कठिनाइयाँ खड़ी हो जाती है। मौखिक भाषा में उसका ध्वन्यात्मक रूप प्रधान होता है। भाषा के अध्यापन में सर्वप्रथम भाषा के इसी रूप का ज्ञान करवाया जाता है। सामाजिक जीवन में वाचन साक्षरता का पर्याय है, शिक्षित व्यक्ति वही है जो लिखी हुई बात को पढ़ सकता है, समझ सकता है तथा स्वयं लिख भी सकता है। निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर पठन कौशल के महत्व को समझा जा सकता है–

(1) पठन, शिक्षा प्राप्ति में सहायक होता है।

(2) पठन-कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है, क्योंकि पाठ्यपुस्तक पढ़ने से ज्ञान का अर्जन होता है।

(3) आधुनिक युग विशिष्टताओं का युग है, व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में है वह विशिष्टता प्राप्त करना चाहता है, विद्यार्थी भी नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, यह जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है।

(4) सामाजिक दृष्टिकोण से भी पठन कौशल अत्यंत महत्वपूर्ण है, कक्षाओं में की जाने वाली बहुत-सी सांस्कृतिक गतिविधियों में पठन कौशल का विशेष महत्व होता है।

(5) शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी शिक्षण स्तरों पर वाचन के माध्यम से किया जाता है, बिना वाचन के शिक्षण की प्रक्रिया का संचालन संभव नहीं है।

(6) लिखित भाषा को सीखने हेतु वाचन का विशेष महत्व है। अक्षरों को सीखने के लिए अक्षरों की ध्वनि के उच्चारण की सहायता ली जाती है। बिना पठन के भाषा का ज्ञान अधूरा होता है।

(7) पठन कौशल मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन भी है, किसी भी स्थान पर अपने पठन कौशल का विकास अकेलेपन को दूर करने के लिए तथा समय का सदुपयोग करने के लिए मनुष्य कहानी, पत्रिका इत्यादि पढ़ता है तथा आनंद प्राप्त करने में सक्षम होता है।

(8) सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकसित होना आवश्यक है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है और अध्ययन पठन का ही रूप है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाषा के पूर्ण ज्ञान हेतु तथा मानव जीवन में विकास हेतु पठन विशेष महत्व रखता है।

पठन कौशल के उद्देश्य–पठन कौशल के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास किया जाता है, पठन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है इसके प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. विद्यार्थियों को शब्द, ध्वनियों व उनके सहायता का ज्ञान करवाना जिससे वाचन में शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप में कर सकें।
2. विद्यार्थियों के स्तर में आरोह, अवरोह का ऐसा अभ्यास करवाना जिससे वह यथा अवसर भावों के अनुकूल स्वर में पढ़ पाए।
3. पठन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थी पढ़कर पठित वस्तु का भाव समझे तथा दूसरों को भी समझाने में सक्षम हो।
5. पठन के माध्यम से बच्चों को विरामादि चिह्नों का ज्ञान करवाना।
6. पठित वस्तु का भाव ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।
7. बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि करवाना।
8. स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना।
9. वाचन के प्रति बच्चों की रुचि उत्पन्न करना तथा पठन में होने वाली त्रुटियों से अवगत कराकर उनके निवारण की जानकारी देना।
10. विद्यार्थियों को अवगत करवाना कि प्रकरण एवं भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया जाए। श्रोताओं के अनुसार, समय तथा स्थल के अनुरूप ही वाचन किया जाना चाहिए।
11. वाचन में मौलिकता तथा मधुरता का समावेश होना चाहिए। वाचन सम्बन्धी उचित शिष्टाचार के नियमों के प्रयोग का पालन किया जाना चाहिए, जैसे उचित मुद्रा में खड़ा होना आदि।
12. वाचन में कृत्रिमता नहीं होनी चाहिए, लिखित सामग्री को उचित भावों तथा विचारों की सार्थकता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

□

15 सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–लेखन हमारी सोच और सीख को दृश्यमान और स्थायी बनाता है। लेखन दूसरों और खुद को अपने विचारों को समझाने और परिष्कृत करने की हमारी क्षमता को बढ़ाता है। लेखन हमारे विचारों और यादों को सुरक्षित रखता है। लेखन हमें अपने जीवन को समझने की अनुमति देता है।

सामान्य लेखन से तात्पर्य–सामान्य लेखन से तात्पर्य लेखन के किसी भी ऐसे अंश से है जो लेखन के सामान्य विषयों पर केंद्रित होता है और सामान्य आलेख पाठक के मनोरंजन के लिए प्रकाशित किए जाते हैं। लेकिन कभी-कभी कई सामान्य विषय भी जीवन के सबक, नैतिकता, प्रेरणा आदि देते हैं। तकनीकी लेखन की तरह इसमें पाठकों का कोई विशिष्ट समूह नहीं होता। यह व्यक्तिपरक लहजे और विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत शैली पर लिखा जाता है। उदाहरण के लिए, कोई गद्य या कहानी लिखना जो किसी स्थानीय पत्रिका में प्रकाशित हो, सामान्य लेखन के अंतर्गत आता है।

सामान्य लेखन की विशेषताएँ–सामान्य लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. सामान्य लेखन, लेखन के सामान्य विषयों पर केंद्रित होता है।
2. सामान्य लेखन का उद्देश्य मनोरंजन होता है।
3. सामान्य लेखन व्यक्तिपरक लहजे या व्यक्तिगत शैली पर आधारित होता है।
4. यह कलात्मक व असंरचित प्रारूप का अनुसरण करता है।

5. यह लेखन का औपचारिक या अनौपचारिक तरीका हो सकता है।
6. सामान्य लेखन में प्रयुक्त आवाज़ प्रथम पुरुष की होती है।
7. सामान्य लेखन में विचारोत्तेजक शब्दावली की आवश्यकता होती है।
8. सामान्य लेखन का कोई विशिष्ट पाठक वर्ग नहीं होता।
9. सामान्य लेखन गैर-अभिलेखीय है।
10. यह ढंग से सजावटी और आडंबरपूर्ण है।
11. यह सामान्य विषय के लिए उपयुक्त सामान्य शब्दों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
12. कोई गद्य या कहानी लिखना जो किसी स्थानीय पत्रिका में प्रकाशित हो, सामान्य लेखन के अंतर्गत आता है।

रचनात्मक लेखन से तात्पर्य–रचनात्मकता का अर्थ है–सृजनात्मकता। सृजनात्मकता अर्थात् वही जिसे कॉलरिज कल्पना कहता है। कल्पना अर्थात् नव-सृजन की वह जीवनी शक्ति, जो कलाकारों, कवियों तथा वैज्ञानिकों और दार्शनिकों में होती है। जो अपने आसपास की दुनिया को आधार बना कर ही नव निर्माण करते हैं। सृजनात्मक लेखन अर्थात् नूतन निर्माण की संकल्पना, प्रतिभा एवं शक्ति से निर्मित लेखन।

'लेखन' शब्द का विशाल अर्थ है। समस्त लिखित-मुद्रित वाङ्मय अर्थात् लिखे हुए सार्थक आयोजन बद्ध सुरुचिपूर्ण शब्द-विस्तार सब सामान्य लेखन है। किन्तु इस विस्तार में वह लेखन जिसका संबंध मनुष्य के सुख-दुख, हर्ष-शोक आदि से जुड़ा है उसे रचनात्मक लेखन कहा जा सकता है। रचनात्मकता का संबंध मनुष्य की अभिव्यक्ति की तड़प से हैं। कोई दुःख में गाता है तो कोई खुशी के मारे रो पड़ता है। यही भाव-विचार जब भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त हो तब उसे रचनात्मक-लेखन की संज्ञा दे सकते हैं। इस आधार पर रचनात्मक लेखन की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती हैं–

"भाषा के माध्यम से मनुष्य के हर्ष-शोक, सुख-दुख की रचनात्मक एवं सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति द्वारा जो साहित्य रचा जाता है उसे रचनात्मक लेखन कह सकते हैं।"

लेखन के प्रकार–प्रकृति की दृष्टि से लेखन की तीन श्रेणियाँ हो सकती हैं–

1. **प्रचारात्मक लेखन**–जो हमारी जानकारी बढ़ाता है, ऐसा साहित्य प्रचारात्मक साहित्य है। इसके अन्तर्गत सूचना प्रधान साहित्य शामिल कर सकते हैं। सूचनात्मक साहित्य वह है जिसमें एक विषय के बारे में दिया गया विचार दूसरों तक संप्रेषित किया जाता है।
2. **विवेचनात्मक लेखन**–जो हमारी जानकारी को बढ़ाते हुए बोध शक्ति को निरन्तर सचेष्ट बनाएँ रखे, ऐसे साहित्य को विवेचनात्मक लेखन कहते हैं। यह ज्ञान के साथ-साथ विवेक जाग्रत करता है। विविध वस्तुओं, विषयों तथा धर्म, संस्कृति, इतिहास, दर्शन आदि की विशिष्टता बताते हुए नियमित तर्क प्रणाली के आधार पर विषयों को समझाता है।
3. **रचनात्मक (सृजनात्मक) लेखन**–रचनात्मकता सबसे पहले आत्माभिव्यक्ति है। इसे कोई शब्दों में, कोई रंगों में, कोई रेखाओं में और कोई शरीर की मौन भाषा से अपनी बात अभिव्यक्त करने में सहजता और सुविधा अनुभव करता है। जब लेखन के क्षेत्र में यह कार्य हो तब हम रचनात्मक लेखन की संज्ञा दे सकते हैं।

रचनात्मक लेखन की विशेषताएँ–रचनात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. **आत्माभिव्यक्ति**–साहित्यिक रचनात्मक लेखन में आत्मा की आवाज़ को स्थान दिया गया है। अनुकूल परिस्थितियाँ, उचित वातावरण, निरन्तर अभ्यास और लेखन की अनिवार्यता की अनुभूति रचनात्मक लेखन के आधार हैं।

2. **अनुभव का विस्तार**–साहित्य की रचनात्मकता का एक लक्षण अनुभव का विस्तार है। वह अनुभव किसी कल्पनिक घटना या पात्रों के आधार पर कृति में उतरता है। रचनाकार को जितना अधिक विविध क्षेत्रों का अनुभव होता है उतनी ही अधिक रचना भी सफल होती है।
3. **भाव, बुद्धि और कल्पना का समन्वय**–भाव और विचार का कल्पना से योग कर निश्चित उद्देश्य के हेतु प्रस्तुत किया जाए तब एक अच्छी रचना सामने आती है।
4. **आत्मविस्तार की इच्छा**–भारतीय चिंतन में जिस प्रकार मनुष्य अपनी संतान में अपना आत्मविस्तार देखता है उसी तरह जब रचनाकार अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को दूसरों से बाँटने की इच्छा रखता है उसे उसकी आत्मविस्तार की इच्छा माना जा सकता है।
5. **समय और समाज का प्रतिबिंब**–रचनाकार जिस काल में रहता है उस काल का प्रभाव उस पर पड़ना स्वाभाविक है। अपने उद्देश्य का निरूपण करने के लिए रचनाकार जब रचना लिखता है तब रचना में रचनाकार का समय और समाज का प्रतिबिंब लक्षित होता है। रचना और रचनाकार दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है।
6. **ज्ञानात्मक विचार और भावात्मक संवेदन**–रचना भाव और विचार का योग है। प्राय: भाव प्रधान रचना पद्य कही जाती है तो विचार प्रधान गद्य का रूप धारण करती है। किंतु हर बार ऐसा नहीं होता। कविता में भाव और विचार दोनों की सह-उपस्थिति हो सकती है उसी तरह गद्य में भी विचार तथा भाव दोनों की ही उपस्थिति संभव है। मुक्तिबोध और निर्मल वर्मा इस तथ्य के सशक्त उदाहरण हैं। दोनों एक कृति में एक सिक्के के दो पहलू दो सकते हैं।
7. **मन की आभ्यंतर क्षमताओं की परिणिति**–'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' कहावत कदाचित इस विशेषता को समझने के लिए काफ़ी है। मन की दृष्टि से जैसे समाज को देखेंगे विचार भी मन में वही अभिव्यक्त होंगे। इसलिए रचना मन की आभ्यंतर क्षंमताओं की परिणिति है। अर्थात् रचनाकार का परिवेश, उसकी सोच को प्रभावित करने वाले तत्व आदि उसके आभ्यंतर परिवेश का निर्माण करते हैं।
8. **यथार्थ भाषा-शैली का प्रयोग**–विचारों तथा भावों को उनकी जटिलता तथा अर्थगर्भता के साथ लिखना ही भाषा है और उस भाषा में निबद्ध भाव-विचार को प्रस्तुत करने का तरीका शैली है। सार्थक शब्द, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब भाषा की सृजनात्मकता के मुख्य बिंदु हैं। लोक-भाषा सहजता का प्रतीक भी है। रचना की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ भाषा पक्ष है।

इस प्रकार रचना-धर्मिता की प्रक्रिया में उपर्युक्त विशेषताओं का योग श्रेष्ठ रचना का आधार बन सकता है। इस आधार पर रचनात्मक साहित्य के सामान्य तत्व–वस्तु-चयन, निरीक्षण और अन्वेषण, नवीन उद्‌भावनाएँ तथा शैली मुख्य हैं।

❑

16 रचनात्मक लेखन के स्वरूप व क्षेत्रों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संचार क्रांति के पूर्व साहित्यिक लेखन ही रचनात्मक लेखन का क्षेत्र था। परन्तु संचार माध्यमों के आने के बाद रचनात्मक लेखन का क्षेत्र विस्तृत हो गया। इस तरह कहा जा सकता है कि रचनात्मक लेखन के मुख्य क्षेत्र–साहित्य व संचार माध्यम है।

साहित्य लेखन–मनुष्य की भावनाओं की शाब्दिक प्रस्तुति ही साहित्य है। शब्द, अर्थ और भाव का साहचर्य अर्थात् साहित्य जिसके मुख्य दो रूप हैं-गद्य तथा पद्य।

संचार लेखन–मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैसे तो सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य किसी न किसी रूप में संचार करता है। पहले पशु-पक्षियों से संदेश भेजते थे। राजा-महाराजा

दूत से संदेश भेजते थे। आधुनिक काल में डाक विभाग अस्तित्व में आने के संचार को गति मिली। टेलीफोन त फैक्स के कारण यह अधिक गतिशील हुआ। उत्तर-आधुनिक समय में इंटरनेट, ई-मेल, फेसबुक, ट्विटर, ब्ल आदि नए माध्यमों से आज संचार में मानो क्रांति आई हुई है।

रचनात्मक लेखन का स्वरूप-गद्य और पद्य–प्रत्येक साहित्यकार अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लि अलग-अलग माध्यम चुनता है, अलग शैली व अलग ढंग से प्रस्तुति करता है, परिणाम स्वरूप साहित्य में विविध आती है और अनेकों विधाएँ जन्म लेती है। मोटे तौर पर साहित्य के दो मूल स्वरूप हैं-(1) पद्य और (2) ग

(1) **पद्य लेखन**–पद्य का अर्थ है छन्दोबद्ध रचना, जिसे सामान्य रूप से हम कविता कहते हैं। यह अल बात है कि आज कविता छन्दोबद्ध ही लिखी जाती हो, ऐसा नहीं है। वैसे कविता के भी अनेक रूप होते हैं। प्रस्तु के आधार पर तथा स्वरूप के आधार पर मुख्य दो प्रकार कहे जा सकते हैं-प्रबंध और मुक्तक। इसके अलावा एव प्रकार और है–चंपू काव्य, जिसमें गद्य और पद्य दोनों होते हैं। कविता प्रायः भावप्रधानता की प्रस्तुति है। प्रबंध काव्य अपनी प्रकृति में कथात्मक एवं सर्गबद्ध रचना है जो लक्षणों पर आधारित है। जबकि मुक्तक में गीति-तत्व की प्रधानता और भाव-तत्व की बहुलता होती है। उसके भी कई प्रकार हैं जिनका अपना स्वरूप है और उन स्वरूपो के लक्षण हैं–यथा, गीत, ग़ज़ल, सॉनेट आदि।

- **प्रबंध काव्य**–लक्षणों पर आधारित काव्य 'प्रबंध काव्य' है। जिसके मुख्य दो प्रकार हैं–(क) महाकाव्य (ख) खण्डकाव्य। कोई तीसरा प्रकार-एकार्थक काव्य भी बताते हैं। जो काव्य आठ से अधिक तथा तीन से अधिक और कम सर्गों अथवा अध्यायों में विभक्त होता है क्रमशः महाकाव्य तथा खण्डकाव्य तथा एकार्थक-काव्य कहलाता हैं। तीनों काव्य की कथा पौराणिक या ऐतिहासिक तथा नायक-नायिका धीरोदत्त गुणों वाला प्रांसगिक होना चाहिए। श्रृंगार, वीर तथा शांत रसों में एक की प्रधानता तथा शेष रस गौण होते हैं। कलात्मक बिम्ब, तत्सम् शब्दों से युक्त सरल भाषा तथा काव्य का प्रारंभ मंगलाचरण से होना चाहिए।
- **मुक्तक काव्य**–मुक्तक काव्य में पहले या बाद में प्रसंगों की जानकारी की अपेक्षा नहीं होती। स्वतंत्र रूप से रस-प्राप्ति संभव है। वैसे मुक्तक काव्य प्राचीन काल का गीति काव्य है और आधुनिक काल में कविता, लंबी कविता, अकविता आदि नामों से जाना जाता हैं। मुक्तक काव्य गेय और लय बद्ध भी होते हैं। मुक्तक काव्य श्रोता को मंत्र मुग्ध कर देता है जिसमें कल्पना की सीमित उड़ान होती है। प्रासंगिक विषयों पर प्रायः मार्मिक भाषा-शैली में मुक्तक लिखे जाते हैं। मुक्तक काव्य अनुभूति और भाव-प्रवण अधिक होते हैं।
- **गीति काव्य**–माँ-दादी-नानी के मुँह से सुनी हुई लोरी, प्रसंगोपयोगी लोक-गीत अथवा नृत्य के लिए रचे हुए गेय गीत 'गीति काव्य' हैं। प्राचीन काल से ऐसे पदों की रचना होती आई है जिसमें सरलता, भावावेग, गेयता, रसानुभूति, संगीतमयता तथा संक्षिप्तता होती है।

2. **गद्य लेखन**–साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा गद्य है। संस्कृत आचार्यों का मानना है कि 'गद्यं कविनां निकषं वदन्ति' अर्थात् गद्य कवियों के लिए कसौटी है। गद्य विचार प्रधान लेखन है जिसमें मन की मुक्तावस्था का वाणी विधान प्रमुख होता है। जिसके विविधतम रूपों में–नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, रिपोतार्ज, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, साक्षात्कार, डायरी, पत्र-लेखन, शोधपत्र, आलेख, फिल्मी साहित्य, मीडिया और पत्रकारिता आदि प्रमुख हैं। इनमें से सभी रचनात्मक नहीं हैं परन्तु माध्यम क्रांति के कारण इन विधाओं में रचनात्मकता आ सकती है। अख़बार में प्रकाशित होने वाला एक सामान्य समाचार दृश्य-श्रव्य के कारण रचनात्मक हो सकता है।

- **नाटक व अन्य विधाएँ**–जीवन की समस्याओं को रंगमंच पर अभिनीत करने वाली विधा है तो जीवन के किसी एक घटना अथवा प्रसंग को रंगमंच पर जब प्रस्तुत किया जाता है तब वह एकांकी कही जाती है। उपन्यास के बारे में प्रेमचंद कहते है–'मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ।'

तो कहानी के बारे में कहते हैं–'कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के लिए एक अंग या किसी एक मनोवेग को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य रहता है।' निबंध में अपने विचारों को गद्य-रूप में लिपिबद्ध करना होता है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति या वस्तु का सूक्ष्म शब्द चित्र है। जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन का लेखा-जोखा होता है तो आत्मकथा व्यक्ति के खुद के जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। डायरी में लेखक अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों को प्रस्तुत करता है।

- **पत्र लेखन**–किसी महान व्यक्तियों का महानतम व्यक्तियों को लिखे पत्रों का संकलन है।
- **आलेख**–तथ्यप्रधान तथा प्रामाणिक प्रस्तुति है जो किसी भी विषय को प्रस्तुत करती है।
- **फिल्मी साहित्य**–फिल्म संबंधी साहित्यिक रूप को 'फिल्मी साहित्य' कहते हैं तो मीडिया और पत्रकारिता सूचना-क्रांति के वाहक रूप में देखा जाता है। इण्टरनेट, ब्लॉग, वेब पत्रिका तो टी.वी. चैनलों द्वारा प्रचारित साहित्य आदि मीडिया के अंतर्गत आते हैं। प्रिंट माडिया में-समाचार पत्र-पत्रिकाएँ तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इण्टरनेट, ब्लॉग, वेब पत्रिका, टी.वी. चैनल आदि समाविष्ट होते हैं। व्यंग्य-लेख और हास्य-लेख भी साहित्यिक विधा के रूप में आज अत्यन्त लोकप्रिय हो रहे हैं। दृश्य-श्रव्य माध्यम में तो जैसे इनकी बाढ़ आ गई है। इनके भौंडेपन और स्तरहीनता को स्वीकारते हुए भी एक बात माननी पड़ेगी कि हास्य-व्यंग्य के कार्यक्रम अगर चल रहे हैं तो अपनी रचनात्मकता के कारण ही। इसके पूर्व हास्यव्यंग्य में इतनी भिन्नताएँ देखने को नहीं मिलती थीं।

इस प्रकार रचनात्मक लेखन साहित्य की विविध विधाओं एवं विभिन्न माध्यमों के कारण अधिक व्यापक और वैविध्यपूर्ण हो गया है। ❐

4 भाषायी दक्षता का व्यावहारिक पक्ष

निबंधात्मक प्रश्न

किसी एक विषय पर–भाषण, वार्तालाप या टिप्पणी, समूह चर्चा

1 किसी विषय पर भाषण के लिए वैचारिक आधार को व्यापक कैसे बनाएँ? भाषण के व्यावहारिक विषय कौनसे हो सकते हैं?

उत्तर–भाषा प्रवीणता या भाषायी क्षमता किसी व्यक्ति की अर्जित भाषा में बोलने या प्रदर्शन करने की दक्षता है। यह बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किसी भाषा का उपयोग करने की व्यक्ति की क्षमता को संदर्भित करती है। भाषायी दक्षता का परिचय वार्तालाप, भाषण, समूह चर्चा आदि से मिलता है। इनमें भाषण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भाषण वह विधा है, जिसमें किसी विषय का धाराप्रवाह रूप में विवरण करते हुए, विचारों तथा तथ्यों को लोगों के सामने व्यक्त किया गया हो। बोलने की ज्यादातर स्थितियों में हम ऐसी स्थितियों में होंगे जहाँ हम वही बोलेंगे जो हम जानते हैं। यह हमारे निजी अनुभव या किसी विषय के बारे में हमारे ज्ञान के बारे में हो सकता है। लेकिन शायद ही कभी हमें किसी ऐसी चीज़ पर बोलने के लिए कहा जाता है जिसके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते। तो, सबसे अच्छे विषय वे हैं जिनके बारे में हम बहुत कुछ जानते हैं। हम कैसे जानते हैं कि कोई चीज़ हमारे लिए सही है? इस तरह से सोचें–ऐसे कौन से विषय हैं जिन पर आप अपने किसी मित्र के साथ बैठकर लंबे समय तक बात कर सकते हैं, और उसके बाद ही कुछ और खोज सकते हैं?

अब, आप शायद इस बारे में न सोच पाएं कि वे विषय क्या हैं। लेकिन, अगले कुछ दिनों में, उन विषयों पर ध्यान दें जो सामने आते हैं, और जिनके बारे में आपको अच्छी जानकारी है। वे विषय जिनके बारे में आपको लगता है कि आपकी कोई राय है, या जिनके बारे में आप जानना चाहते हैं और अपना ज्ञान बढ़ाना चाहते हैं। ये आपके भाषण देने के लिए सर्वोत्तम व्यावहारिक विषय हैं।

भाषण पर चिन्तन करने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु–भाषण पर चिन्तन करने के लिए यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं–

- किसी समूह को कोई नया कौशल सिखाना या किसी प्रक्रिया का वर्णन करना।
- किसी ऐसे विषय का सामान्य अवलोकन देना जिसे अक्सर गलत समझा जाता है।
- किसी विषय के बारे में मिथकों का खंडन करना।
- किसी चीज़ का अंत इस तरह क्यों हुआ, इसकी पृष्ठभूमि बताना, जैसे कि कोई ऐतिहासिक घटना।
- किसी विषय पर दर्शन या दृष्टिकोण के सिद्धांतों को साझा करना।
- किसी मुद्दे के पक्ष और विपक्ष के पहलुओं को बताना।

• किसी स्थिति को सुधारने के लिए तकनीकों या प्रक्रियाओं का साझा करना।

• किसी संगठन, व्यक्ति या ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में 'क्या आप जानते हैं?' डेटा प्रदान करना।

भाषण के व्यावहारिक विषय–भाषण के लिए विषय चुनते समय, अपने श्रोताओं की रुचियों और भाषण के अवसर पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यहाँ कुछ व्यावहारिक विषय दिए गए हैं जो विभिन्न श्रोताओं के लिए आकर्षक और प्रासंगिक हो सकते हैं–

1. **जलवायु परिवर्तन**–जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, संभावित समाधान और व्यक्तिगत कार्यों पर चर्चा करें जो बदलाव ला सकते हैं।
2. **मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता**–मानसिक स्वास्थ्य के महत्व, मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के तरीकों और दोषों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करना।
3. **प्रौद्योगिकी और समाज**–हमारे जीवन पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अन्वेषण करें, जैसे कि सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ।
4. **प्रभावी संचार**–व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों में संचार कौशल को बेहतर बनाने के बारे में सुझाव प्रदान करें।
5. **वित्तीय साक्षरता**–अपने दर्शकों को बजट बनाने, बचत करने, निवेश करने और व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन के बारे में शिक्षित करें।
6. **विविधता और समावेशन**–कार्यस्थल और समाज में विविधता के मूल्य और समावेशन को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा करें।
7. **स्वास्थ्य और कल्याण**–स्वस्थ भोजन, व्यायाम, तनाव प्रबंधन और स्व-देखभाल प्रथाओं जैसे विषयों को कवर करें।
8. **नेतृत्व कौशल**–प्रभावी नेतृत्व गुणों, दूसरों को प्रेरित करने की रणनीतियों और उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करने पर अंतर्दृष्टि साझा करें।
9. **करियर विकास**–करियर लक्ष्य निर्धारित करने, नेटवर्किंग, बायोडाटा तैयार करने और नौकरी बाजार में आगे बढ़ने के बारे में सलाह प्रदान करें।
10. **स्वयंसेवा और सामुदायिक सहभागिता**–दूसरों को स्वयंसेवा, सामुदायिक सेवा में शामिल होने और अपने समुदायों में सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रोत्साहित करें।

याद रखें कि ऐसा विषय चुनें जिसके प्रति आपकी रुचि हो तथा जो आपके श्रोताओं की रुचि के अनुरूप हो, ताकि आप एक सम्मोहक और दिलचस्प भाषण दे सकें।

□

---

2 **भाषण को प्रभावी बनाने के लिए उसके व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डालिए।**

अथवा

भाषण की दक्षता प्राप्त करने अथवा भाषण को प्रभावी बनाने के लिए वक्ता को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? सविस्तार समझाइए।

उत्तर–एक बेहतरीन भाषण देने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं जो आपको शुरू से अंत तक एक बेहतरीन भाषण तैयार करने में मदद कर सकते हैं–

1. अपने दर्शकों का निर्धारण और विश्लेषण करें–अपना भाषण लिखने से पहले, सोचें कि आपके श्रोता कौन हैं और उनके इर्द-गिर्द ही अपनी प्रस्तुति का लहजा और शैली तय करें। अगर आप व्यावसायिक पेशेवरों से भरे किसी सम्मेलन में भाषण दे रहे हैं, तो आप अपने भाषण को पूरी तरह से शैक्षिक रखना चाहेंगे और अपने बिंदुओं को पुष्ट करने के लिए सांख्यिकीय डेटा का इस्तेमाल करेंगे।

...छोटे दर्शकों के साथ कार्य प्रस्तुतियों के लिए आप अपने भाषण को अधिक आरामदायक और मनोरंजक बना सकते हैं। यह समझना कि आपके दर्शक कौन हैं, आपको शैक्षिक सामग्री देने के लिए अपने बातचीत के बिंदुओं को बेहतर ढंग से लक्षित करने में मदद करता है जो उन्हें उच्च-गुणवत्ता वाली जानकारी प्रदान करता है।

2. **अपने विषय पर स्वतंत्र लेखन करें**–जैसे ही आप अपना भाषण शुरू करते हैं, विषय पर जितनी जानकारी आप जानते हैं, उतनी लिखें। इससे आपको अपना सारा ज्ञान कागज़ पर लिखने में मदद मिलती है। इससे एक मजबूत भाषण बनाने के लिए इस जानकारी को छानना भी आसान हो जाता है। स्वतंत्र लेखन के बाद, इसे अपने दर्शकों के लिए प्रासंगिक और मनोरंजक बनाने के लिए जितना संभव हो उतना काटने और संपादित करने का प्रयास करें।

3. **अपने समर्थन बिंदुओं पर शोध करें**–अपने मुख्य विषय के बारे में लिखने और उसके बारे में जो कुछ आप पहले से जानते हैं, उसे समझाने के बाद, तय करें कि आपके समर्थन में बातचीत के कौन से बिंदु हैं। ये सामान्य विचार हो सकते हैं जो विषय पर आपके समग्र विचार या राय का समर्थन करते हैं। आप किसी भी दावे का समर्थन करने और अपने भाषण को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए सीधे स्रोतों को उद्धृत कर सकते हैं।

4. **अपने भाषण का अभ्यास करें**–अपना भाषण पूरा होने के बाद, आप उसका अभ्यास करना शुरू कर सकते हैं। अपने भाषण का अभ्यास करने से आपको तैयार होने का एहसास होता है, जिससे आप प्रस्तुति देते समय अधिक आत्मविश्वासी दिख सकते हैं। अपने भाषण का अभ्यास शीशे के सामने करें या खुद को रिकॉर्ड करें ताकि आप बात करते समय इस्तेमाल किए जाने वाले हाव-भाव को समझ सकें। आप अपने किसी सहकर्मी या मित्र से भी कह सकते हैं कि वह आपको देखे और आपके भाषण को बेहतर बनाने के लिए कोई सुझाव दे।

अभ्यास करते समय, तय करें कि क्या आप विषय को इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि आप अपने पूरे लिखित भाषण के बिना भी उसे प्रस्तुत कर सकें। अगर आपको लगता है कि आपको प्रस्तुत करने के लिए नोट कार्ड की ज़रूरत पड़ सकती है, तो संक्षिप्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं के साथ सरल नोट्स बनाएँ जो आपको भाषण के दौरान मार्गदर्शन करेंगे और महत्वपूर्ण बातचीत के बिंदुओं को याद रखने में आपकी मदद करेंगे।

5. **अपने भाषण को व्यक्तिगत और मनोरंजक बनाएँ**–अपने दर्शकों को बेहतर ढंग से जोड़ने के लिए, अपनी प्रस्तुति में एक कहानी बताने का प्रयास करें। इससे लोगों के लिए इसे देखना अधिक मनोरंजक हो सकता है और वे आपके भाषण से अधिक जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। यदि आप स्वाभाविक रूप से विषय के एक हिस्से को व्यक्तिगत बनाने में सक्षम हैं, तो ऐसा करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए, यदि आप इस बारे में बात कर रहे हैं कि अपने अभिव्यक्ति कौशल को कैसे बढ़ाते हैं, तो इस प्रणाली का उपयोग करके अपने स्वयं के अनुभव के बारे में संक्षेप में एक कहानी बताएँ और यह बताएँ कि इसने आपकी दक्षता को कैसे बढ़ाया। अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने का एक और प्रभावी तरीका है–अपने कथनों का समर्थन करने के लिए दृश्य सामग्री का उपयोग करना। ये दर्शकों को आपके द्वारा चर्चा किए जा रहे जटिल विषय को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं। आप पावरपॉइंट स्लाइड्स भी उपलब्ध करा सकते हैं, जिसमें चार्ट और ग्राफ़ हों।

6. **अपने भाषण में आत्मविश्वास दिखाएँ**–अपना भाषण देते समय, आत्मविश्वास दिखाने की कोशिश करें, भले ही आप थोड़ा नर्वस महसूस करें। अगर प्रस्तुतकर्ता जिस विषय पर चर्चा कर रहा है, उसके बारे में आत्मविश्वास और जुनून से भरा हुआ दिखता है, तो श्रोताओं को भाषण में अधिक रुचि हो सकती है। इसके अलावा, हर शब्द का सही व शुद्ध उच्चारण करना न भूलें।

7. **भाषण को विचारपूर्ण ढंग से समाप्त करें**–एक बार जब आप अपना भाषण समाप्त कर लें, तो श्रोताओं को इस बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें कि आपने अभी क्या चर्चा की है। यह आपके भाषण को एक विचारशील अंत दे सकता है और इसे और अधिक यादगार बना सकता है। सुनने के लिए उन्हें धन्यवाद देकर अपने दर्शकों के प्रति कृतज्ञता और प्रशंसा दिखाना सुनिश्चित करें। यदि समय हो, तो आप अपने श्रोताओं से पूछ सकते हैं कि क्या उनके पास कोई प्रश्न है।

8. अपना जुनून व्यक्त करें–जिस विषय पर आप भावुक हैं, उस पर चर्चा करना न केवल आपके दर्शकों के लिए इसे अधिक मनोरंजक बनाता है, बल्कि भाषण तैयार करने में आपके लिए भी अधिक आनंददायक बनाता है। जब आप अपना भाषण बनाते और देते हैं, तो उस विषय के बारे में बात करें जिसके लिए आप भावुक हैं। अगर आपके प्राध्यापक या प्रोफेसर ने आपको कोई विषय सौंपा है, तो उसमें कुछ ऐसा खास खोजें जो आपको पसंद हो। इससे आपको भाषण देने के लिए प्रेरित होने में मदद मिलेगी। आपका उत्साह दूसरों को भी आपके भाषण के प्रति उत्साही महसूस करने में मदद कर सकता है।

9. कार्यक्रम स्थल पर समय से पहले पहुँचें–अपने भाषण देने के स्थान से परिचित होने के लिए, यदि आप सक्षम हैं तो कार्यक्रम स्थल पर जल्दी या एक दिन पहले पहुँचें। यदि आप किसी सम्मेलन या बड़े कार्यक्रम में प्रस्तुति दे रहे हैं तो इससे आपको यह समझने में मदद मिल सकती है कि भीड़ और मंच कितना बड़ा है। यदि आप सहायक स्लाइड और ग्राफ़िक्स दिखाने के लिए अपने कंप्यूटर का उपयोग कर रहे हैं, तो इसे सेट अप करें और अपने भाषण के दौरान किसी भी तकनीकी त्रुटि से बचने के लिए पहले से इसका परीक्षण करें।

10. अपनी लय पर विचार करें–अपने भाषण के दौरान ऐसे पलों के बारे में सोचें जब आप अपनी ताल, यानी अपनी डिलीवरी की लय बदल सकते हैं। जबकि आम तौर पर, अपने भाषण को जल्दी-जल्दी न करना एक अच्छा विचार है, ऐसे स्थान हो सकते हैं जहाँ आप किसी बिंदु पर ज़ोर देने के लिए अपनी ताल बदलना चाहें। भाषण के दौरान अपनी ताल बदलने से आपके श्रोताओं को आपकी बातों में दिलचस्पी बनाए रखने में भी मदद मिल सकती है क्योंकि इससे आपका भाषण बातचीत जैसा लगेगा।

11. दृश्य सहायक सामग्री से सावधान रहें–यदि आप स्लाइड शो या पोस्टर बोर्ड जैसे दृश्य सामग्री को शामिल करने का निर्णय लेते हैं, तो इसका सावधानीपूर्वक उपयोग करें। अपने दृश्य सहायता से सीधे पाठ पढ़ने के बजाय, अपने दर्शकों की ओर देखें और केवल आवश्यक होने पर ही दृश्य सहायता का संदर्भ लें, जैसे कि मुख्य विचार को उजागर करना। अपने दृश्य सहायता पर पाठ को कम से कम करने और अपने भाषण पर अपना ध्यान केंद्रित रखने से आप और आपके श्रोता दोनों को आप जो कह रहे हैं उस पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिल सकती है।

12. हास्य का उपयोग करने के बारे में सोचें–अगर यह आपके भाषण के स्थान और विषय के लिए उपयुक्त है, तो हास्य को शामिल करने पर विचार करें। हास्य जोड़ने से आपका भाषण अधिक आकर्षक बन सकता है और आपको अपने श्रोताओं के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने में मदद मिल सकती है। यदि आप हास्य शामिल करने का निर्णय लेते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप ऐसा हास्य इस्तेमाल करें जो आपके अधिकांश या सभी दर्शकों के लिए सुलभ हो। उदाहरण के लिए, यदि आप हरियाणवी संस्कृति का संदर्भ जोड़ रहे हैं, तो सोचें कि आपके दर्शकों में कितने लोग उस संदर्भ को समझ पाएंगे।

13. अपने दर्शकों से जुड़ें–अपना भाषण देते समय, अपने श्रोताओं पर ध्यान देकर उनके साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास करें–तब भी जब आप ही प्रस्तुति दे रहे हों। ऐसा करके, आप माहौल को ज्यादा मिलनसार और दोस्ताना बना सकते हैं। भीड़ के अलग-अलग पक्षों को चुनना और उन्हें सीधे संबोधित करना भी दिलचस्प हो सकता है।

❐

3 **'जीवन की सार्थकता' विषय पर एक सारगर्भित भाषण का आलेख तैयार कीजिए।**

उत्तर–सुप्रभात दोस्तो!

मैं आज के भाषण समारोह में आप सभी का स्वागत करता हूँ और जो विषय आज भाषण के लिए चुना गया है वह है 'जीवन'। संभावना है कि हम में से कई लोगों ने इस प्रश्न को हर समय अपने आप से पूछा होगा।

प्रश्न शाश्वत और कुछ ऐसा है जिसे हम सभी इस बड़ी और विचित्र दुनिया में समझने की कोशिश कर रहे हैं। और सवाल यह है कि 'जीवन का वास्तविक अर्थ क्या है?'

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किस पृष्ठभूमि से हैं, हम किस स्थिति में हैं और हमारे बैंक के खाते में कितने रुपये हैं। मेरे लिए जीवन के वास्तविक अर्थ को सेवा कहते हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा ने अपने अनुयायियों को जीवन का वास्तविक अर्थ या जीवन का उद्देश्य इस तरह बताया-"हम इस ग्रह पर आगंतुक हैं। हम यहाँ ज्यादा से ज्यादा सौ साल तक हैं। इस अवधि के दौरान हमें कुछ अच्छा करने की कोशिश करनी चाहिए जो हमारे जीवन के लिए उपयोगी हो। यदि आप अन्य लोगों की खुशी में योगदान देते हैं तो आपको वास्तविक लक्ष्य यानी जीवन का सही अर्थ मिल जाएगा।"

यह फिलॉस्फी गरीबों और जरूरतमंदों की मदद के बाद मिलने वाली अत्यधिक संतुष्टि प्राप्त करने के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। वह जीवन जिसे केवल स्वार्थी कारणों के लिए जीया जाए वह वास्तविक अर्थ में जीवन नहीं है। असली खुशी भगवान और मानवता की सेवा में पाई जाती है बाकी सभी भ्रमपूर्ण है। हालांकि इतना सब कहते हुए मैं अभी भी यह कहना चाहूंगा कि अपने कर्म करना और अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का अच्छी तरह से निर्वहन करना महत्वपूर्ण है। अच्छे पैसे कमाना, अच्छी सामाजिक दोस्ती बनाना है और भौतिकवादी इच्छाएँ रखना अच्छा होता है क्योंकि ये ऐसी चीजें हैं जो किसी व्यक्ति को कड़ी मेहनत करने और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं।

यह सिर्फ इतना है कि आपको अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और परोपकार के कृत्यों के बीच संतुलन को कैसे बनाना चाहिए। बेशक आपको जरूरतमंद लोगों को अपना सब कुछ देने की जरूरत नहीं है लेकिन कम से कम आपसे यह उम्मीद जरूर की जाती है कि हम दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा की भावना विकसित करें। आपको हमेशा इस दुनिया को युद्ध के मैदान के रूप में और जीवन की चुनौतियों के रूप में नहीं लेना चाहिए बल्कि हमें सद्भाव में रहना चाहिए और हर जगह प्यार और शांति का संदेश फैलाना चाहिए तभी यह ग्रह रहने के लिए एक सुरक्षित आश्रय बन पाएगा। अगर इस समय तक आप अपने जीवन को समझने या जीवन का सच्चा अर्थ खोजने में सक्षम नहीं हैं तो आप पीछे हट सकते हैं, सोच सकते हैं/ध्यान लगा सकते हैं और अपने भीतर झांक सकते हैं। इस अभ्यास को दोहराएं और आप निश्चित रूप से जीवन में शांति और सही दिशा पा सकेंगे।

अपनी स्थिति को ध्यान से देखें और यह जानने का प्रयास करें कि आपको किससे जीवन में खुशी मिलती है और इसके प्रति कदम उठाएँ। अगर ऐसी कोई चीज है जो आपकी आत्मा को निराश करती है तो आपको इसे अपने जीवन से दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। हम अपने जुनून की पहचान और इसके प्रति काम करना चाहिए क्योंकि हम केवल एक बार जन्म लेते हैं। इसके साथ मैं अपना भाषण खत्म करना चाहता हूँ।

मुझे धैर्यपूर्वक सुनने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। जयहिन्द।

---

4 **'वार्तालाप' किसे कहते हैं? वार्तालाप को प्रभावी और व्यावहारिक बनाने के लिए वार्तालाप-शैली को उदाहरण सहित समझाइए।**

उत्तर–वार्तालाप दो या दो से अधिक लोगों के बीच संवादात्मक संचार है। बातचीत कौशल और शिष्टाचार का विकास समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बातचीत को दो या दो से अधिक लोगों के बीच बातचीत के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो आमतौर पर अनौपचारिक होती है। हमें दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए बातचीत कौशल की आवश्यकता होती है। लिखित संचार कौशल के विपरीत, बातचीत कौशल मौखिक रूप से संवाद करने की हमारी क्षमता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

इन कौशलों में बातचीत में दूसरे व्यक्ति की बात को सुनने और समझने की क्षमता शामिल है, साथ ही भाषण के माध्यम से जानकारी और अर्थ व्यक्त करने की क्षमता भी शामिल है। बातचीत कौशल विकसित करना समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम हर दिन विभिन्न संदर्भों में बातचीत कौशल का उपयोग करते हैं जैसे कि दुकानों, रेस्तरां, स्कूल या काम पर और घर पर। आजकल हम फ़ोन, कंप्यूटर या टैबलेट का उपयोग करके दोस्तों और परिवार के साथ आभासी बातचीत भी करते हैं।

बातचीत कौशल का महत्व–जब हम रिश्ते बना रहे होते हैं तो बातचीत का कौशल बहुत महत्वपूर्ण होता है। लोगों की बात सुनना और उनकी कही बातों को ध्यान में रखना एक महत्वपूर्ण कौशल है जो विनम्रता का संदेश देता है और भावनात्मक बंधन को मजबूत करता है। बच्चों के लिए बातचीत का कौशल उन्हें आत्मविश्वास हासिल करने और दोस्ती बनाए रखने में मदद करता है।

बातचीत के कौशल में सुधार करना बच्चों के भाषा विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दूसरों की बात सुनने से बच्चों को अपनी शब्दावली बनाने और किसी भाषा में अधिक धाराप्रवाह बनने में मदद मिलती है। और बातचीत से बच्चों को विचारों को साझा करने और आदान-प्रदान करने और अन्य लोगों के दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानने का मौका मिल सकता है।

स्कूल-कॉलेजों में बातचीत कौशल विकसित करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बाद के जीवन में दुकानों, खाने के स्थानों और कार्यस्थल जैसी जगहों पर सामाजिक संपर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

वार्तालाप-शैली को सुधारने के लिए सुझाव–बातचीत कौशल में सुधार करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। लेकिन इसे हासिल करना असंभव नहीं है। शुरुआत करने के लिए यहाँ व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं–

1. **अपनी शारीरिक भाषा पर ध्यान दें**–शरीर बिना शब्दों के भी बहुत कुछ कह सकता है। उदाहरण के लिए, हाथों को क्रॉस करके खड़े होने से यह संकेत मिल सकता है कि व्यक्ति चुप है, जबकि आगे की ओर झुकना दिलचस्पी दिखा सकता है। बातचीत के दौरान शरीर को आरामदेह और खुला रखने का अभ्यास करें, जैसे कि सीधे बैठें और कभी-कभी जुड़ाव दिखाने के लिए सिर हिलाएँ। आप अपनी शारीरिक भाषा के प्रति सचेत रहें। किसी के बहुत करीब खड़े होने से वह असहज महसूस कर सकता है।
2. **सक्रिय रूप से सुनें व सवाल पूछें**–सक्रिय रूप से सुनने का मतलब है कि बिना विचलित हुए दूसरे व्यक्ति की बातों पर ध्यान केंद्रित करना। इसमें आँखों से संपर्क बनाना, सिर हिलाना और सवाल पूछना शामिल हो सकता है। वार्तालाप के दौरान आप सवाल पूछें। इससे दूसरे व्यक्ति को पता चलता है कि आप उनकी बात सुन रहे हैं और उनमें दिलचस्पी ले रहे हैं। उदाहरण के लिए, अगर कोई आपको अपने दिन के बारे में बताता है, तो आप कह सकते हैं–"यह चुनौतीपूर्ण लगता है। आपने इसे कैसे संभाला?" जब लोगों को लगता है कि आप वास्तव में उनमें रुचि रखते हैं, तो इससे विश्वास स्थापित होता है।
3. **दूसरों के प्रति सजगता व सहजता का अभ्यास करें**–सावधान रहने का मतलब है–दूसरे व्यक्ति की भावनाओं और ज़रूरतों के प्रति जागरूक होना। उनकी भावनाओं को स्वीकार करके और संवेदनशीलता से जवाब देकर सहानुभूति दिखाएँ। उदाहरण के लिए, अगर कोई दोस्त परेशान लगता है, तो आप कह सकते हैं–"मैं तुम्हारे लिए यहाँ हूँ। क्या तुम उस बारे में बात करना चाहते हो जो तुम्हें परेशान कर रहा है?" आप धीरे-धीरे बात करें। इस तरह आप शांत दिखेंगे और लोग आपको बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।
4. **विकर्षण और पृष्ठभूमि शोर को कम करें**–जब आस-पास कम विकर्षण होते हैं तो संवाद करना आसान होता है। बात करने के लिए एक शांत जगह चुनें और शोर करने वाले सभी उपकरणों को बंद

कर दें। अगर आप किसी दोस्त से बात कर रहे हैं, तो आप व्यवधान से बचने के लिए शांत जगह पर जाने का सुझाव दे सकते हैं। इन प्रकार के शोर के अलावा, अवरोध को रोकने के लिए अपने मस्तिष्क के आंतरिक शोर के बारे में जागरूक होना भी अच्छा है।

5. **बातचीत के लिए स्पष्ट अपेक्षाएँ निर्धारित करें**–दूसरे व्यक्ति को बताएँ कि आप क्या चर्चा करना चाहते हैं और आप किस नतीजे की उम्मीद करते हैं। इससे सभी को ध्यान केंद्रित करने और एक ही पृष्ठ पर रहने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए किसी समूह के साथ बैठक कर रहे हैं, तो आप यह कहकर शुरू कर सकते हैं–"आज, चलो पार्टी के लिए स्थान और तारीख तय करते हैं।"
6. **चर्चा के लिए आवंटित समय का सम्मान करें**–यह टिप पिछले टिप के साथ ही है। समय का ध्यान रखें और बातचीत को ज़रूरत से ज्यादा लंबा न खींचें, खासकर अगर दूसरे व्यक्ति के पास कोई दूसरी प्रतिबद्धता हो। मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताएँ और चर्चा को शालीनता से समाप्त करें। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी मीटिंग में हैं जो समय से ज्यादा चल रही है, तो आप कह सकते हैं–"मुझे लगता है कि हमने सभी महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा कर ली है। चलिए इसे समाप्त करते हैं और ज़रूरत पड़ने पर बाद में इसे जारी रखते हैं।"
7. **अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना सीखें**–भावनात्मक बुद्धिमत्ता में विभिन्न परिस्थितियों में अपनी भावनाओं को समझना और नियंत्रित करना शामिल है। शांत और संयमित रहने का अभ्यास करें। यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर जब चुनौतियों या असहमति का सामना करना पड़ता है। जैसे–जब कोई आपके काम की आलोचना करता है, तो यह परेशान करने वाला हो सकता है। लेकिन रक्षात्मक तरीके से प्रतिक्रिया करने के बजाय सांस लेने और शांति से प्रतिक्रिया करने के लिए एक पल लेने की कोशिश करें।
8. **आँखों का सम्पर्क बनाए रखें**–वार्तालाप के दौरान सामने वाले की आँखों से सम्पर्क बनाए रखें। इससे दूसरे व्यक्ति को पता चलता है कि आप बातचीत में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

❐

5 वार्तालाप के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाने के लिए सफल वार्तालाप के उदाहरण दीजिए।

उत्तर–वार्तालाप के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाने के लिए सफल वार्तालाप के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

1. गुरु-शिष्य का वार्तालाप

(घर में बालक, अपने माता-पिता के साथ बैठा है। उसका शिक्षक उसे कुछ बातें समझाता है।)

शिक्षक : अखिल, तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे लिए क्या-क्या करते हैं?

अखिल : नहीं, गुरु जी!

शिक्षक : तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए खाना बनाती है, तुम्हारे कपड़े धोती है।

अखिल : हाँ गुरु जी! मेरी माँ मेरे लिए यह सब करती हैं।

शिक्षक : जब तुम बीमार पड़ जाते हो, सारे-सारे दिन, सारी-सारी रात जागकर तुम्हारी देखभाल करती है। तुम्हारे लिए डॉक्टर बुलाती है। औषधि लाती है। तुम्हारे लिए परहेज के खाने तैयार करती है।

अखिल : हाँ, गुरु जी! मैं पिछले दिनों बीमार पड़ गया तो मेरी माँ ने यह सब कुछ किया।

शिक्षक : तुम्हें मालूम है तुम्हारे माता-पिता तुम्हें कितना लाड़-प्यार करते हैं-तुम्हारे लिए सभी दुख-कष्ट सहने के लिए तैयार रहते हैं ये। यदि तुम्हारी माता जी या पिता जी तुम्हें किसी बात पर डाँटते हैं.....

अखिल : हाँ डाँटते तो हैं, गुरु जी!

शिक्षक : तुम्हें मालूम है, वे तुम्हें डाँटते क्यों हैं? जब तुम कोई गलत बात करते हो, वे तुम्हें आगे ऐसी बातें न करने के लिए डाँटते हैं। तुम्हें सुधारने के लिए ऐसा करते हैं।

अखिल : आप सही कह रहें हैं गुरु जी! अब मैं उनकी और आपकी हर आज्ञा का पालन करूंगा।

शिक्षक : शाबाश ! हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

2. माँ और बेटी के बीच सुरक्षा को लेकर वार्तालाप

माँ : कहाँ जा रही हो बेटी?

बेटी : माँ मैं पढ़ाई के लिए श्वेता के घर जा रही हूँ।

माँ : ठीक है, शाम होने से पहले आ जाना। मुझे तुम्हारी चिंता लगी रहती है।

बेटी : मेरी प्यारी मम्मी इतनी फिक्र क्यों करती हो? मैं अब बड़ी हो गई हूँ।

माँ : बेटी समाज मे अभी भी बेटियाँ सुरक्षित नही हैं। आए दिन सामने आती घटनाओं से मेरा दिल घबराता है।

बेटी : डर तो मुझ भी लगता है माँ, रास्ते में असुरक्षित महसूस होता है।

माँ : सरकार हमारी सुरक्षा के लिए भरसक कदम उठा रही है परंतु हमे अपनी सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

बेटी : हाँ माँ आप सही कह रही हो, मैं अंधेरा होने से पहले घर आ जाऊँगी।

माँ : ठीक है।

3. पिता पुत्र की बातचीत

पिता : रोहित! तुम कैसे हो और पढ़ाई कैसी चल रही है?

पुत्र : पापा सब अच्छी चल रही है।

पिता : और छात्रावास में तुम ठीक से रह रहे हो ना।

पुत्र : जी पिताजी! मेरे सहपाठी बहुत अच्छे हैं, वे मुझे हर तरह की मदद करते हैं।

पिता : तुम्हें और कोई परेशानी तो नहीं है छात्रावास में।

पुत्र : नहीं पिताजी ! यहाँ सब अच्छा है।

पिता : ठीक है बेटा ! अच्छे से सबसे मिलजुलकर रहना और मन लगाकर पढ़ाई करना।

पुत्र : धन्यवाद पिताजी।

❐

---

6 **समूह चर्चा किसे कहते हैं तथा एक उपयोगी और सार्थक समूह चर्चा के प्रतिभागी के रूप में आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? विवेचना कीजिए।**

अथवा

सामूहिक चर्चा कौशल के विकास में बाधक गलतियों पर नियन्त्रण के उपाय बताइए।

उत्तर–समूह चर्चा एक सहयोगात्मक संवाद है जहाँ प्रतिभागी किसी निर्दिष्ट विषय पर विचारों और दृष्टिकोणों का आदान-प्रदान करते हैं। यह आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने में मदद करता है, जिससे विषय वस्तु पर समझ की गहराई बढ़ती है।

समूह चर्चा किसी विशेष विषय पर लोगों के बीच विचारों और राय के आदान-प्रदान की एक प्रक्रिया है। यह संचार का एक संरचित रूप है जहाँ व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने और उसी विषय पर दूसरों के दृष्टिकोण को सुनने के लिए बातचीत में भाग लेते हैं।

समूह चर्चा का अर्थ व परिभाषा–'समूह' उन व्यक्तियों का एक संग्रह है जिनके बीच नियमित संपर्क और लगातार बातचीत होती है और जो सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं। 'चर्चा' वह प्रक्रिया है जिसके तहत दो या दो से अधिक लोग किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आमने-सामने की स्थिति में जानकारी या विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

समूह चर्चा का अर्थ और परिभाषा –सरल शब्दों में समूह चर्चा का अर्थ है–समूह के अन्तर्गत की जाने वाली पारस्परिक परिचर्चा या वाद-विवाद या विचार गोष्ठी।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार के अनुसार–"समूह चर्चा वाद-विवाद व विचार-विमर्श की एक आधुनिक विधि है जिसमें चर्चा का नियंत्रण समूह द्वारा किया जाता है।"

समूह चर्चा में गलतियों पर नियन्त्रण के उपाय –समूह चर्चा संस्थानों में प्रवेश या नौकरी के लिए छँटनी या स्क्रीनिंग प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है। प्रवेश स्क्रीनिंग प्रक्रिया के दौरान समूह चर्चा के चक्र में सफल होने के लिए, परीक्षक के मन में आपको अपने साथियों के साथ अंतर पैदा करने के लिए निम्नलिखित गलतियों से बचना चाहिए। तो, आइए समूह चर्चा से जुड़ी उन आम गलतियों पर नज़र डालें जो उम्मीदवार समूह चर्चा के दौरान करते हैं।

1. **यदि आप विषय नहीं जानते हैं तो आगे न बढ़ें**-बहुत से छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं या अच्छे शिक्षण संस्थानों में प्रवेश की तैयारी के लिए कोचिंग सेंटरों में शामिल होते हैं। इन केंद्रों पर उन्हें लिखित परीक्षा के बाद होने वाले साक्षात्कार और समूह चर्चा के सत्र के बारे में सुझाव और सलाह भी दी जाती है। और यहां प्राप्त सलाह से लैस कई उम्मीदवार इस विषय पर शुरुआत करने का प्रयास करते हैं, भले ही उन्हें इसके बारे में कोई जानकारी न हो। समूह चर्चा राउंड में अज्ञानता सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। यदि आप विषय को अच्छी तरह से जानते हैं और इसके बारे में आश्वस्त हैं, तो ही चर्चा शुरू करना उचित है। यदि नहीं, तो दूसरों के शुरू होने की प्रतीक्षा करना बुद्धिमानी है। दूसरा या तीसरा वक्ता होने में कोई बुराई नहीं है क्योंकि इससे आपको विषय पर विचार करने और समझने और कुछ मूल्यवान इनपुट देने का मौका मिलेगा, जिससे आप बेहतर अंक अर्जित कर सकेंगे।
2. **यदि आप इसे जानते हैं तो नेतृत्व करने में संकोच न करें**-दूसरी ओर, यदि आप विषय के अच्छे जानकार हैं और चर्चा शुरू करने के बारे में काफी आश्वस्त हैं तो आपको ऐसा करने में संकोच नहीं करना चाहिए। यह बिलकुल सच है, जो उम्मीदवार चर्चा शुरू करता है, उस पर ध्यान दिया जाता है और यदि वह अमूल्य इनपुट देता है तो उसे कुछ बोनस अंक भी दिए जाते हैं। यदि आप शुरुआत में ही विषय पर उचित ज्ञान के बिना बोलते हैं तो यह नकारात्मक प्रभाव छोड़ता है। हालाँकि, विषय के जानकार होने पर भी बोलने में झिझकना मुख्यत: अभ्यास की कमी के कारण होता है। इसलिए जितना संभव हो सके मॉक समूह चर्चा में भाग लेना सुनिश्चित करें।
3. **किसी अन्य के विचारों या टिप्पणियों की नकल न करें या उनका अनुसरण न करें**–यह याद रखना आवश्यक है कि समूह चर्चा में यदि आप केवल वही दोहराते हैं जो दूसरे कह रहे हैं तो आप समूह चर्चा में कोई मूल्यवान योगदान नहीं कर रहे हैं। इससे मूल्यांकनकर्ता पर आपका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, यह बताने की जरूरत नहीं है कि समूह चर्चा से आपका निष्कासन निकट है। यदि आपको इस विषय पर कोई जानकारी नहीं है और आप इसके बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं, तो समझदारी से भाग लेना अर्थात् विचार प्रकट करना सबसे अच्छा है। दूसरों की बातें सुनें, उनके

उत्तरों का विश्लेषण करें और यदि संभव हो तो उसमें कुछ बिंदु जोड़ें या सोचें कि उन पंक्तियों के साथ और क्या कहा जा सकता है। आपके द्वारा रखा गया कोई भी विचार ऐसा नहीं होना चाहिए जो पहले कहा जा चुका हो।

4. **अपनी ही बातों का खंडन न करें**-यह एक बहुत ही सामान्य गलती है जो अधिकांश छात्र समूह चर्चा राउंड के दौरान करते हैं। अधिकांश समय समूह चर्चा में दिए गए विषय बहस योग्य होते हैं। आप या तो पक्ष में खड़े हो सकते हैं या विपक्ष में या तर्क के आधार पर अपना मत रख सकते हैं। लेकिन यहां होता यह है कि आप अपनी ही बातों का खंडन करने लगते हैं और अक्सर इसका एहसास करने में असफल हो जाते हैं। और जब ऐसा होता है तो मूल्यांकनकर्ता आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता है जिसका कोई वास्तविक रुख नहीं है और आपके विचारों में आत्मविश्वास की कमी है। यह वैचारिक विरोधाभास निस्संदेह, भविष्य के प्रबंधकों में वांछनीय गुण नहीं है।

5. **साथी प्रतिभागियों से नजरें मिलाने से न बचें या नजरें न चुराएँ**-समूह चर्चा में भाग लेते समय यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह एक चर्चा है जिसमें कई लोग शामिल हैं। इसका मतलब यह है कि आप सिर्फ एक वक्ता नहीं हैं जो कई लोगों को संबोधित कर रहे हैं, बल्कि उनके साथ बहस जैसा कुछ कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आँख मिलाने से बचना वक्ता की ओर से उसके विचारों में अनादर या आत्मविश्वास की कमी का संकेत माना जाता है। कई उम्मीदवार अपनी निगाहें केवल मूल्यांकनकर्ता पर टिकाते हैं या किसी रिक्त स्थान पर देखना पसंद करते हैं। लेकिन वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके साथ आप बातचीत कर रहे हैं, यह आपके साथी उम्मीदवार हैं जो चर्चा का हिस्सा हैं। तो, ऐसे परिदृश्य में सबसे अच्छी रणनीति समूह में सभी के साथ आँख से संपर्क बनाए रखना है। इससे यह आभास होता है कि आप वहां उपस्थित सभी लोगों को अपनी बात स्पष्ट रूप से बताने के लिए उत्सुक हैं।

6. **दूसरों को बीच में रोकने से बचें**–समूह चर्चा का उद्देश्य न केवल आपके बोलने के कौशल का मूल्यांकन करना है बल्कि आपके सुनने के कौशल का भी मूल्यांकन करना है। किसी को टोकने से अक्सर नकारात्मक बातें सामने आती हैं। याद रखें, विषय एक बहस जैसा लग सकता है लेकिन समूह चर्चा एक चर्चा है। इसलिए दूसरों के बोलते समय उन्हें बीच में न रोकें, उनकी बातों को सुनें और फिर अपने विचार रखें, चाहे वे इसके पक्ष में हों या विपक्ष में। इससे आपको अधिक अंक अर्जित करने और स्वयं को अधिक प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में मदद मिलेगी।

7. **केवल एक बार न बोलें, पूरी चर्चा के दौरान योगदान दें**-यह गलती कुछ ऐसी है जिसे थोड़ी सी समझदारी से आसानी से टाला जा सकता है। छात्र आमतौर पर अपनी सभी बातें एक ही बार में, एक ही मौके पर बोलने की कोशिश करते हैं। समस्या यह है कि उन्हें डर है कि उन्हें बोलने का दोबारा मौका नहीं मिलेगा। लेकिन यह कोई बुद्धिमानी भरा कदम नहीं है। अपने सभी बिंदुओं को 2-3 अलग-अलग भागों में बाँट लें और फिर एक समय में एक मुख्य बिन्दु पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करें। आपको जो कुछ भी कहना है उसे एक ही बार में न कहें बल्कि अपनी राय 2-3 बार बताएं। साथ ही, सुनिश्चित करें कि आप जो कुछ भी बोलते हैं वह मूल्यवान हो और आपने या किसी और ने पहले जो कहा है उसकी पुनरावृत्ति न हो।

8. **आत्मविश्वास न खोएँ**-समूह चर्चा के दौरान घबराहट होना या आत्मविश्वास की कमी का अनुभव होना असामान्य बात नहीं है। समूह चर्चा में आपके प्रदर्शन का अधिकांश भाग मूल्यांकनकर्ता द्वारा दिए गए विषय पर निर्भर करता है। इसलिए, यदि कुछ गलत होता है, जैसे कि आपने कोई बिंदु गलत बताया है, तो बहुत से अभ्यर्थी घबरा जाते हैं और आत्मविश्वास खो देते हैं। लेकिन यहां मुद्दा यह

है कि गिरे हुए दूध पर रोने का कोई फायदा नहीं है। गलतियाँ हर कोई करता है लेकिन मायने यह रखता है कि आप उससे कितनी जल्दी और कितनी अच्छी तरह उबरते हैं। इसे एक चुनौती के रूप में लें और वापसी करके अपनी गलती सुधारने का प्रयास करें। साथ ही चर्चा में कुछ मूल्यवान बिंदु भी जोड़ें। आप जो कुछ भी बोलते हैं वह समूह को स्वीकार्य नहीं हो सकता है लेकिन आप इसे कैसे बोलते हैं और समूह में कितना मूल्य जोड़ते हैं यह मूल्यांकनकर्ता के लिए मायने रखता है।

9. **बड़बड़ाओ मत, सुनने योग्य बनो**-याद रखें कि आपके आस-पास के सभी उम्मीदवार मूल्यांकनकर्ता को प्रभावित करना चाह रहे हैं और हर कोई अपनी बात बेहतर ढंग से रखने का प्रयास कर रहा है। समूह चर्चा का दृश्य अक्सर मछली बाजार जैसा हो जाता है क्योंकि हर कोई बोल रहा होता है लेकिन कुछ भी सुनाई नहीं देता। ऐसे शोर-शराबे में बोलना आपकी मेहनत और समय दोनों की बर्बादी है। इसके अलावा, यदि आपकी आवाज़ कमज़ोर, धीमी या डरपोक है तो आपके पास कोई मौका नहीं है। आप या तो हंगामा शांत होने का इंतजार कर सकते हैं या यदि आपकी आवाज मजबूत है तो आप चर्चा का नेतृत्व करने की कोशिश कर सकते हैं, अपनी बात रख सकते हैं और थोड़ी ऊंची आवाज में बोलकर हंगामा शांत करने का प्रयास कर सकते हैं। यह आपके संदेश को संप्रेषित करने में मदद करेगा और ऐसी स्थिति में समूह का नेतृत्व करने की आपकी क्षमता मूल्यांकनकर्ता पर अच्छा प्रभाव छोड़ेगी।

❐

किसी एक विषय का भाव-विस्तार या पल्लवन

7 भाव पल्लवन से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित व्याख्यायित कीजिए तथा भाव पल्लवन के नियमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–भाव विस्तार, विस्तार लेखन, भाव पल्लवन, वृद्धीकरण अथवा संवर्द्धन का आशय किसी संक्षिप्त, गूढ़ पंक्ति, काव्य-सूक्ति, गद्य-सूक्ति अथवा विचार सूक्ति की विस्तारपूर्वक, सोदाहरण विवेचना करने से है जिसमें लेखक सामान्य पाठक के लिए उस सूक्ति की विस्तृत बातों को बोधगम्य बनाता है। यद्यपि उस काव्य-सूक्ति या गद्य-सूक्ति में छिपा हुआ अर्थ-विस्तार पाठक को संकेत तो करता है किन्तु पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता जिसे लेखक खोलकर प्रकट करता है।

वास्तव में संक्षिप्तीकरण की 'गागर में सागर' भरने की उक्ति के विपरीत वृद्धीकरण या पल्लवन में गागर में भरे उस सागर को बाहर निकालकर पूरे प्रवाह के साथ पाठक के सामने प्रकट करना होता है।

भाव विस्तार के सामान्य नियम-

1. भाव विस्तार अथवा वृद्धीकरण में किसी निष्कर्ष वाक्य या सूक्ति वाक्य से संबंधित विचारों अथवा भावों को प्रस्तुत किया जाता है अत: उस शीर्षक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ना व समझना चाहिए।
2. उक्ति अथवा कथन के आशय को प्रकट करने वाले दूसरे तथ्यों को विस्तारपूर्वक प्रकट करना चाहिए।
3. केन्द्रीय भाव को स्पष्ट करने वाले समकक्ष उदाहरणों तथा अन्य विद्वानों के कथनों से आशय की पुष्टि करना चाहिए।
4. भाव पल्लवन की भाषा सरल व सुबोध होनी चाहिए।
5. भाव विस्तार में शब्दों के अर्थ लिखने की आवश्यकता नहीं होती और न ही अनावश्यक तथा विषय से असंगत तथ्यों को देना चाहिए।

6. वृद्धीकरण अन्य पुरुष शैली में करना चाहिए, उत्तम पुरुष शैली (मैं यह मानता हूं, मेरी राय में ऐसा है आदि) में नहीं।

7. वाक्य छोटे हों, आलंकारिक तथा सामासिक शैलियों से बचा जाना चाहिए।

भाव पल्लवन के उदाहरण-

1. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

भाव पल्लवन–*किसी भी लक्ष्य की आधी प्राप्ति तो कार्य करने के लिए बनी रहने वाली आशा और उत्साह का संचार ही है। जब मनुष्य अपने मन में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संकल्प लिए चलता है तब मार्ग में आने वाली बाधाओं, तकलीफों का प्रभाव कम होता रहता है, क्योंकि उसे निरन्तर अपने आप ही से मंजिल तक पहुँच सकने का निश्चय मिलता रहता है। बाहरी प्रोत्साहन का अपना महत्व होता है, किन्तु मनुष्य जब तक खुद को प्रेरित न करे तब तक लाख अनुकूलताएँ एवं सुअवसर सामने हों, लक्ष्य की प्राप्ति असंभव-प्राय ही रहती है। घातक बीमारी से भी व्यक्ति को भीतर से लड़ने की शक्ति उसमें नवीन प्राणों का संचार कर देती है। इसलिए जीत का संबंध शारीरिक भौतिक सामर्थ्य की तुलना में मानसिक धारणा से अधिक हैं।*

2. करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान-

भाव पल्लवन–*बार-बार अभ्यास करने से मन्द बुद्धि या मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाते हैं; अर्थात् अभ्यास व्यक्ति का सबसे बड़ा शिक्षक है। बोधिचर्यावतार ने कहा कि "कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो अभ्यास करने पर भी दुष्कर हो।" अंग्रेजी में भी एक कथन है कि 'Practice Makes a Man Perfect' अर्थात अभ्यास मनुष्य को अपने कार्य में दक्ष बना देता है। वास्तव में निरन्तर अभ्यास ही ज्ञानार्जन का मूल मंत्र है। अल्प बुद्धि जन यदि निरन्तर अभ्यास करें तो भी विद्वान बन सकते हैं। अभ्यास की बारम्बारता से स्मरण शक्ति और समझ का दायरा बड़ा होता है। ज्ञान आदत बनने लगता है। रहीम ने इस कथन के उदाहरण के रूप में दूसरी पंक्ति यह कही है–'रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान' अर्थात् रस्सी का बार-बार आना-जाना तो पत्थर की सिल पर भी अपने निशान छोड़ देता है जबकि मनुष्य तो एकदम जड़ तो होता ही नहीं, उसमें बुद्धि का कुछ तत्व तो अवश्य होता ही है।*

3. जैसी संगति बैठिए तैसोई फल होय-

भाव पल्लवन–*मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे किसी-न-किसी साथी की आवश्यकता अवश्य होती है, परन्तु यह संगति ही उसके व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करती है संगति का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य पड़ता है। जिस प्रकार स्वाति की बूँद सीप के सम्पर्क में आने पर मोती और सर्प के सम्पर्क में आने पर विष बन जाती है, उसी प्रकार सत्संगति में रहकर मनुष्य का आत्म-संस्कार होता है, जबकि बुरी संगति उसके चारित्रिक पतन का कारण बनती है। अच्छी संगति में रहकर मनुष्य का चारित्रिक विकास होता है। उसकी बुद्धि परिष्कृत होती है बुरी संगति हमारे भीतर के दानव को जाग्रत करती है। शुक्लजी ने ठीक ही कहा है–"कुसंग का ज्वर बड़ा भयानक होता है। दुर्जन का साथ पग-पग पर हानि देता है। अपमान और अपयश देता है।"*

4. मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।

भाव पल्लवन– *"अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।*
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।।"

मनुष्य स्वभावतः क्रियाशील प्राणी है चुपचाप बैठना उसके लिए संभव नहीं है। इसी प्रवृत्ति के कारण समाज में समय-समय पर क्रोध, घृणा, भय, आश्चर्य, शांति, उत्साह, करुणा, दया, आशा तथा हर्षोल्लास का प्रादुर्भाव होता है। साहित्यकार इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देकर साहित्य का निर्माण करता है। मनुष्य

एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के उसका जीवन नहीं और बिना उसके समाज का अस्तित्व नहीं। समाज का केन्द्र मनुष्य है तथा साहित्य का केन्द्र भी मनुष्य ही है। मनुष्य समाज के बिना साहित्य का कोई महत्व नहीं। यह कहना गलत न होगा कि साहित्य और समाज का संबंध शरीर और आत्मा की तरह अटूट है। साहित्य का जन्म समाज के बिना असंभव है तथा एक सुसंस्कृत और सभ्य समाज की कल्पना साहित्य के बिना अधूरी है। समाज को साहित्य से ही सद्प्रेरणा मिलती है तथा साहित्य समाज के द्वारा ही गौरवान्वित होता है। प्रत्येक साहित्य अपने युग से प्रवाहित और प्रेरित होता है। साहित्य किसी भी समाज व राष्ट्र की नींव होता है। यदि नींव सुदृढ़ होगी तो उस पर बना भवन भी सुदृढ़ और मजबूत होगा।

द्रुतवाचन –किसी एक साहित्यिक कृति पर आधारित

8 किसी एक साहित्यिक कृति पर आधारित द्रुत वाचन के महत्व, उद्देश्यों और सावधानियों पर विचार कीजिए।

उत्तर–सस्वर वाचन और मौन वाचन का सम्बन्ध पाठ्य पुस्तकों से है। मौन पाठ (वाचन) के अन्तर्गत हम दो प्रकार के वाचन की बात करते हैं–विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) और गहन (सूक्ष्म) वाचन। भाषा शिक्षण में दो प्रकार की पाठ्य पुस्तकें होती हैं। एक तो वे पुस्तकें जिनका अध्ययन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आवश्यक होता है। इन पुस्तकों को गहन (सूक्ष्म) वाचन की श्रेणी में रखा जाता है और दूसरे पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे पुस्तकें जिनको सहायक पुस्तकें कहा जाता है। ऐसी सभी अतिरिक्त पुस्तकों को विस्तृत (द्रुत) वाचन की श्रेणी में रखा जाता है।

सूक्ष्म वाचन से तात्पर्य–सूक्ष्म (गहन) वाचन से तात्पर्य प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक पाठ का गहनता से, अर्थात् सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करना और इसके साथ ही साथ नए शब्दों के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करना और वाक्यों के सही अर्थों को समझना है। गहन पाठ अर्थात् सूक्ष्म वाचन की पुस्तक शब्दावली, मुहावरे, नए भाव एवं विचार, उच्चारण, रचना और व्याकरण की दृष्टि से अध्ययन का केन्द्र होती हैं।

छात्र-छात्राएँ जब कम सामग्री को पढ़कर उसके अधिक अर्थ समझ सकें, उसको सूक्ष्म वाचन या गहन वाचन कहा जाता है। इस प्रकार के वाचन का सम्बन्ध नियमित अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों से होता है।

द्रुत वाचन से तात्पर्य–छात्र-छात्राओं के लिए नियमित अध्ययन की पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त सहायक पुस्तकें भी होती हैं, जिनकी उनको आवश्यकता पड़ती है क्योंकि वे पुस्तकें पाठ्य पुस्तकों के लिए सहायक सिद्ध होती हैं। ऐसी पुस्तकों को शीघ्रता से पढ़ा जाता है। इसीलिए ऐसी पुस्तकों को द्रुत पाठ या विस्तृत पाठ की पुस्तकें कहते हैं। इस प्रकार द्रुत पाठ या विस्तृत पाठ से यह तात्पर्य है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक वाचन या पाठ करना अर्थात् पढ़ना।

द्रुत वाचन (विस्तृत) का महत्व

(1) द्रुत वाचन में सीखी हुई या अर्जित शब्दावली के प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास होता है।

(2) द्रुत पाठ की पुस्तकें पढ़ने से भाषा समझने की योग्यता एवं क्षमता का विकास होता है।

(3) पढ़ने की गति में तीव्रता आ जाती है, जो दैनिक जीवन में अधिक पढ़ने के लिए लाभप्रद सिद्ध होती है।

(4) मौन पाठ का अधिक से अधिक अभ्यास होता है।

(5) साहित्य में रुचि पैदा होती है और छात्र-छात्राएँ स्वतन्त्र रूप से साहित्य का अध्ययन करने लगते हैं।

(6) भावी जीवन के लिए छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। उनको अपने भावी जीवन में अधिक पढ़ने की आवश्यकता है।

(7) ज्ञानोपार्जन में वृद्धि होती है।

(8) महापुरुषों, विद्वानों और दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के अमूल्य विचारों से परिचित हो जाते हैं।

(9) इससे देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिससे हमारे सामान्य ज्ञान का विस्तार होता है।

(10) कहानी, उपन्यास या साहित्य की किसी अन्य विधा को पढ़कर मनोरंजन होता है।

(11) इससे स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय करने की आदत का विकास होता है।

विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) के उद्देश्य–द्रुत वाचन के मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं जो निम्न हैं-

(1) छात्र-छात्राओं में शीघ्रता से पढ़ने की आदत डालना, ताकि वे इस योग्य हो जाएँ कि कम से कम समय में अधिक से अधिक पढ़ सकें।

(2) छात्र-छात्राओं में स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय की आदत का विकास करना और साहित्यिक प्रवृत्ति को विकसित करना ।

द्रुत वाचन की पुस्तकें या सहायक पुस्तकों के आवश्यक गुण-

(1) सहायक या द्रुत पाठ की पुस्तकों की शब्दावली परिचित और सरल होनी चाहिए।

(2) भाषा भी कठिन नहीं होनी चाहिए, क्योंकि द्रुत गति से वाचन तभी सम्भव हो सकता है जब पढ़ने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।

(3) पठन सामग्री के विषय रुचिपूर्ण और छात्र-छात्राओं की अवस्था, आवश्यकता और स्तर के अनुकूल हो।

द्रुत वाचन की पुस्तकों के विषय–द्रुत (विस्तृत) वाचन की पुस्तकों के विषय निम्न प्रकार के हो सकते हैं-

(1) शिक्षा प्रद एवं रोचक कहानियाँ हों।

(2) महापुरुषों का जीवन चरित्र हो।

(3) छोटे उपन्यास और एकांकी के रूप में सामाजिक बुराइयों का चित्रण हो।

(4) वर्णानात्मक और व्यंग्यात्मक लेखों को सम्मिलित किया जा सकता है।

(5) आविष्कारों और वैज्ञानिक खोजों पर प्रकाश डालने वाली विषय सामग्री हो।

लेकिन इस बात का ध्यान अवश्य ही रखा जाए कि विषय-वस्तु छात्र-छात्राओं के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

द्रुत पाठ से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें–द्रुत पाठ से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बातें जो निम्न हैं–

(1) विस्तृत पाठ (द्रुत पाठ) का अध्ययन स्थूल होता है न कि सूक्ष्म।

(2) द्रुत पाठ का सम्बन्ध नई शब्दावली के सीखने से न होकर, पहले अर्जित शब्दावली के सक्रिय उपयोग से होता है।

(3) द्रुत पाठ में सस्वर वाचन की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उच्चारण पर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जाता और केवल विषय सामग्री के अर्थ बोध का ध्यान रखा जाता है।

(4) इस प्रकार के वाचन या पाठ में व्याकरण के नियमों एवं रचना आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

(5) द्रुत पाठ में या विस्तृत पाठ में अर्थ ग्रहण करते हुए तीव्र गति से वाचन पर ही बल दिया जाता है।

द्रुत वाचन में शिक्षक की भूमिका-

(1) द्रुत वाचन सही ढंग से मौन वाचन के अन्तर्गत ही सम्भव हो सकता है। इसके लिए शिक्षक को समय का ध्यान रखना चाहिए, ताकि वह जान सके कि छात्र-छात्राएँ तीव्र गति से वाचन कर रहे हैं या नहीं।

(2) शिक्षक को बीच-बीच में या द्रुत पाठ के अन्त में छात्र-छात्राओं से प्रश्न पूछने चाहिए, ताकि वे सतर्क रहें।

(3) विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) में छात्र-छात्राएँ किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव करें तो शिक्षक को इन कठिनाइयों को अवश्य ही दूर करना चाहिए।

(4) शिक्षक को चाहिए कि द्रुत वाचन के माध्यम से उन्हीं पाठों को पढ़ाए जो सरल एवं सुगम हों।

समीक्षा –पुस्तक समीक्षा व फिल्म समीक्षा

9 **पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं? पुस्तक-समीक्षा के महत्व और विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए।**

उत्तर–समीक्षा का शाब्दिक अर्थ है–सम्यक् अवलोकन, सम्मति, अन्वेषण आदि। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक का सम्यक् विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर आदि पर प्रकाश डालता जाता है। इसके साथ ही वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के संबंध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है।

पुस्तक समीक्षा का महत्व–साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। उसके इस सवाल का समाधान पुस्तक-समीक्षा कर देती है। इसके अलावा पाठक वर्ग का एक हिस्सा ऐसा भी होता है जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़े। यहाँ समीक्षा उसकी मदद करती है। इस प्रकार एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुचाँ देती है। इसके दो फायदे होते हैं। एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है, दूसरे वह नए लेखकीय रुझानों से भी परिचित होता चलता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से सम्बद्ध पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुचँती है।

पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठक के लिए सही पुस्तक का चुनाव मुश्किल काम है। समीक्षा इस मुश्किल को कम करती है। इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जोड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकता है और अपनी राय बना सकता है।

पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ–पुस्तक समीक्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **वस्तुनिष्ठता**–एक अच्छी समीक्षा की पहली शर्त है–वस्तुनिष्ठता। पुस्तक समीक्षा पढ़कर पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि इसमें पुस्तक के साथ न्याय किया गया है और समीक्षक ने अनावश्यक रूप से भर्त्सना या स्तुति नहीं की है। समीक्षा करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि आपकी समीक्षा कहीं पुस्तक का विज्ञापन तो नहीं बन रही है। केवल प्रशंसात्मक, प्रचारात्मक और परिचायात्मक लेखन समीक्षा को विज्ञापन का रूप दे देता है। समीक्षा व्यक्तिगत राग-द्वेष से मुक्त होनी चाहिए और उसमें निहित मूल्यांकन संतुलित होना चाहिए।
2. **पूर्वाग्रहमुक्तता**–पुस्तक समीक्षक और समीक्षा, दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। पुस्तक समीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता तभी आ सकती है, जब समीक्षा पूर्वाग्रह से मुक्त हो। पूर्वाग्रह समीक्षक

के व्यक्तिगत और विषयगत दोनों ही दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है। पाठक को यह महसूस नहीं होना चाहिए कि समीक्षा समीक्षक के पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है। समीक्षक को अपनी बात कहने का हक है, पर उसे ऐसा तर्क संगत और वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर करना चाहिए।

3. **प्रासंगिकता**–समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। एक सजग पाठक लगातार नई पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करते रहना चाहता है। अतः नई पुस्तकों की समीक्षा यथाशीघ्र होनी चाहिए। समीक्षा में विलम्ब होने से उसके अप्रासंगिक हो जाने का खतरा रहता है। देर से प्रकाशित समीक्षाओं में पाठक की रूचि नहीं रह जाती है क्योंकि वह दूसरे स्रोतों से पुस्तक से परिचित हो जाता है। कभी-कभी कोई पुस्तक भी किसी कालखंड में ही प्रासंगिक रहती है। वस्तुतः समीक्षा की प्रासंगिकता पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ी हुई है ।

4. **केंद्रीय बिंदु की पहचान**–समीक्षा का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के मूल कथ्य से परिचित कराना होता है। इसे केंद्रीय विषय, केंद्रीय बिंदु, मुख्य विचार आदि भी कहते हैं। पुस्तक का सिर्फ सारांश प्रस्तुत करना समीक्षा नहीं होता। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक में वर्णित कथा को दुहराना भी समीक्षा नहीं है। अच्छी समीक्षा में पुस्तक के केंद्रीय विषय को सहज रूप में उजागर कर दिया जाता है। कोई पाठक सिर्फ पुस्तक का सार जानने के लिए समीक्षा नहीं पढ़ता। पाठक समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु के संबंध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। इसलिए अच्छी समीक्षा केंद्रीय बिंदु या केंद्रीय कथ्य को उभारने का कार्य करती है।

5. **सोद्देश्यता**–पुस्तक समीक्षा पुस्तक और पाठक के बीच पुल का काम करती है । पुस्तक समीक्षा पाठक को पुस्तक से जोड़ती है। पुस्तक समीक्षा के माध्यम से वह पुस्तक से पहला परिचय प्राप्त करता है। वह उसकी विषय वस्तु से परिचित होता है, उसके महत्व और प्रासंगिकता को जानकर यह तय करता है कि उसे यह पुस्तक पढ़नी चाहिए या नहीं। इसलिए यह जरूरी है कि समीक्षा सोद्देश्यपूर्ण हो। समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस तरह प्रस्तुत करनी चाहिए कि पाठक के सामने सारी तसवीर स्पष्ट हो जाए। पाठक के मन में यह जिज्ञासा होती है कि पुस्तक का केंद्रीय कथ्य क्या है, उसकी भाषा और शैली कैसी है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है, आदि। समीक्षा पाठक की ऐसी जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए, अन्यथा समीक्षा अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकेगी, पाठक समीक्षा से निराश होगा और उसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

6. **निजता**–प्रत्येक समीक्षक का दृष्टिकोण और उसकी लेखन शैली अलग-अलग होती है। इसकी झलक भी समीक्षा में मिलती है। समीक्षक की विश्लेषण क्षमता के कारण भी समीक्षाओं का स्वरूप अलग-अलग हो जाता है। लेखन की यह निजता समीक्षा का खास गुण है। प्रत्येक नए समीक्षक को अपने में यह गुण विकसित करना चाहिए। लेकिन निजता के नाम पर दुरूहता या अत्यधिक विद्वता पाठक पसंद नहीं करता। समीक्षा में स्पष्टता और सहजता पसंद की जाती है। पुस्तक समीक्षा आलोचना का प्रथम चरण है। उसमें बहुत गम्भीर होने या अपने मत को बहुत दृढ़ता और विस्तार से प्रस्तुत करने की खास आवश्यकता के लिए आलोचना या निबंध में ज्यादा अवकाश रहता है।

7. **भाषा और शैलीगत विशेषताएँ**–समीक्षा की भाषा सहज, सरल और समूह में चलने लायक होनी चाहिए। समीक्षा का उद्देश्य होता है पाठकों को पुस्तक की जानकारी देना। इसलिए समीक्षा में भाषा का दुरूहपन ठीक नहीं है। कठिन और दुरूह भाषा में पाठक उलझकर रह जाता है और पुस्तक की सही जानकारी हासिल करने में उसे कठिनाई महसूस होती है। समीक्षा की भाषा के साथ-साथ उसकी शैली भी सुपाठ्य और आकृष्ट करने वाली होनी चाहिए। समीक्षा का लेखन और विश्लेषण इस ढंग

का होना चाहिए कि पाठक शुरू से लेकर अंत तक समीक्षा पढ़ने को बाध्य हो जाए और पूरी तस्वीर उसके सामने स्पष्ट हो जाए। लेखन शैली की यह परिपक्वता समीक्षक के विस्तृत ज्ञान और प्रस्तुति की कुशल क्षमता पर निर्भर होती है। समीक्षक तर्कसंगत ढंग से चरण-दर-चरण पुस्तक का विश्लेषण कर अपनी शैली को आर्कषक और सम्प्रेष्य बना सकता है। समीक्षा जितनी अधिक सहज और सम्प्रेष्य होगी, उसकी महत्ता उतनी ज्यादा होगी। भाषा और शैली की दुरूहता में जकड़ी समीक्षा कभी भी श्रेष्ठ समीक्षा नहीं हो सकती।

10 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न व्यावहारिक पक्षों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

उत्तर–पुस्तक समीक्षा में समीक्षक पाठकों को पुस्तक से परिचित कराता है, उसमें वर्णित विषय पर प्रकाश डालता है और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। समीक्षा में पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएं भी दी जाती हैं-

1. **पुस्तक का परिचय**–पुस्तक का सही परिचय प्रस्तुत करना समीक्षक का मुख्य दायित्व है। समीक्षा लिखते समय आरंम्भ में पुस्तक की सामान्य जानकारी पाठक को देनी चाहिए। सामान्य जानकारी का तात्पर्य है–पुस्तक की विधा, उसकी विषय वस्तु के बारे में बताना, पुस्तक कब लिखी गई और उसका महत्व क्या है और विधा का भी उल्लेख करना। इस तरह की जानकारी से पाठक को यह तय करने में सुविधा रहती है कि प्रस्तुत पुस्तक उसकी अभिरुचि के अनुकूल है या नहीं। इस प्रारंभिक परिचय से ही वह समीक्षा पढ़ने की ओर प्रवृत्त होता है। निम्नलिखित उदाहरण पुस्तक समीक्षा के परिचयात्मक अंश को उजागर करता है।

उदाहरण–**'जहालत के पचास वर्ष'**

"प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' के रचयिता श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य-लेखन में माहिर माने जाते हैं। उनकी तमाम रचनाओं में व्यंग्य अलग-अलग रूपों में, अलग-अलग तेवरों में और तीखेपन के साथ मौजूद है। 'जहालत के पचास वर्ष' श्रीलाल शुक्ल के अब तक के समग्र व्यंग्य लेखों का संग्रह है। यह आजाद भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास का एक ऐसा एलबम है जहाँ भारतीय जीवन की कमजोरियों और अंतर्विरोधों को दिखाया गया है।

श्रीलाल शुक्ल प्रगतिशील, धर्मनिरपेक्ष, उदारवादी और राष्ट्र के अधोपतन से चिंतित विचारक के रूप में सामने आते हैं। राष्ट्र के प्रति उनकी चिंता हर निबंध में मुखर है। ये रचनाएँ इतनी तीखी और नुकीली हैं कि अपने गिरेबान में झांककर देखने को विवश करती हैं। लेखक खुद सफेद कॉलर वाला व्यक्ति रहा है और भारतीय नौकरशाही का अंग होने के कारण उसकी रग-रग से परिचित है। सफेद कॉलर वालों की नौकरशाही पर चोट कर सबसे अधिक कुठाराघात उन्होंने अपनों पर ही किया है। मम्मी जी का गधा न केवल मध्यवर्ग के चरित्र को उजागर करता है, बल्कि भूमंडलीकरण, उदारीकरण, और बाजारवाद पर भी उंगली उठाता है। उनके मारक घेरे में मध्यवर्ग के साथ-साथ नौकरशाह भी आते हैं और इन दोनों पर चोट करते समय लेखक तनिक भी कंजूसी नहीं बरतता है।

श्रीलाल जी की वे रचनाएँ ज्यादा अपील करती हैं जिनमें लेखक समाज की विद्रूपता और अंतर्विरोध को उभारने में सफल हुआ है। उनकी रचनाएँ केवल भावनात्मक आवेश और मानसिक-शाब्दिक ऊहापोह और क्रीड़ा से नहीं उपजी हैं, बल्कि वे रचना और रचनाकार के आंतरिक संघर्ष और द्वंद्व का प्रतिफलन हैं। यही व्यंग्य की शक्ति है, यही श्रीलाल शुक्ल की विशिष्टता है, यही 'जहालत के पचास वर्ष' की ऊर्जा और संजीवनी है।"

उपर्युक्त अंशों में पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनके लेखन और प्रस्तुति ढंग अलग-अलग हो सकते हैं, पर चार बातें कमोबेश पूरी समीक्षा में दृष्टिगोचर होती हैं। ये हैं –

- पुस्तक का सामान्य परिचय,
- लेखक का संक्षिप्त परिचय,
- लेखक के पहले की पुस्तकों का उल्लेख,
- पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत।

उपर्युक्त चारों बातों से पाठक को लेखक, उसके रचनात्मक क्षेत्र, पुस्तक के विषय और उसकी विधा का परिचय मिल जाता है। इस परिचय से प्रेरित होकर वह पुस्तक समीक्षा को आगे पढ़ना जारी रखता है। स्पष्ट है कि पुस्तक समीक्षा पुस्तक के परिचय पर समाप्त नहीं होती बल्कि उससे आरंभ होती है। वास्तविक समीक्षा तो इसके बाद आती हैं। पाठक समीक्षा पढ़ें, इसके लिए आवश्यक है कि आरंभ आर्कषक हो और बिना किसी लफ्फाजी के सीधी बात कहें।

2. विषय का महत्व–पुस्तक का सामान्य परिचय प्राप्त कर लेने के बाद पाठक पुस्तक की विषयवस्तु या कथ्य से परिचित होना चाहता है। जानना चाहता है कि पुस्तक का संबंध ज्ञान के किस क्षेत्र से है। मसलन साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, खेल-कूद आदि। विषय के परिचय के साथ उसकी प्रस्तुति की शैली की भी जानकारी आवश्यक है। अर्थात् पुस्तक निबंधात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, उपन्यास, कहानी, प्रश्नोत्तर आदि में लिखी गई है।

तीसरी जानकारी यह आवश्यक है कि लेखक ने यह पुस्तक किस पाठक वर्ग के लिए लिखी है। यह जानना इसलिए आवश्यक है कि पाठक वर्ग की भिन्नता एक ही विषय पर लिखी गई पुस्तकों में बहुत बड़ा अंतर ला देती है। यह अंतर विषय की प्रस्तुति से लेकर भाषा के चयन तक में नजर आता है।

उपर्युक्त बातों का उल्लेख करने के साथ ही विषय वस्तु के संबंध में विचार करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि पुस्तक की प्रासंगिकता क्या है? दूसरे, पुस्तक में विषय की प्रस्तुति किस रूप में है? क्या लेखक अपनी बात को प्रभावशाली रूप में रखने में सफल रहा है? तीसरे, लेखक ने विषय के किन-किन पक्षों को पेश किया है और ये पक्ष मूल विषय को स्पष्ट करने में कहाँ तक सहायक हुए हैं।

गिरिराज किशोर के उपन्यास 'परिशिष्ट' पर समीक्षा लिखते हुए डॉ. गोपाल ने इसकी विषय वस्तु के महत्व और उसकी प्रासंगिकता को उजागर किया है -

"गिरिराज किशोर ने अपने कथा संसार के केन्द्रीय मंच के रूप में एक आई.आई.टी. संस्थान को चुना है जहाँ अधिकतर उच्च वर्ग और सम्पन्न समाज के छात्र प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रवेश पाते हैं। इनमें से अधिकतर छात्र ऐसे पब्लिक और मिशनरी स्कूलों से आते हैं जहाँ न केवल अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, वरन् अंग्रेजी उनकी घुट्टी में ही पिला दी जाती है। ये लड़के विलायती रहन-सहन, विलायती रीति-रिवाज, विलायती मैनर्स, विलायती लहजे, विलायती अनुभव आदि के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में बोलने, भारतीय ढंग से अभिवादन करने, भारतीय ढंग से कपड़े पहनने आदि में इन्हें शर्म आती है। इनके बीच अनुसूचित जाति के छात्र अपने आप को अजनबी महसूस करते हैं। उच्च जाति के छात्र बहुमत में तो होते ही हैं, वे दलित छात्रों के प्रति आक्रामक भी होते है। वे उच्चवर्गीय छात्र दलित छात्रों को अवांछित और घुसपैठिया समझते हैं, जैसे मन्दिर के प्रांगण में दो-चार सुअर घुस आये हों। इन पॉश संस्थाओं में रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा, बातचीत, वैगरह का ऐसा कृत्रिम ढाँचा बन गया हैं कि भारत का औसत किसान वहाँ पहुँच कर अनुभव करता है कि वह शायद अपने देश में नहीं है। दलित किसान-मजदूर के लिए तो वह दूसरी दुनिया ही है। इन संस्थानों के अधिकतर शिक्षक और उच्चवर्गीय छात्र आरक्षण की व्यवस्था के विरोधी हैं, और वे इसका बदला अल्पसंख्यक दलित छात्रों से जाति मतभेद की नीति अपना कर करते हैं। कक्षाओं में, खेल के मैदान में, मेस में छात्रावास में, अतिथि भवन में सर्वत्र उच्च वर्गीय छात्र अल्पसंख्यक दलित छात्रों का अपमान करते हैं, डराते धमकाते हैं, और उत्तेजित होने पर मारपीट भी करते हैं। इन संस्थाओं की शिक्षा पद्धति भी इस ढंग की है कि आरक्षण पर आये

छात्र सर्वाधिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो पाते है। सारी पढ़ाई अंग्रेजी में होती है, अंग्रेजी में ही बातचीत होती है, जिससे सामान्य स्कूलों से पढ़ कर आए छात्रों को न केवल पढ़ाई समझने में कठिनाई होती है वरन् फर्राटे से अंग्रेजी न बोल सकने के कारण अपमानित भी होना पड़ता है। इस सबका परिणाम यह होता है कि तकनीकी संस्थाओं में एससी एसटी, कोटा के अधिकतर छात्र सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई संपन्न नहीं कर पाते, अनेक छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर भाग जाते हैं और कई तो आत्महत्या तक कर लेते हैं।"

3. आलोचनात्मक मूल्यांकन–किसी पुस्तक का सामान्य परिचय देने और उसकी विषयवस्तु पर प्रकाश डालने के बाद समीक्षक पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन की ओर अग्रसर होता है। यह बात यहाँ ध्यान रखने की है कि आलोचनात्मक मूल्यांकन और परिचय को समीक्षा में अलग-अलग रखा जाए, यह आवश्यक नहीं है। बेहतर यही है कि पुस्तक के परिचय में ही उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी निहित हो। यह इसलिए जरूरी है कि पुस्तक समीक्षा में इतना अवकाश संभव नहीं होता कि दोनों कार्य स्वतंत्र रूप से किए जा सकें।

किसी पुस्तक का मूल्यांकन समीक्षक को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर करना चाहिए। यह पूर्वाग्रह लेखक के प्रति भी हो सकता है और उसके लेखन या विधा के प्रति भी इससे हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए। किसी पुस्तक का संतुलित मूल्यांकन बहुत कुछ समीक्षक की उस विषय पर पकड़, समझ और दृष्टिसंपन्नता पर निर्भर करता है। पुस्तक के मूल्यांकन का काम उत्तरदायित्व पूर्ण होता है, क्योंकि इसके आधार पर पाठक एक राय बनाता है। इस प्रकार इसके माध्यम से समीक्षक एक सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह करता है। आइए कुछ उदाहरण के माध्यम से समीक्षा के आलोचनात्मक पक्ष पर नजर डालें।

गिरिराज किशोर के उपन्यास 'परिशिष्ट' पर डॉ. गोपाल की समीक्षा के कुछ अंशों का आपने अवलोकन किया है। यहाँ समीक्षा का जो अंश प्रस्तुत किया जा रहा है, वह पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन से सम्बद्ध है-

"इसमें सन्देह नहीं कि इस उपन्यास के मूल में एक समस्या है। इस समस्या की भयावहता का बोध कराने के लिए ही उपन्यास लिखा गया है पर रचना या कला की दृष्टि से समस्या की प्रमुखता कहीं बाधक नहीं बनी है। उपन्यासकार ने अपने कथा संसार के माध्यम से समस्या को प्रस्तुत ही किया है, कहा नहीं है। यहाँ तक की उपन्यास के पात्र भी इस समस्या पर कहीं अपने विचार प्रस्तुत नहीं करते। कथा के पात्र इस समस्या के बीच से गुजरते हैं, इसे जीते हैं, भोगते हैं, अनुभव करते हैं। उपन्यास पढ़ने पर इस बात का बोध होता है कि उपन्यासकार को यह विजन उसके चारों ओर की परिस्थितियों से प्राप्त हुआ होता है। हम जानते हैं कि गिरिराज किशोर आई.आई.टी. कानपुर से सम्बद्ध हैं। यह वस्तुत: उस मानसिकता के विरूद्ध अभियान है जिसके शिकार उच्च वर्ग के बहुसंख्यक लोग हैं। इस मानसिकता का एक रूप वह भी हो सकता है जो उपन्यास में प्रस्तुत है। यदि इस उपन्यास के आईने में हम अपने चेहरे देख सकें और उन्हें पहचान सकें तो सम्भवत: उपन्यास की यह सबसे बड़ी सफलता होगी।

दलितों की जिन्दगी पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास, 'नाच्यो बहुत गोपाल' अमृतलाल नागर ने लिखा है। निस्सन्देह इस जीवन यथार्थ की गहरी समझ, प्रमाणिक अनुभव, गहन अनुभूति, पात्रों और स्थितियों की जीवन्त सृष्टि, सही शिल्प प्रविधि के चुनाव और भाषा के सर्जनात्मक उपयोग की दृष्टि से 'परिशिष्ट' 'नाच्यो बहुत गोपाल' की अगली कड़ी है। इस उपन्यास के प्रकाशन के साथ गिरिराज किशोर हिन्दी की अगली पंक्ति के उपन्यासकारों के बीच अपनी स्थायी जगह बनाने में सफल हो गए हैं।"

4. प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ–पुस्तक के प्रकाशन स्तर और प्रकाशन संबंधी सूचनाओं से पाठक को अवगत कराना समीक्षा का दायित्व है। यानी पुस्तक का प्रकाशन कैसा हुआ है, उसके मुद्रण का स्तर क्या है, मूल्य कितना है, आदि प्रूफ संबंधी त्रुटियाँ पाठक को पुस्तक पढ़ने से विरक्त करती हैं। विश्वकोश आदि में तो ये गलतियाँ अक्षम्य हैं।

पुस्तक के प्रकाशन स्तर के साथ-साथ प्रकाशन संबंधी दूसरी जानकारियों से भी पाठक को अवगत कराना चाहिए। इसके अन्तर्गत लेखक का परिचय, अगर अनूदित पुस्तक हो तो अनुवादक का नाम, प्रकाशक का नाम और पता, प्रकाशन वर्ष, पुस्तक का आकार, पृष्ठ संख्या का प्रमाणिक ब्योरा देना चाहिए। ये विवरण पादटिप्पणी में दिया जाना चाहिए। समीक्षा लेखन में दोनों ही विधियों का चलन है। उदाहरण के लिए-

1. पहली विधि–पाद टिप्पणी

(1) परिशिष्ट, लेखक–गिरिराज किशोर, प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1984, पृ.सं. 308, सजिल्द मूल्य 50.00 रुपये।

2. दूसरी विधि

पुस्तक की प्रकाशन संबंधी सूचना कहाँ दी जाए, यह उतना महत्वपूर्ण सवाल नहीं है। यह पत्र-पत्रिका में स्थान और उसके गेटअप आदि पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ तथ्यात्मक और प्रमाणिक हों। विशेषकर, इसका महत्व शोधार्थियों के लिए अधिक है। अगर प्रकाशन संबंधी सूचना में भूल रह गई और शोधार्थी ने अपने शोध में शामिल कर लिया, तो उसका शोध ग्रन्थ त्रुटिपूर्ण हो जाएगा। समीक्षक को इसका ख़याल रखना चाहिए।

नरवानर : शरणकुमार लिंबाले

अनुवाद : निशिकांत ठाकुर, प्रकाशक–राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003, पृष्ठ 172, मूल्य 150 रुपये।

---

11 फिल्म समीक्षा क्या है? उसका महत्व सिद्ध करते हुए 'शतरंज के खिलाड़ी' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–फिल्म समीक्षा एक प्रकार की आलोचना है जो किसी फिल्म का मूल्यांकन करती है, जिसमें कथानक, विषय, निर्देशन, पटकथा और अभिनय जैसे विभिन्न पहलू शामिल होते हैं। सिनेमा के आगमन के साथ 20वीं सदी की शुरुआत में शुरू हुई फिल्म समीक्षा अखबारों में महज राय के टुकड़े से पत्रकारिता लेखन के एक महत्वपूर्ण रूप में विकसित हुई है। फिल्म समीक्षा का प्राथमिक उद्देश्य पाठक को फिल्म के बारे में सूचित करना और इसके विभिन्न तत्वों के बारे में एक सूचित राय देना है। यह दर्शकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जिससे उन्हें यह तय करने में मदद मिलती है कि फिल्म उनके समय और पैसे के लायक है या नहीं।

फिल्म समीक्षा का महत्व–फिल्म समीक्षा एक महत्वपूर्ण शैली है, जो फिल्मों की गुणवत्ता, कला और सामाजिक परिवर्तन को आकस्मिक ढंग से प्रभावित करती है। फिल्म समीक्षा के जरिए, लोग फिल्म देखने के अलावा उसे समझने का भी प्रयास करते हैं और उसमें समाज के विभिन्न मुद्दों के बारे में विचार करते हैं।

फिल्म समीक्षा का महत्व उन लोगों के लिए भी होता है, जो फिल्म उत्पादन और फिल्म उद्योग के अंतर्गत काम करते हैं। फिल्म समीक्षा उन्हें उनके काम के बारे में फीडबैक देती है जो उन्हें अपनी फिल्मों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है।

इसके अलावा, फिल्म समीक्षा उन लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो फिल्मों के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें अधिक ज्ञान नहीं है। फिल्म समीक्षाएं उन्हें फिल्मों के बारे में सही जानकारी देती हैं और उन्हें अपनी पसंद के अनुसार फिल्मों का चयन करने में मदद करती हैं।

'शतरंज के खिलाड़ी' फिल्म की समीक्षा–'शतरंज के खिलाड़ी' 1977 में बनी हिन्दी भाषा की फिल्म है। इसी नाम से मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी पर आधारित इस फिल्म के निर्देशक थे प्रसिद्ध बांग्ला फिल्मकार

सत्यजीत राय। इसकी कहानी 1856 के अवध नवाब वाजिद अली शाह के दो अमीरों के इर्द-गिर्द घूमती है। ये दोनों खिलाड़ी शतरंज खेलने में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें अपने शासन तथा परिवार की भी फिक्र नहीं रहती इसी की पृष्ठभूमि में अंग्रेज़ों की सेना अवध पर चढ़ाई करती है। फिल्म का अंत अंग्रेज़ों के अवध पर अधिपत्य के बाद के एक दृश्य से होता है जिसमें दोनों खिलाड़ी शतरंज का खेल अपने पुराने देशी अंदाज की बजाय अंग्रेज़ी शैली में खेलने लगते हैं जिसमें राजा एक दूसरे के आमने सामने नहीं होते।

निर्देशक ने उस वक्त के उत्तरदायी व्यक्तियों के उदासीन और विलासी होना दोनों खिलाड़ियों के माध्यम से ही दिखाया है। दोनों ही जागीरदारों के बीच के संवाद तात्कालीन राजनीतिक स्थिति से अवगत कराते हैं। दोनों ही जागीरदारों के बीच के संवादों में अच्छा व्यंग्य है। फिल्म के संवाद अंग्रेजी में खुद सत्यजीत राय ने और उर्दू में शमा जैदी और जावेद सिद्दीकी ने लिखे हैं। जागीरदार और उनके मुंशी के बीच होने वाले संवाद को निहायत ही खूबसूरती से पिरोया गया है जो तात्कालीन अवस्था को ज्यों का त्यों बयान करता है। मुंशी, अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी वज़ह के शतरंज के बीच के अन्तर को समझाते हुए कहता है–"प्यादा" पहली चाल में दो घर चल सकता है और मुखालिफ सिरे पर पहुँच जाए तो "मलिका" बन जाता है।

बादशाह की राज्य के प्रति उदासीनाता और कला के प्रति प्रेम एक संवाद से ही जाहिर है कि "सिर्फ शायरी और मोसिकी ही मर्द की आँखों में आंसू ला सकते हैं।" अंग्रेजी के संवाद कुछ जगहों पर लंबे समय तक हैं जो हिंदी भाषी दर्शकों को थोड़ा बेचैन कर सकते हैं।

'शतरंज के खिलाड़ी' जिसे उपशीर्षक भी दिया गया और बाद में अनुवादित शीर्षक 'द चेस प्लेयर्स' के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रिलीज़ किया गया, 1977 में सत्यजीत राय द्वारा लिखित और निर्देशित एक भारतीय फिल्म है, जो मुंशी प्रेमचंद की इसी नाम की लघु कहानी पर आधारित है। इस फिल्म में अमजद खान ने अवध के नवाब वाजिद अली शाह की भूमिका निभाई है और रिचर्ड एटनबरो ने जनरल जेम्स आउट्रम की भूमिका निभाई है। मुख्य कलाकारों में शतरंज खिलाड़ी के रूप में अभिनेता संजीव कुमार और सईद जाफरी शामिल हैं। इसमें शबाना आजमी, फारूक शेख, फरीदा जलाल, डेविड अब्राहम और टॉम ऑल्टर भी हैं। इसमें कथावाचक के रूप में अमिताभ बच्चन हैं। यह 51वें अकादमी पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म के लिए भारत की प्रविष्टि थी, लेकिन इसे नामांकन नहीं मिला। यह फिल्म निर्माता सत्यजीत राय की एकमात्र पूर्ण लंबाई वाली हिंदी फीचर फिल्म है।

फिल्म का संगीत सत्यजीत राय ने ही दिया है। फिल्म में संगीत के नाम पर एक ठुमरी है–"कान्हा मैं तोसे हारी" जो न सिर्फ कर्णप्रिय है बल्कि दर्शनीय भी है। जिसे बिरजू महाराज ने स्वयं गाया भी है और नृत्य निर्देशित भी किया है। फिल्म का कला निर्देशन और वेशभूषा काफी सटीक है और ये दर्शक को 1856 में ले जाने में सफल होते हैं। सिनेमेटोग्राफर सौमेंदु राय ने अच्छा काम किया है और लखनऊ की गलियों और महलों को बखूबी फिल्माया है। दुलाल दत्ता द्वारा की गई एडिटिंग विशेष ध्यान देने योग्य है। छोटे-छोटे दृश्यों को बड़ी खूबी से बीच-बीच में डाला गया है। फिल्म में किसी भी नाटकीय पार्श्व संगीत के लिए कोई जगह नहीं है।

फिल्म के सभी कलाकारों संजीव कुमार, सईद जाफरी, रिचर्ड एटनबरो, शबाना आज़मी तथा अन्य सभी ने अच्छा अभिनय किया है लेकिन जिन दो लोगों के अभिनय की बात करनी चाहिए वे हैं–अमज़द खान एवं विक्टर बनर्जी। अमजद खान ने खुद को पात्र में ढालने के लिए अपने हाव-भाव का बेहद उम्दा इस्तेमाल किया है। वहीं वे जोर से बोलते हुए कभी-कभी अमजद खान ही लगते हैं, विक्टर बनर्जी ने अपनी छोटी सी भूमिका में जान डाली है विशेषत: अपनी संवाद अदायगी में, मुख्यत: बंगाली भाषी होने के बावजूद वे जिस ढंग से उर्दू का उच्चारण करते है वो प्रशंसनीय है। फ़िल्म को तीन फिल्मफेयर अवार्ड मिले थे जिसमें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार भी शामिल था और फिल्म के सूत्रधार की आवाज़ अमिताभ बच्चन की है।

□

12 'रजनीगंधा' फिल्म की समीक्षा करते हुए उसके कला-सौन्दर्य की विवेचना कीजिए।

उत्तर—'रजनीगंधा' बासु चटर्जी द्वारा निर्देशित 1974 में बनी हिन्दी भाषा की फिल्म है। यह प्रसिद्ध हिंदी लेखिका मन्नू भंडारी की लघु कहानी 'यही सच है' (1966) तीसरे कहानी संग्रह पर आधारित है। फिल्म में अमोल पालेकर, विद्या सिन्हा और दिनेश ठाकुर मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म में घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से मुक्त दो पुरुषों (संजय और निशीथ) के प्रेम में डूबी हुई स्त्री मन की आंतरिक ऊहापोह को अभिव्यक्त करती यह कहानी स्त्री मनोविज्ञान को पहली बार बारीकी से सामने लाती है। इस फिल्म में एक उलझी हुई स्त्री की मानसिकता को दर्शाया गया है जो सच क्या है इसमें उलझी रहती है। इस फिल्म और कहानी की नायिका दीपा हैं। इसकी कहानी कानपुर से कोलकाता और कोलकाता से कानपुर में जाकर ही समाप्त हो जाती है।

देखा जाए तो 70 के दशक में हिंदी सिनेमा वापस मध्यम वर्ग की तरफ लौटा था और ये लौटना वाकई सुखद रहा था। 'रजनीगंधा' इसी दौर की शानदार और अविस्मरणीय फिल्म थी। मसाला फिल्मों से अलग एक सीधी-सादी मध्यवर्गीय लड़की की प्रेम कहानी इतनी शानदार थी कि हर तरफ सराहा गया। मन्नू भंडारी जैसी साहित्यकार की कहानी 'यही सच है' पर आधारित पटकथा को बासु चटर्जी ने जैसे सोना बना दिया। कहानी लाजवाब थी और उसे उसी शानदार तरीके से फिल्म में पिरोया गया कि कहीं कुछ सुधार की गुंजाइश नहीं लगती।

फिल्म का कला सौन्दर्य—कलाकारों की बात करें तो विद्या सिन्हा की ये पहली फिल्म थी और अमोल पालेकर की पहली हिंदी फिल्म। लेकिन कहीं से भी इनका नयापन इनके किरदारों से झलका नहीं। बासु चटर्जी की तारीफ करनी पड़ेगी कि मध्यमवर्गीय प्रेमिका के मन में ही सारे द्वंद्व चला दिए। अमोल पालेकर की बात करें तो वो करियर के लिए फोकस्ड और प्रलोभन से दूर वफादारी वाले प्रेम पर विश्वास करने वाले युवक की भूमिका सहज तरीके से निभा गए। गानों की बात करें तो इस फिल्म के गाने इतने मधुर हैं कि आज भी प्यार में पड़े लोग गुनगुनाते हैं। मुकेश का गाया गाना कई बार "यूं ही सोचा है...." गजब का है। "रजनीगंधा फूल तुम्हारे......" बहुत ही प्यारा और शानदार बन पड़ा है। ध्यान रहे कि फिल्म बनने के बाद इसे कोई डिस्ट्रीब्यूटर नहीं मिल रहा था। छह महीनों तक फिल्म डिब्बे में पड़ी रही फिर बड़जात्या फिल्मस् के ताराचंद बड़जात्या ने फिल्म को खरीद कर रिलीज किया। इसके बाद फिल्म ने न केवल सिल्वर जुबली मनाई बल्कि इसे कई अवार्ड भी मिले।

भावनात्मक कहानी को पर्दे पर अच्छे से बताया गया है और कोई बोरियत नहीं है। तीनों मुख्य कलाकार–दीपा के रूप में विद्या सिन्हा, बहिर्मुखी संजय के रूप में अमोल पालेकर और अंतर्मुखी नवीन के रूप में दिनेश ठाकुर ने सराहनीय प्रदर्शन किया है। तकनीकी रूप से फिल्म सरल है और मध्यवर्गीय लोगों की इस भावनात्मक कहानी की पहली शर्त सादगी ही थी। अतः स्वीकार्य है। म्यूजिक फिल्म का एक बहुत बड़ा सकारात्मक बिन्दु है। इसमें केवल दो गाने हैं, जो योगेश द्वारा लिखित और सलिल चौधरी द्वारा संगीतबद्ध हैं, लेकिन उन्हें आसानी से बॉलीवुड के 100 सर्वश्रेष्ठ गीतों में गिना जा सकता है–1. रजनीगंधा फूल तुम्हारे महके यूं ही जीवन में, यूं ही महके प्रीत पिया की मेरे अनुरागी मन में (लता द्वारा गाया गया), 2. कई बार यूं भी देखा है, ये जो मन की सीमा रेखा है, मन तोड़ने लगता है (मुकेश द्वारा गाया गया)। गीतों में उच्च काव्यात्मक गुणवत्ता है और दोनों की संगीत रचना उत्कृष्ट है। कुल मिलाकर, रजनीगंधा एक बहुत अच्छी भावनात्मक घड़ी है।

□

13 'हिन्दी मीडियम' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–भारत में अंग्रेजी और अंग्रेजी माध्यम के प्रति अंधे रुझान को फिल्म 'हिंदी मीडियम' में दर्शाया गया है। इस देश में टूटी-फूटी हिंदी बोलना शान की बात मानी जाती है और कोई गलत अंग्रेजी बोला तो उसकी बौद्धिक क्षमता पर सवाल उठा दिए जाते हैं। सरकारी स्कूल में हिंदी माध्यम में पढ़े-लिखे माता-पिता भी पूरी कोशिश करते हैं कि उनकी संतान महंगे स्कूल और अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई करे। कई माता-पिताओं का सीना तो उस समय गर्व से चौड़ा हो जाता है जब उनकी संतान मेहमानों के सामने अंग्रेजी कविता सुना देती है।

दिल्ली में रहने वाले एक अच्छे खाते-पीते परिवार की कहानी के जरिये लेखक और निर्देशक साकेत चौधरी ने दिखाया है कि 'अंग्रेजी' बोलने वालों को 'क्लासी' माना जाता है और हिंदी बोलने वालों को दोयम दर्जा दिया जाता है। मीता (सबा कमर) और उसका पति राज बत्रा (इरफान खान) दिल्ली में चांदनी चौक में रहते हैं। राज की कपड़ों की बड़ी दुकान है। बीएमडब्ल्यू में घूमता है। सब कुछ होने के बावजूद मीता इसलिए परेशान रहती है कि उसके पति की अंग्रेजी अच्छी नहीं है। इस कारण वो 'क्लास' लोगों में उठने-बैठने में असहज महसूस करती है।

राज और मीता की बेटी पिया अब स्कूल जाने लायक हो गई है। मीता चाहती है कि उसकी बेटी दिल्ली के टॉप पाँच स्कूलों में से किसी एक में दाखिला ले। स्कूल में इंटरव्यू के पहले पिया के साथ-साथ राज और मीता की भी ट्रेनिंग होती है क्योंकि माता-पिता से भी सवाल पूछे जाते हैं। चार स्कूलों में पिया का एडमिशन नहीं हो पाता। आखिर में एक स्कूल बचता है, जहाँ एडमिशन फॉर्म के लिए ही रात में लोग लाइन में लग जाते हैं। इस स्कूल में सिफारिश भी नहीं चलती।

राज को पता चलता है कि राइट टू एज्युकेशन के तहत गरीब बच्चों के लिए कुछ सीटें आरक्षित है। वह गरीब होने के कागजात जुटा लेता है। जब पता चलता है कि स्कूल वाले घर देखने आएंगे तो वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ एक गरीब बस्ती में शिफ्ट हो जाता है। इसके बाद कई हास्यास्पद परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं। अमीर-गरीब लोगों के व्यवहार में अंतर को वह और उसकी पत्नी करीब से महसूस करते हैं।

फिल्म इस बात को बारीकी से उठाती है कि अंग्रेजी माध्यम और महंगे स्कूलों की होड़ में माता-पिता बिना सोचे-समझे शामिल हो जाते हैं, मानो इन स्कूलों में दाखिला होते ही उनके बच्चे बड़े आदमी बन जाएंगे। वे इसके लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। यह स्टेटस सिंबल का भी प्रतीक होता है। साथ ही अंग्रेजी न आने पर हीन भावना से ग्रसित होने की मनोदशा को भी फिल्म में व्यंग्यात्मक तरीके से दर्शाया गया है।

स्क्रिप्ट में इस बात का ध्यान रखा गया है कि संदेश के साथ-साथ मनोरंजन भी हो। पहले हाफ में कई मनोरंजक दृश्य फिल्म में नजर आते हैं। संवाद भी गुदगुदाते हैं। दूसरे हाफ में फिल्म थोड़ा गंभीर होती है क्योंकि यह विषय की मांग भी थी। क्लाइमैक्स ठीक है और इससे बेहतर कुछ हो भी नहीं सकता था।

अंग्रेजी और अंग्रेजी माध्यम के प्रति पैरेंट्स के मोह को दिखाया गया है, शिक्षण व्यवस्था के व्यावसायिक होने पर भी फिल्म सवाल उठाती है, लेकिन ये सारी बातें सभी जानते हैं। न चाहते हुए भी लोगों की अंग्रेजी सीखना और अंग्रेजी माध्यम में पढ़ना मजबूरी है क्योंकि अधिकांश अच्छी नौकरियां आपके अंग्रेजी ज्ञान के आधार पर ही मिलती है। अच्छा होता यदि फिल्म इस बात को भी दिखाती कि क्यों अंग्रेजी को भारत में इतना महत्व दिया जाता है? क्यों अंग्रेजी बोलने वाले को ज्यादा विद्वान माना जाता है?

साकेत चौधरी का निर्देशन अच्छा है। उन्होंने कलाकारों से बेहतरीन अभिनय करवाया है और अपने प्रस्तुतीकरण के जरिये अच्छा माहौल बनाया है। फिल्म को मनोरंजक बनाते हुए उपदेशात्मक होने से बचाया है। अच्छा होता यदि फिल्म के अंत में दिखाए गए टाइटल हिंदी में होते।

फिल्म बेहतरीन कलाकारों से सजी हुई है। इरफान खान कितने बेहतरीन अभिनेता हैं यह बताने की जरूरत नहीं है। उन्होंने अपने अभिनय से दर्शकों को हँसाया है। पति पर प्रभुत्व जमाने वाली और अपनी बेटी को किसी

अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाने वाली मां के रूप में सबा कमर का अभिनय कहीं भी इरफान से कम नहीं है। अपनी बॉडी लैंग्वेज का उन्होंने खूब उपयोग किया है। गरीब आदमी कैसा होता है यह बताने में दीपक डोब्रियाल ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। इंटरवल के बाद वे आते हैं और छा जाते हैं। अमृता सिंह का रोल ठीक से लिखा नहीं गया है। संजय सूरी, नेहा धूपिया, राजेश शर्मा छोटे-छोटे रोल में प्रभावित करते हैं।

अमितोष नागपाल के संवाद बेहतरीन हैं। 'ये ताजा-ताजा गरीब बना है', 'हम तो खानदानी गरीब हैं', जैसे कई संवाद दाद देने लायक हैं।

'हिंदी मीडियम' अंग्रेजी बोलने वालों और न बोलने वाले के बीच के अंतर और शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है। अच्छा होता यदि विषय की और गहराई में जाया जाता। बावजूद इसके यह फिल्म एक बार देखने लायक है।

- **बैनर**–टी-सीरिज़ सुपर कैसेट्स इंडस्ट्री लि., मैडॉक फिल्म्स
- **निर्माता**–भूषण कुमार, दिनेश विजन, कृष्ण कुमार
- **निर्देशक**–साकेत चौधरी
- **संगीत**–सचिन जिगर
- **कलाकार**–इरफान, सबा कमर, दीपक डोब्रियाल, अमृता सिंह, संजय सूरी, नेहा धूपिया, दीक्षिता सहगल
- **सेंसर सर्टिफिकेट**–'यू' अवधि–2 घंटे 13 मिनट 26 सेकंड
- **रेटिंग**–3/5

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भाषायी दक्षता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– भाषायी दक्षता से तात्पर्य संचार उद्देश्यों के लिए किसी भाषा को प्रभावी ढंग से समझने और उसका उपयोग करने की क्षमता से है।

2. भाषायी दक्षता किसे कहते हैं?

उत्तर– किसी भी भाषा को बोलने, समझने, लिखने, पढ़ने में प्रवीणता प्राप्त करना अथवा किसी भी भाषा को बोलने, समझने, लिखने, पढ़ने की शक्ति का विकास करना ही भाषायी दक्षता कहलाता है।

3. 'भाषायी कौशल' का क्या अर्थ है?

उत्तर– भाषायी कौशलों का अर्थ है–भाषा की सम्पूर्ण व्यवस्था की जानकारी एवं उनके प्रयोग की कुशलता का विकास।

4. **भाषा दक्षता के मुख्य कौशल कौन-कौनसे हैं?**

उत्तर–भाषा दक्षता के चार मुख्य कौशल क्रमिक रूप से सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना हैं।

5. **आधुनिक भाषाविज्ञान का जनक किसे माना जाता है?**

उत्तर–नोम चॉम्स्की और सस्यूर को।

6. **नोम चॉम्स्की भाषायी दक्षता किसे कहते हैं?**

उत्तर–चॉमस्की का मानना था कि बच्चे में जन्म से ही परिवर्तनकारी व्याकरण में निपुणता प्राप्त करने की क्षमता विकसित हो जाती है और इस जन्मजात भाषायी क्षमता को वे भाषायी दक्षता कहते हैं।

7. **भाषायी दक्षता शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?**

उत्तर–नोम चॉमस्की ने।

8. **आधुनिक भाषाविद् नोम चॉम्स्की ने किस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है?**

उत्तर–भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में।

9. **भाषायी दक्षता के विकास के मनोवैज्ञानिक घटक कौन-कौनसे हैं?**

उत्तर–1. जिज्ञासा, 2. अनुकरण और 3.अभ्यास।

10. **भाषायी दक्षता के दो कारकों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर–भाषायी दक्षता के कारक हैं-

1. बालक भाषा अर्जित करने की सहजशक्ति लेकर जन्म लेता है।
2. भाषा सीखने के लिए उसके मस्तिष्क में सारी व्यवस्थाएँ प्राकृतिक रूप से होती हैं।

11. **भाषा शिक्षण का क्या अर्थ है?**

उत्तर–भाषा शिक्षण का अर्थ है–बच्चों को भाषायी कौशलों–सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में दक्ष करना। अध्येता में लक्ष्य भाषा की दक्षता उत्पन्न करना एवं उसमें उस भाषा विशेष के व्यवहार की योग्यता पैदा करना।

12. **बालक स्वाभाविक रूप से मातृभाषा को किससे सीखता है?**

उत्तर–अनुकरण से।

13. **'श्रवण' से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर–'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका अर्थ निकालने, सुनी हुई बातों पर चिंतन-मनन करने और अर्थ की प्रतिक्रिया देने से है।

14. **श्रवण कौशल की सफलता के लिए किसकी आवश्यकता है?**

उत्तर–मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना।

15. **बोलने की सार्थकता किस पर निर्भर करती है?**

उत्तर–शुद्ध उच्चारण पर।

16. **शुद्ध उच्चारण किसे कहते हैं?**

उत्तर–सर्वमान्य उच्चारण ही शुद्ध उच्चारण कहलाता है।

17. **उच्चारण में किन-किनका समावेश रहता है?**

उत्तर–उच्चारण में भाषा की ध्वनियों, सुर, बल, निवृत्ति, लोप, आगम, लय, अनुतान का समावेश रहता है।

18. **'पठन' किसे कहा जाता है?**

उत्तर–लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना या पठन कहा जाता है। जैसे–पम्फलेट पढ़ना, समाचार-पत्र पढ़ना तथा पुस्तकें पढ़ना।

19. **भाषा शिक्षण के संदर्भ मे पढ़ने क्या अर्थ होता है?**

उत्तर–भाषा शिक्षण के संदर्भ मे पढ़ने अर्थ होता है–किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़कर समझना।

20. 'पठन' के आवश्यक तत्व कौनसे हैं?

उत्तर–अर्थ बोध तथा भाव की प्रतीति पढ़ने के जरूरी तत्व होते हैं।

21. श्रवण-भाषण-व्यवहार प्रमुखतः किन क्रियाओं पर आधारित है?

उत्तर–श्रवण-भाषण-व्यवहार प्रमुखतः दो क्रियाओं पर आधारित है–(1) किसी के बोलने की क्रिया (2) दूसरे के सुनने की क्रिया।

22. भाषा-प्रयोग में कितनी क्रियाएँ सम्मिलित हैं?

उत्तर–भाषा-प्रयोग में चार क्रियाएँ (दक्षताएँ) सम्मिलित हैं–भाषा को सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना।

23. श्रवण कौशल के दो उद्देश्य लिखिए।

उत्तर–भाषायी दक्षता प्राप्त करने के लिए श्रवण कौशल के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव है-

1. सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।

24. 'वाचन' और 'पठन' में क्या अन्तर है?

उत्तर–पठन मौन रहकर केवल आँखों से भी किया जा सकता है और वाचन का अर्थ है–जोर-शारे से पढ़ना, जिसका आनंद श्रोता भी ले सकें।

25. सस्वर वाचन किसे कहते हैं?

उत्तर–स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर वाचन के द्वारा ही कराई जाती है। यह वाचन की प्रारंभिक अवस्था होती है।

26. मौन वाचन किसे कहते हैं?

उत्तर–लिपिबद्ध भाषा अर्थात् लिखित सामग्री को बिना ध्वनि किए, मन ही मन में पढ़ने और साथ-साथ अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहते हैं।

27. वाचन कौशल का महत्व/उद्देश्य बताइए।

उत्तर–ज्ञानप्राप्त करना और आनंद व मनोरंजन।

28. वाचन-दक्षता का क्या अर्थ है?

उत्तर–वाचन-दक्षता का अर्थ है–शब्द भंडार की वृद्धि तथा वाचन की गति में वृद्धि करना।

29. वाचन-दक्षता के विकास का प्रमुख साधन क्या है?

उत्तर–शब्द भंडार।

30. द्रुतवाचन का क्या अर्थ है?

उत्तर–द्रुतवाचन का अर्थ है–अधिक गति के साथ वाचन करते हुए विषयवस्तु को समझ सकना।

31. क्रिया के आधार पर पठन के कितने प्रकार होते हैं?

उत्तर–क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार होते हैं–(1) मौखिक पठन या सस्वर वाचन (2) मौन पठन।

32. पठन कौशल के दो उद्देश्य लिखिए।

उत्तर–पठन कौशल के उद्देश्य हैं–

(1) छात्रों को शुद्धोच्चारण करने में योग्य बनाना।

(2) छात्रों को उचित लय, स्वर, यति से पठन की योग्यता प्रदान करना।

33. कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर–कक्षा शिक्षण की दृष्टि से पठन के तीन प्रकार होते हैं–(1) आदर्श पठन, (2) अनुपठन, (3) अनुकरण पठन।

34. आदर्श पठन किसे कहते हैं?

उत्तर–शिक्षक छात्रों के समक्ष जो आदर्श पाठ प्रस्तुत करता है, वह आदर्श पठन कहलाता है।

35. अनुकरण पठन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से शिक्षक के आदर्श पठन का अनुकरण करके किए गए पठन को अनुकरण पठन कहते हैं।

36. मौन पठन के दो उद्देश्य लिखिए।

उत्तर–मौन पठन के उद्देश्य हैं–

1. छात्रों को पाठ्यवस्तु को शीघ्रता से पढ़ने के सुयोग्य बनाना।
2. पठित अंश में निहित भावों एवं विचारों को आत्मसात् करने की योग्यता प्रदान करना।

37. लेखन कौशल से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–लेखन-कौशल का अर्थ है–भाषा-विशेष में स्वीकृत लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता।

38. लेखन-कौशल की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर–लिपि-प्रतीकों की रचना की योग्यता।

39. मातृभाषा शिक्षण का विशिष्ट उद्देश्य क्या है?

उत्तर–अभ्यास-जनित कुशलता उत्पन्न करना।

40. लेखन कौशल का महत्व बताइए।

उत्तर–विचारों का आदान-प्रदान और ज्ञान क्षेत्र का विस्तार।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भाषा किसे कहते हैं?

उत्तर–हम जिस माध्यम से बोलकर या लिखकर विचार प्रकट करते हैं, उसे भाषा कहते हैं।

2. भाषा की परिभाषा दीजिए।

उत्तर–भाषा, उच्चारण अवयवों से उच्चरित, यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

3. भाषा के स्वरूप/प्रकृति को किन सूत्रों में निबद्ध किया जा सकता है?

उत्तर–भाषा के स्वरूप/प्रकृति को निम्नलिखित सूत्रों में निबद्ध किया जा सकता है-

(क) भाषा उच्चरित ध्वनि संकेतों की व्यवस्था है।

(ख) ध्वनि संकेत यादृच्छिक होते हैं।

(ग) भाषा एक व्यवस्था है।

(घ) भाषा संप्रेषण का सहज माध्यम है।

4. **भाषा की दो प्रमुख विशेषताएं लिखिए।**

उत्तर–भाषा सामाजिक वस्तु है तथा भाषा अर्जित वस्तु है।

5. **मनुष्य अपने भाव या विचार कितने प्रकार से प्रकट करता है?**

उत्तर–मनुष्य अपने भाव या विचार तीन प्रकार से प्रकट करता है–1. बोलकर, 2. लिखकर और 3. संकेतों के द्वारा।

6. **भाषा के मौखिक रूप से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर–जब वक्ता बोलकर अपने विचारों को व्यक्त करता है और श्रोता उसे कानों से सुनकर समझता है तो भाषा का यह रूप मौखिक कहलाता है। जैसे–भाषण देना, वार्तालाप के द्वारा विचार प्रकट करना।

7. **भाषा के लिखित रूप का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर–विचारों और भावों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। जैसे–पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख द्वारा विचार प्रकट करना आदि लिखित भाषा के अन्तर्गत आते हैं।

8. **भाषा कहने से कितने तत्वों का बोध होता है?**

उत्तर–भाषा कहने से साधारणतः चार तत्वों का बोध होता है–ध्वनि, शब्द (पद), वाक्य और अर्थ।

9. **भाषिक संरचना क्या है?**

उत्तर–भाषा की बुनियादी संरचना में ध्वनिविज्ञान (ध्वनियाँ), आकृति विज्ञान (शब्द निर्माण), वाक्यविन्यास (वाक्य संरचना), शब्दार्थ विज्ञान (अर्थ), और व्यावहारिक विज्ञान (संदर्भगत उपयोग) शामिल हैं।

10. **भाषा संरचना के स्तर कौन-कौनसे हैं?**

उत्तर–भाषा संरचना के धरातल पर शब्द, पदबंध, उपवाक्य और वाक्य (पदक्रम, अन्वय) भाषा-संरचना के स्तर हैं।

11. **भाषा की संरचनात्मक विशेषताएँ क्या हैं?**

उत्तर–भाषा की संरचना के पाँच प्रमुख घटक हैं–ध्वनि, रूपिम, शब्दिम, वाक्यविन्यास और संदर्भ। ये सभी घटक मिलकर व्यक्तियों के बीच सार्थक संचार बनाने का काम करते हैं।

12. **वर्ण किसे कहते हैं?**

उत्तर–वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्ण उस ध्वनि को कहते हैं जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते। जैसे–अ, क् च् ट् त् प् आदि। दूसरे शब्दों में 'मौखिक ध्वनियों' को व्यक्त करने वाले चिह्न 'वर्ण' कहलाते हैं।

13. **शब्द किसे कहते हैं?**

उत्तर–वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं, जैसे–क्+अ+म्+अ+ल्+अ = कमल, क्+अ+ल्+अ+म्+अ = कलम।

14. **पद किसे कहते हैं?**

उत्तर–जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो उसी शब्द को 'पद' कहते हैं। जैसे–कमल कलम से लिखता है। अब इस वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'कमल' और 'कलम' शब्द 'पद' कहलाएंगे।

15. **वाक्य को परिभाषित कीजिए।**

उत्तर–सार्थक शब्दों का वह क्रमबद्ध समूह जिसका कोई अर्थ निकलता है, उसे वाक्य कहते हैं, जैसे–'राम विद्यालय जा रहा है।'

16. **भाषायी समझ के आधार तत्व कौन-कौनसे हैं?**

उत्तर–मूर्त अनुभव, ठोस अनुभूतियाँ, अमूर्त संकल्पनाएँ तथा सामान्यीकृत संकल्पनाएँ।

17. **भाषाविदों का उद्देश्य क्या है?**
उत्तर–संरचना निर्माण की प्रक्रिया को जानना और उनका वर्णन करना।
18. **भाषा-स्वनों की अनुभूति किसके माध्यम से होती है?**
उत्तर–कान व ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से।
19. **भाषा के कितने पक्ष होते हैं?**
उत्तर–भाषा के दो पक्ष हैं–अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष।
20. **व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में किसका विशेष महत्व होता है?**
उत्तर–उद्दीपन-प्रतिक्रिया-पुनर्बलन का।
21. **बच्चों की भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास रखने वाले भाषाविद् कौन हैं?**
उत्तर–नोम चॉम्स्की।
22. **चॉम्स्की 'लघु व्याकरण' किसे कहते हैं?**
उत्तर–बच्चा अपने परिवेश में जो भाषा और जिस तरह की भाषा सुनता है उसे अपनी भाषिक क्षमता के सहारे विश्लेषित करता है। समाज से प्राप्त भाषिक आँकड़ों के आधार पर अपने कुछ नियम बनाता है, जिसे चॉम्स्की 'लघु व्याकरण' कहते हैं।
23. **भाषा दक्षता का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।**
उत्तर–भाषा दक्षता किसी भाषा प्रयोक्ता की वह मानसिक क्षमता है, जिसके आधार पर वह वाक्यों को सुनता, समझता एवं अभिव्यक्त करता है या कर सकता है।
24. **भाषा व्यवहार से क्या तात्पर्य है?**
उत्तर–किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में किया जाने वाला भाषा का वास्तविक व्यवहार भाषा व्यवहार है। इसमें व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला शब्द चयन, वाक्य रचना, प्रयोग, वाचन, शैली आदि सभी आ जाते हैं।
25. **आधुनिक भाषा-विज्ञान के जनक सस्यूर ने भाषा-अध्ययन के किन दो आयामों की चर्चा की है?**
उत्तर–भाषा व्यवस्था और भाषा-व्यवहार।
26. **'भाषिक क्षमता' की संकल्पना क्या है?**
उत्तर–चॉम्स्की ने सस्यूर की भाषा-व्यवस्था के समानांतर जो संकल्पना प्रस्तुत की उसे आज 'भाषिक क्षमता' के नाम से जाना जाता है।
27. **भाषा व्यवस्था और भाषा-व्यवहार की संकल्पना के जनक कौन हैं?**
उत्तर–आधुनिक भाषा-विज्ञान के जनक सस्यूर।
28. **'भाषायी क्षमता' से आप क्या समझते हैं?**
उत्तर–'भाषिक क्षमता' व्यक्ति के चेतन एवं अवचेतन में स्थित वह भाषा-ज्ञान है, जिसके सहारे वह भाषा बोलता और समझता है। किसी भाषा की स्वनिक आकृति तथा अर्थ को निर्धारित करने वाली व्यवस्था को आत्मसात करना ही 'भाषायी क्षमता' है।
29. **'व्याकरण' क्या है?**
उत्तर–भाषा को व्यवस्थित करनेवाला शास्त्र 'व्याकरण' है।
30. **भाषा व्यवस्था और भाषा-व्यवहार में क्या अन्तर है?**
उत्तर–भाषा-व्यवस्था का सीधा-सम्बन्ध भाषा की संरचना से है, तो भाषा-व्यवहार का सम्बन्ध भाषा के संरचनात्मक स्वरूप के औचित्य से है।
31. **भाषा के विकास को प्रभावित करने वाले तत्व कौन-कौन से हैं?**
उत्तर–भाषा-विकास की क्षमता विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें आयु, लिंग, शिक्षा, और सामाजिक वर्ग प्रमुख हैं।

1. भाषा कौशल के मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो आपको अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानने, यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी भाषा क्षमताओं को बेहतर बनाने की योजना बनाने में मदद कर सकती है।

2. भाषा कौशल का मूल्यांकन करने का पहला कदम कौनसा है?

उत्तर–स्वयं का मूल्यांकन करना।

3. भाषा सीखने के किन क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन किया जाता है?

उत्तर–भाषा सीखने के चार प्रमुख क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का ईमानदारी से मूल्यांकन करना शामिल है–पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना।

4. अपने भाषा कौशल का मूल्यांकन करने की विधियाँ बताइए।

उत्तर–1. स्व-मूल्यांकन, 2. भाषा प्रवीणता परीक्षण, 3. भाषा विनिमय कार्यक्रम में भाग लेना तथा 4. भाषा पाठ्यक्रम अपनाना।

5. भाषायी दक्षता के सन्दर्भ में आकलन और मूल्यांकन में क्या अन्तर है?

उत्तर–आकलन को जहाँ एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया माना जाता है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा नहीं। वहीं मूल्यांकन को योगात्मक प्रक्रिया माना जाता है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात की जाती है।

6. आकलन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर–आकलन का उद्देश्य निदानात्मक होता है। अर्थात् शिक्षण अधिगम कार्यक्रम में सुधार करना, छात्रों व अध्यापकों को पृष्ठपोषण प्रदान करना तथा छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों को ज्ञात करना आदि।

7. भाषायी आकलन का उद्देश्य बताइए।

उत्तर–भाषायी दक्षता का मूल्य निर्धारित करना।

8. 'भाषायी कौशलों का आकलन' के अंतर्गत प्रमुख कौशल कौन-कौनसे हैं?

उत्तर–'भाषायी कौशलों का आकलन' के अंतर्गत चार प्रमुख कौशल हैं, जो निम्नलिखित हैं–1. श्रवण कौशल, 2. वाचन कौशल, 3. पठन कौशल तथा 4. लेखन कौशल।

9. विद्यालय में एक शिक्षक के द्वारा भाषा में आकलन एवं मूल्यांकन करने के लिए सामान्यतः किन तरीकों का प्रयोग किया जाता है?

उत्तर–विद्यालय में एक शिक्षक के द्वारा भाषा में आकलन एवं मूल्यांकन करने के लिए सामान्यतः दो तरीकों का प्रयोग किया जाता है–1.लिखित परीक्षा एवं 2. मौखिक परीक्षा।

10. नियोजन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–नियोजन से तात्पर्य उद्देश्यों का निर्धारण तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समुचित कार्यविधि को विकसित करने से है।

11. नियोजन प्रक्रिया का पहला चरण कौनसा है?

उत्तर–आवश्यकताओं का विश्लेषण करना।

12. शब्द-सामर्थ्य किसे कहा जाता है?

उत्तर–हिन्दी व्याकरण में किसी वाक्य के भाव को समझने के लिए प्रयुक्त अर्थ को शब्द-शक्ति कहा जाता है। शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति कहलाती है।

13. 'भाषा की आधुनिकता' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–'भाषा की आधुनिकता' से तात्पर्य है–शब्दावली में वृद्धि तथा नई शैली तथा अभिव्यक्तियों का विकास।

14. "भाषा की शक्ति अथवा सम्पत्ति रूपिमों और व्याकरणिमों में है।"–किसका कथन है?

उत्तर–बीसवीं शताब्दी के लब्धप्रतिष्ठ भाषाविद् ब्लूमफ़ील्ड का।

15. प्रयोग की दृष्टि से शब्दों को कितने वर्गों में बाँटा गया है?

उत्तर–प्रयोग की दृष्टि से शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है। (1) सामान्य शब्द (2) अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द (3) तकनीकी/पारिभाषिक शब्द।

16. सामान्य शब्दों की श्रेणी में किन शब्दों को रखा जाता है?

उत्तर–जिन शब्दों की सीमा नहीं बाँधी जाती और जिनका इस्तेमाल हम दिन-प्रतिदिन के सामान्य व्यवहार में करते हैं, उनको सामान्य शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है जैसे वस्तुओं, स्थानों और संबंधों आदि के वाचक शब्द।

17. अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–जिन शब्दों का इस्तेमाल सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने के अलावा किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में भी होता है उन्हें अर्द्ध-पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा जा सकता है। जैसे–आदेश, दावा, रस आदि अर्द्ध-पारिभाषिक शब्द हैं।

18. पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर–जिन शब्दों की निश्चित परिभाषा दी जा सकती है इसलिए इन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। जैसे–'आयकर'। इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा संस्था की आय पर सरकार द्वारा वसूल किए जाने वाले 'कर' के अर्थ में किया जाएगा। सरकार के अलावा अन्य संस्था द्वारा वसूल की जाने वाली राशि आयकर नहीं कहलाएगी।

19. पारिभाषिक शब्द का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–पारिभाषिक शब्द शास्त्रबद्ध शब्द होते है। सामान्य शब्द लोक व्यवहार द्वारा निर्धारित होते हैं, वहीं पारिभाषिक शब्द रसायन, भौतिक, राजनीति, विज्ञान आदि शास्त्रों में प्रयुक्त होते हैं।

20. तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षण बताइए।

उत्तर–तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षण हैं–1. अभिधार्थ प्रयोग, 2. अर्थ की सूक्ष्मता, 3. अर्थ की भेदकता 4. विषय सापेक्षता और 5. अर्थरूढ़िता।

21. प्रभावी श्रवण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–प्रभावी श्रवण कौशल में ध्यान, अशाब्दिक शारीरिक भाषा जैसे आँख से संपर्क और आवाज का लहजा, समझ को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न पूछना, तथा वक्ता ने जो कहा है उसका सारांश प्रस्तुत करने की क्षमता शामिल है।

22. प्रभावी सुनने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–प्रभावी श्रवण से तात्पर्य उस कौशल से है जिसमें श्रोता अपनी एकाग्रता और शारीरिक भाषा के प्रति सजग रहता है तथा वक्ता के संदेश को आसानी से संप्रेषित कर सकता है।

23. प्रभावी ढंग से सुनना क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर–प्रभावी श्रवण में श्रोता का वक्ता की ओर सचेत और केन्द्रित ध्यान शामिल होता है, ताकि संप्रेषण को अधिकतम किया जा सके और विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित किया जा सके।

24. श्रवण प्रक्रिया में कौन-कौनसी क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं ,

उत्तर–श्रवण एक प्रक्रिया है। इसमें निम्नलिखित पाँच क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं–1. अनुभूति या बोध, 2. निर्वचन (व्याख्या), 3. मूल्यांकन, 4. स्मरण, 5. अनुक्रिया या प्रतिक्रिया।

25. आदर्श श्रोता के मुख्य तत्व बताइए।

उत्तर–एक अच्छे श्रोता के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं–1. अनुकूल व्यवहार, 2. केन्द्रित करने की क्षमता, 3. प्रश्नोत्तर काल में सहभागिता, 4. सहायक शारीरिक मुद्रा।

26. प्रभावी श्रवण के क्या लाभ व उद्देश्य होते हैं?

उत्तर–प्रभावी श्रवणता के निम्न उद्देश्य व लाभ होते हैं–

1. प्रभावी श्रवण सम्पूर्ण श्रवण-क्षमता को बढ़ाता है।
2. प्रभावी श्रवण संगठन के प्रति जागरूकता की भावना को बढ़ाता है।

27. उच्चारण दोष के दो कारण लिखिए।

उत्तर–उच्चारण दोष के कारण हैं–1.शारीरिक कारण, 2. वर्णों के उच्चारण का अज्ञान, 3. स्थानीय प्रभाव, 4. प्रयत्नलाघव, 5. अक्षरों एवं मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान, 6. अति शीघ्रता, असावधानी से भी उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।

28. उच्चारण सम्बन्धी दोषों के निराकरण के दो उपाय लिखिए।

उत्तर–अशुद्ध उच्चारण के निराकरण के लिए निम्न उपाय किए जाने चाहिए–1. उच्चारण अंगों की चिकित्सा, 2. ध्वनि-यंत्रों का सम्यक ज्ञान कराना, 3. बल, विराम तथा सस्वर पाठ का अभ्यास, 4. स्वराघात पर बल।

29. प्रभावी भाषण के कारकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–शब्दों का स्पष्ट उच्चारण तथा अनुतान, बलाघात, लय और स्वर का सटीक प्रयोग ही भाषणकर्ता को लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाता है।

30. भाषायी दक्षता का क्या अर्थ है?

उत्तर–भाषायी दक्षता का अर्थ है–अपने भावों, विचारों और संवेदनाओं को सफलतापूर्वक एक-दूसरे तक पहुँचाने की योग्यता प्राप्त करना।

31. **एकालाप किसे कहते हैं?**

उत्तर-एक व्यक्ति अपने आप से ही आलाप करें अर्थात् वार्तालाप या बातचीत करे, उसे एकालाप कहते हैं। यह बातचीत वह सामान्यत: बोलकर नहीं करता अपितु बड़बड़ा कर या मौन रहकर भी करता है।

32. **एकालाप के भेद लिखिए।**

उत्तर-साहित्य में एकालाप के दो रूप देखने को मिलते हैं-1. स्थिर एकालाप और 2. गत्यात्मक एकालाप।

33. **स्थिर एकालाप से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर-स्थिर एकालाप में पात्र, वक्ता या संबोधक के विचार किसी एक ही बात स्थिति या घटना पर केंद्रित रहते हैं। व्यक्ति किसी एक उद्देश्य में ही सीमित और स्थिर रहता है।

34. **गत्यात्मक एकालाप का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर-गत्यात्मक एकालाप में वक्ता या पात्र के विचार स्थिर नहीं रहते हैं अपितु उनमें परिवर्तन होता रहता है। यहाँ पर वक्ता स्वयं से ही प्रश्न पूछता है और स्वयं ही उसके उत्तर देता है। प्रश्नोत्तर का यह क्रम ही संलाप को गति प्रदान करता है।

35. **वार्तालाप क्या है?**

उत्तर-वार्तालाप या बातचीत मनुष्य द्वारा समाज में परस्पर संपर्क क़ायम करने का एक बहुपक्षीय और स्वाभाविक माध्यम है। इससे मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता है।

36. **वार्तालाप में कितने पक्ष होते हैं?**

उत्तर-वार्तालाप में मुख्यत: दो पक्ष होते हैं-एक वक्ता और दूसरा श्रोता अथवा एक संबोधक और दूसरा संबोधित।

37. **पठन कौशल किसे कहा जाता है?**

उत्तर-लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कौशल कहा जाता है, जैसे-पुस्तकों को पढ़ना, समाचार पत्रों को पढ़ना आदि। भाव और विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से पढ़कर समझने को पठन कहा जाता है।

38. **पठन कौशल के महत्व को समझाइए।**

उत्तर-पठन कौशल के महत्व को इस प्रकार समझा जा सकता है-

(1) पठन, शिक्षा प्राप्ति में सहायक होता है।

(2) पठन-कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है, क्योंकि पाठ्यपुस्तक पढ़ने से ज्ञान का अर्जन होता है।

39. **लेखन का क्या महत्व है?**

उत्तर-लेखन हमारी सोच और सीख को दृश्यमान और स्थायी बनाता है। लेखन दूसरों और खुद को अपने विचारों को समझाने और परिष्कृत करने की हमारी क्षमता को बढ़ाता है। लेखन हमारे विचारों और यादों को सुरक्षित रखता है। लेखन हमें अपने जीवन को समझने की अनुमति देता है।

40. **सामान्य लेखन से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर-सामान्य लेखन से तात्पर्य लेखन के किसी भी ऐसे अंश से है जो लेखन के सामान्य विषयों पर केंद्रित होता है और सामान्य आलेख पाठक के मनोरंजन के लिए प्रकाशित किए जाते हैं।

41. **सामान्य लेखन की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर-सामान्य लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. सामान्य लेखन, लेखन के सामान्य विषयों पर केंद्रित होता है।
2. सामान्य लेखन का उद्देश्य मनोरंजन होता है।

42. **रचनात्मकता का क्या अर्थ है?**

उत्तर-रचनात्मकता का अर्थ है-सृजनात्मकता।

43. रचनात्मक लेखन की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–रचनात्मक लेखन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–1. आत्माभिव्यक्ति, 2. अनुभव का विस्तार, 3. भाव, बुद्धि और कल्पना का समन्वय।

44. रचनात्मक लेखन से क्या समझते हैं?

उत्तर–रचनात्मक लेखन वह कार्य है जिसमें लेखक विचारों, भावनाओं, अनुभवों, और कल्पनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है। इसमें शब्दों का उपयोग उत्कृष्ट ढंग से किया जाता है ताकि पाठकों को प्रभावित किया जा सके। रचनात्मक लेखन में कला, साहित्य, कविता, कहानी, नाटक, गद्य, उपन्यास आदि शामिल हो सकते हैं।

45. रचनात्मक लेखन के उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर–लेखन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं–प्रेरित करना, सूचित करना और मनोरंजन करना।

46. पद्य लेखन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–पद्य का अर्थ है छन्दोबद्ध रचना, जिसे सामान्य रूप से हम कविता कहते हैं।

47. गद्य के प्रमुख रूप कौन-कौनसे हैं?

उत्तर–गद्य के विविधतम रूपों में –नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, रिपोतार्ज, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, साक्षात्कार, डायरी, पत्र-लेखन, शोधपत्र, आलेख, फिल्मी साहित्य, मीडिया और पत्रकारिता आदि प्रमुख हैं।

□□

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भाषा प्रवीणता या भाषायी क्षमता क्या है?

उत्तर– भाषा प्रवीणता या भाषायी क्षमता किसी व्यक्ति की अर्जित भाषा में बोलने या प्रदर्शन करने की दक्षता है।

2. भाषायी दक्षता व्यक्ति की किस क्षमता को संदर्भित करती है?

उत्तर– भाषायी दक्षता बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किसी भाषा का उपयोग करने की व्यक्ति की क्षमता को संदर्भित करती है।

3. भाषायी दक्षता का परिचय किन माध्यमों से मिलता है?

उत्तर– भाषायी दक्षता का परिचय वार्तालाप, भाषण, समूह चर्चा आदि से मिलता है।

4. भाषण किसे कहते हैं?

उत्तर– भाषण वह विधा है, जिसमें किसी विषय का धाराप्रवाह रूप में विवरण करते हुए, विचारों तथा तथ्यों को लोगों के सामने व्यक्त किया गया हो।

5. भाषण पर चिन्तन करने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– भाषण पर चिन्तन करने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु दिए गए हैं–

- किसी समूह को कोई नया कौशल सिखाना या किसी प्रक्रिया का वर्णन करना।
- किसी ऐसे विषय का सामान्य अवलोकन देना जिसे अक्सर गलत समझा जाता है।
- किसी विषय के बारे में मिथकों का खंडन करना।
- किसी चीज़ का अंत इस तरह क्यों हुआ, इसकी पृष्ठभूमि बताना, जैसे कि कोई ऐतिहासिक घटना।

6. भाषण के व्यावहारिक विषय कौनसे हो सकते हैं?

उत्तर– भाषण के कुछ व्यावहारिक विषय दिए गए हैं जो विभिन्न श्रोताओं के लिए आकर्षक और प्रासंगिक हो सकते हैं-

1. जलवायु परिवर्तन, 2. मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता 3. प्रौद्योगिकी और समाज, 4. प्रभावी संचार, 5. वित्तीय साक्षरता आदि।

7. **भाषण के लिए विषय चुनते समय किन बातों पर विचार करना चाहिए?**

उत्तर–भाषण के लिए विषय चुनते समय, अपने श्रोताओं की रुचियों और भाषण के अवसर पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

8. **प्रभावी भाषण के लिए दो सुझाव दीजिए।**

उत्तर–एक बेहतरीन भाषण देने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं–1. अपने दर्शकों का निर्धारण और विश्लेषण करें। 2. अपने विषय पर स्वतंत्र लेखन करें। 3. अपने भाषण का अभ्यास करें। 4. अपने भाषण में आत्मविश्वास दिखाएँ।

9. **वार्तालाप से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर–वार्तालाप दो या दो से अधिक लोगों के बीच संवादात्मक संचार है।

10. **वार्तालाप-शैली को सुधारने के लिए दो सुझाव दीजिए।**

उत्तर–1. अपनी शारीरिक भाषा पर ध्यान दें। 2. सक्रिय रूप से सुनें व सवाल पूछें। 3. दूसरों के प्रति सजगता व सहजता का अभ्यास करें। 4. अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना सीखें।

11. **समूह चर्चा का क्या अर्थ है?**

उत्तर–समूह चर्चा का अर्थ है–समूह के अन्तर्गत की जाने वाली पारस्परिक परिचर्चा या वाद-विवाद या विचार गोष्ठी।

12. **समूह चर्चा किसे कहते हैं?**

उत्तर–समूह चर्चा वाद-विवाद व विचार-विमर्श की एक आधुनिक विधि है जिसमें चर्चा का नियंत्रण समूह द्वारा किया जाता है।

13. **समूह चर्चा में गलतियों पर नियन्त्रण के दो उपाय लिखिए।**

उत्तर–समूह चर्चा में गलतियों पर नियन्त्रण के उपाय हैं-

1. यदि आप विषय नहीं जानते हैं तो आगे न बढ़ें।
2. यदि आप इसे जानते हैं तो नेतृत्व करने में संकोच न करें
3. साथी प्रतिभागियों से नजरें मिलाने से न बचें या नजरे न चुराएँ।
4. आत्मविश्वास न खोएँ।

14. **भाव पल्लवन से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर–भाव विस्तार या भाव पल्लवन का आशय किसी संक्षिप्त, गूढ़ पंक्ति, काव्य-सूक्ति, गद्य-सूक्ति अथवा विचार सूक्ति की विस्तारपूर्वक, सोदाहरण विवेचना करने से है जिसमें लेखक सामान्य पाठक के लिए उस सूक्ति की विस्तृत बातों को बोधगम्य बनाता है।

15. **सस्वर वाचन और मौन वाचन का सम्बन्ध किससे है?**

उत्तर–पाठ्य पुस्तकों से।

16. **द्रुत पठन या द्रुत वाचन से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर–द्रुत पाठ या विस्तृत पाठ से यह तात्पर्य है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक वाचन या पाठ करना अर्थात् पढ़ना।

17. **द्रुत वाचन का क्या महत्व है?**

उत्तर–द्रुत वाचन का महत्व है–(1) सीखी हुई या अर्जित शब्दावली के प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास। (2) भाषा समझने की योग्यता एवं क्षमता का विकास।

18. **पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर–पुस्तक समीक्षा किसी पुस्तक की गुणवत्ता, अर्थ और महत्व का विस्तृत वर्णन, आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन है।

19. पुस्तक समीक्षा क्या है और इसका उद्देश्य क्या है?

उत्तर–विद्वत्तापूर्ण पुस्तक समीक्षा एक प्रकार का अकादमिक लेखन है जो किसी पुस्तक की विषय-वस्तु, मूल्य, अर्थ और महत्त्व को समझाने और आलोचनात्मक रूप से मूल्यांकन करने में मदद करता है।

20. पुस्तक समीक्षा का क्या लाभ है?

उत्तर–पुस्तक समीक्षा से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है।

21. पुस्तक समीक्षा में किसका विश्लेषण किया जाता है?

उत्तर–पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक का सम्यक् विश्लेषण किया जाता है।

22. पुस्तक समीक्षा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–पुस्तक समीक्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–1. वस्तुनिष्ठता, 2. पूर्वाग्रहमुक्तता, 3. प्रासंगिकता, 4. केंद्रीय बिंदु की पहचान, 5. सोद्देश्यता।

23. फिल्म समीक्षा क्या है?

उत्तर–फिल्म समीक्षा एक प्रकार की आलोचना है जो किसी फिल्म का मूल्यांकन करती है, जिसमें कथानक, विषय, निर्देशन, पटकथा और अभिनय जैसे विभिन्न पहलू शामिल होते हैं।

24. फिल्म समीक्षा का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

उत्तर–फिल्म समीक्षा का प्राथमिक उद्देश्य पाठक को फिल्म के बारे में सूचित करना और इसके विभिन्न तत्वों के बारे में एक समुचित राय देना है।

25. फिल्म समीक्षा का महत्व किन लोगों के लिए अधिक है?

उत्तर–फिल्म समीक्षा का महत्व उन लोगों के लिए अधिक होता है, जो फिल्म उत्पादन और फिल्म उद्योग के अंतर्गत काम करते हैं। फिल्म समीक्षा उन्हें उनके काम के बारे में फीडबैक देती है जो उन्हें अपनी फिल्मों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है।

□□